आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
15 अक्टूबर, 2008 ★ कार्तिक सं. 2065

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पीयें धोवन पानी, बोलें मीठी वाणी
यही कहे जिनवाणी।

रतनलाल सी.बाफना ज्वेलर्स

सोना ◆ चांदी **औरंगाबाद** आकाशवाणी चौक, ☎ ०२४०-२२४४५२०,२२

जलगाँव सुभाष चौक, ☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३ हिरे ◆ मोती

Malhar - 08

औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- रू. 5000/- इस अंक का मूल्य रू. 10/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- रू. 2500/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तेपे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।।3।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 4.3

ज्यों चोर सेंध-मुख पर पकड़ा, निज कर्मविवश काटा जाता।
त्यों यह जीव उभयभव में, बिन भोगे कर्म न छूट पाता।।3।।

अक्टूबर 2008
वीर निर्वाण संवत् 2534
कार्तिक 2065

वर्ष ६५ अंक 10

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	सामुदायिक कर्म एवं अकालमरण	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	१०
प्रवचन-	अपेक्षा नहीं, कर्त्तव्य पालन है शान्ति-समाधि का स्रोत	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	११
	संघ उन्नयन के तीन सूत्र : समर्पण, सक्रियता और समन्वय	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.	१६
शोधालेख-	जैन कर्म-सिद्धान्त और वंश-परम्परा विज्ञान (२)	-डॉ. सोहनराज तातेड़	२२
	जैन कथा साहित्य : एक समीक्षात्मक सर्वेक्षण (२)	-प्रो. सागरमल जैन	२९
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Science of Dhovana-water(2)	-Dr. Jeoraj Jain	३६
	Namaskāra Sūtra(3)	-Dr. Priyadarshana Jain	४१
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ	-श्री धर्मचन्द जैन	४४
चिन्तन-	अणुबम और अहिंसा	-श्री लालचन्द जैन	४९
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (५३)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	५३
उपन्यास-	भाई-बहन (१२)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	५७
युवा-स्तम्भ-	मर्यादाओं का उल्लंघन न करें	- श्री पदमचन्द गाँधी	६३
नारी-स्तम्भ-	गीतों की विरासत बचाएँ	-डॉ. दिलीप धींग	६७
स्वानुभव-	अनमोल उपहार	- श्री कस्तूरचन्द बाफना	७०
प्रेरक चिन्तन-	जिनवाणी का प्रकाश	- प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन	७२
बाल-स्तम्भ-	जीवन का समझें मोल	- डॉ. राजेन्द्र मुनि	७३
स्वास्थ्य-विज्ञान-	मेरुदण्ड की स्वस्थता के लिए उपयोगी आसन	- डॉ चंचलमल चोरडिया	७७
विचार-	विचार-मोती	- डॉ. श्वेता जैन	४३
कविता-	मिथ्या संसार	- श्री कस्तूचन्द जैन 'अष्टम'	५१
	जिनवाणी : स्वाध्याय की क्रांति	- श्री जितेन्द्र चोरड़िया	५२
	क्षमामूर्ति भगवान् महावीर	- श्री चम्पालाल बोथरा	७१
संवाद-	समस्या-समाधान (१६)		८१
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता(१९)		८३
परीक्षा-परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड अस्थायी वरियता सूची		८६
साहित्य समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	८८
समाचार विविधा-	समाचार संकलन		९०
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		११८

सम्पादकीय

सामुदायिक कर्म एवं अकालमरण

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

30 सितम्बर को जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग में एक हृदय विदारक घटना घटी। चामुण्डा मन्दिर में उत्पन्न भगदड़ के कारण 215 युवकों एवं किशोरों की असामयिक मौत हो गई। इससे पूर्व हिमाचल प्रदेश के नैनादेवी मन्दिर में भी भगदड़ से एक साथ 146 लोग मारे गए। आतंककारी घटनाओं में भी सैकड़ों लोग एक साथ काल के ग्रास बन जाते हैं। कभी भूकम्प, तूफान और बाढ़ के कारण मानव-मृत्यु के हादसे दृग्गोचर होते हैं। कभी रेल दुर्घटना में, कभी बस दुर्घटना में तो कभी हवाई दुर्घटना में एकसाथ सैकड़ों की संख्या में जनहानि होने की खबरें छपती रहती हैं।

प्रश्न यह है कि कर्मसिद्धान्त की अवधारणा में इसका क्या समाधान है? प्रचलित चिन्तन के अनुसार कहा जाता है कि जो जीव एकसाथ आयुष्य का बंध करते हैं वे एक साथ इस तरह की मृत्यु को प्राप्त होते हैं। समूह अथवा समुदाय में एक साथ कर्म बांधने एवं उसका एक साथ फल भोगने के कारण इसे 'सामुदायिक कर्म' कहा गया है। उदाहरण से समझाते हुए कहा जाता है कि जैसे सिनेमा हॉल में एक साथ सैकड़ों लोग फिल्म देखते हैं तो वे एक साथ कर्म का बंध करते हैं तथा फिर वे एक साथ ही उस कर्म का फल भोगते हैं। इसी का परिणाम होता है, एक प्रकार की आपदा अथवा एक साथ मृत्यु की घटनाएँ।

यह समाधान अनेक प्रश्नों से आक्रान्त है, यथा-

1. 'सामुदायिक कर्म' के नाम से आगम में किसी कर्म का उल्लेख नहीं हुआ है। धवलाटीका में समुदान अथवा समवदान कर्म का उल्लेख हुआ है, जिसका आशय है एक साथ 6,7 अथवा 8 कर्मों का बंधना।
2. एक साथ कर्म बांधे जाने पर भी यह आवश्यक नहीं कि सबका कर्म-बन्धन समान हो, क्योंकि सबके अध्यवसायों की स्थिति भिन्न होती है। सबके शुभ-अशुभ भावों की तरतमता अलग-अलग होती है। एक ही घटना से कोई अधिक क्षुब्ध होता है, तो कोई कम। किसी की तीव्र आसक्ति होती है तो किसी की मन्द। इसलिए सबका कर्मबंध समान होना युक्तिसंगत नहीं, साथ ही आयुष्य

बंध भी समान होना आवश्यक नहीं। क्योंकि आयुष्य बंध सामान्यतः व्यक्ति की दो तिहाई आयु बीतने पर होता है, जिसमें उसके सम्पूर्ण जीवन के संस्कारों की गणित आधार बनती है।

3. यदि सबने सामुदायिक कर्म के रूप में समान आयुष्य बंध किया है तो उसका फल आगामी किस भव में प्राप्त होगा? यदि दूसरे ही भव में प्राप्त होता है तो प्रश्न होता है कि सबमें एक साथ एक समान आयु का बंध किया है तो सबकी मृत्यु समान उम्र में एक साथ होनी चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं देखा गया है। मरने वालों की उम्र में अन्तर अवश्य होता है, सौ-दो सौ में कोई एक-दो ही पूर्णतः समान उम्र के होते होंगे, अन्यथा कोई बालक होता है तो कोई युवा और कोई वृद्ध। यही नहीं कई घटनाओं में पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े एवं अन्य प्राणियों की भी मृत्यु होती है। उनकी आयुष्य समान होने का कोई आधार नहीं बनता।
4. समान आयुष्य वाले जीव किसी हादसे के बिना भी अलग-अलग स्थानों पर होते हुए भी मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं, फिर उसे सामुदायिक कर्म कैसे कहा जाएगा?
5. एक समुदाय के द्वारा एक साथ कर्मबंध होने से ही इसे 'सामुदायिक कर्म' कहा जाता है, किन्तु कर्मों का फल तो सबको वैयक्तिक रूप से ही प्राप्त होता है।
6. यदि एक साथ हुए मरण को 'सामुदायिक कर्म' के नाम पर उचित ठहरा दिया जाएगा तो आतंकवाद जैसी जानबूझकर की गई घटनाओं में आतंकियों को दोषी करार देना कठिन हो जाएगा। समस्त मृत्युओं को हम कर्मोदय के निमित्त से अथवा आयुष्य पूर्ण होने से घटित नहीं मान सकते। ऐसा मानने पर 'हिंसा' की अवधारणा भी दूषित हो जाएगी। फिर तो हिंसक खुले आम कह देगा कि इन मरने वाले जीवों का आयुष्य पूर्ण हो गया था, इसलिए मुझे मात्र निमित्त बनना पड़ा, इसमें मेरा क्या दोष है? फिर सारे कत्लखानों को भी सिद्धान्त से अनुचित कहना कठिन हो जाएगा।

उपर्युक्त आपत्तियों से यह स्पष्ट होता है कि हम दुर्घटनाओं/आपदाओं में हुए प्राण-विच्छेद को सामुदायिक कर्म के उदय से युक्तिसंगत नहीं ठहरा सकते।

यदि एक साथ हुई मृत्यु के कारणों का समाधान 'सामुदायिक कर्म' की अवधारणा से हो जाता है तो फिर 'अकालमरण' की अवधारणा क्यों स्वीकार की

गई है? 'अकालमरण' की अवधारणा के अनुसार दुर्घटना, विष आदि बाह्य कारणों से जीव की मृत्यु अपने निर्धारित आयुष्य से पूर्व भी होना सम्भव है। चरमशरीरी (इसी भव में मोक्ष प्राप्त करने वाले जीव), 63 श्लाका पुरुष, असंख्यातवर्षायुष्क, नारक एवं देवों को छोड़कर अन्य सभी जीवों का आयुष्य अपवर्त्य है अर्थात् निर्धारित वर्षों के पूर्व भी उनकी आयु पूर्ण हो सकती है। कहते हैं कि जीव 'विपाकोदय एवं प्रदेशोदय' के रूप में तीव्रता से सम्पूर्ण आयु का भोग कर लेता है एवं नये आयुष्य कर्म का बंध पहले नहीं किया हो तो अन्तिम क्षणों में कर लेता है तथा तदनुसार वहाँ से गमन कर नया जन्म ग्रहण कर लेता है। अकालमरण की अवधारणा आगम से पुष्ट है। अनुयोगद्वार सूत्र में आयुघात के 7 कारण दिए गए हैं, जिनमें विष, शस्त्र आदि का उल्लेख है।

सामूहिक मृत्यु की कुछ घटनाएँ प्राकृतिक आपदाओं यथा-भूकम्प, बाढ़, तूफान आदि से जन्य होती हैं तो कुछ घटनाएँ मानवीय भूल से उत्पन्न होती हैं तथा कुछ मानव द्वारा जानबूझकर उत्पन्न की जाती हैं। इनमें जो घटनाएँ मानवजन्य हैं उन्हें टालने या रोकने के लिए कदम उठाने की महती आवश्यकता का अनुभव सब करते हैं। प्रशासन भी जब सतर्कता रखता है तो दुर्घटनाओं में कमी आती है। जहाँ सुरक्षा के अच्छे इन्तजाम रहते हैं वहाँ मानवजन्य दुर्घटनाओं की आवृत्ति कम होती है।

इन घटनाओं से यह तथ्य फलित होता है कि हमने जितना आयुष्य बांधा है उसे वर्षों की गिनती में पूरा भोग लेंगे यह आवश्यक नहीं है। कब-कौनसी आपदा या दुर्घटना हो जाए और हम इस देह से विदा हो जाएं, इसलिए हमें प्रतिपल सावधान रहने की आवश्यकता है। सदैव शुभ-अध्यवसायों से युक्त होने की सजगता आवश्यक है।

जो जैसा कर्म करता है उसे उसके अनुसार फल की प्राप्ति होती है, यह कर्मसिद्धान्त का नियम है। यह नियम तभी सार्थक सिद्ध होता है जब कर्म का फल वैयक्तिक होता है।

आमजन की एक यह धारणा है कि दुर्घटना में मृत्यु होने पर व्यक्ति नीच गति में जाता है, किन्तु यह मान्यता एकान्त रूप से उचित प्रतीत नहीं होती है। क्योंकि नये आयुष्य का बंध व्यक्ति के वर्तमान जीवन के शुभाशुभ संस्कारों की गणित के आधार पर होता है, मात्र मृत्यु के समय आने वाले भावों के आधार पर नहीं। दूसरी बात यह है कि दुर्घटना के समय के पूर्व व्यक्ति के आयुष्य का बंध न हुआ हो तो

अन्तिम क्षणों में आयुष्य का बंध होता है। व्यक्ति ने सम्पूर्ण जीवन किस प्रकार का जीया उसके अनुसार आयुष्य बन्ध होता है। जीवन भर के जैसे संस्कार होते हैं, मृत्यु के क्षणों में उसी प्रकार का भाव आता है एवं तदनुसार ही नये जीवन का आयुष्य बन्ध हेाता है। इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि दुर्घटना में मरने वाला व्यक्ति अशुभ गति में ही जायेगा। पर आमजन की जो धारणा बनी है उसके दो कारण प्रतीत होते हैं-1. दुर्घटना में मरने वाले व्यक्ति को आत्म-चिन्तन का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता है। 2. चरमशरीरी या उत्तम पुरुष होने पर दुर्घटना में मृत्यु नहीं होती है।

मृत्यु का कारण कुछ भी हो, किन्तु व्यक्ति को सदैव चित्त को निर्मल रखने का प्रयत्न करना चाहिये। निर्मल चित्त के समक्ष संसार की सारी सुख-सुविधाएँ कोई अर्थ नहीं रखती, चित्त के निर्मल होने पर व्यक्ति बाह्य परिग्रह एवं सुख-साधनों में आसक्त नहीं होता। कौन कब चला जाए, यह हमें ज्ञात नहीं, अतएव हर क्षण भावों में निर्मलता को ही संचरित करने हेतु सजगता रखनी चाहिए। जीवन क्षणभंगुर है एवं जिन वस्तुओं एवं व्यक्तियों से यहाँ जो सम्बन्ध स्थापित किए जाते हैं वे भी शाश्वत नहीं हैं।

नमन करें आचार्य श्री को

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का कार्तिक शुक्ला 6 दिनाङ्क 4 नवम्बर 2008 को 46 वां दीक्षा-दिवस है। पूज्यप्रवर का ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी संवत् 2048 को आचार्यपद पर आरोहण हुआ था। आपके 17 वर्षीय संघनायक काल में 50 से अधिक दीक्षाएँ हो चुकी हैं तथा संघ विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ा है। अभी मुम्बई चातुर्मास में लगभग 35 श्रद्धालुओं ने चातुर्मास में चौके लगाए हैं। दक्षिण भारत में आपने अपनी पदयात्रा एवं चातुर्मास के दौरान जन-जन में धर्म के सच्चे स्वरूप से जुड़ने की अलख जगाई है। आप एक ऐसे आचार्य हैं जो संघनायक से नहीं, धर्म से जुड़ने की बात कहते हैं। आपके नेतृत्व में उपाध्यायप्रवर,समस्त संतप्रवरों, शासनप्रभाविका जी एवं महासतीमण्डल का सहयोग बना हुआ है। श्रावक-श्राविका ऐसे संघनायक को पाकर प्रमुदित हैं। संघनायक के जीवन के अनेक प्रभावकारी प्रसंग हैं। जिनवाणी पत्रिका श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन करती है कि आप श्रद्धेय आचार्यप्रवर के जीवन के प्रभावी प्रसंगों को लिपिबद्ध करके हमें प्रेषित करें, ताकि उनका उपयोगी संकलन हो सके।

-सम्पादक

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(षडावश्यक)

(प्र.) सामाइएणं भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) सामाइएणं सावज्जजोग-विरइं जणयइ ॥8॥

(प्र.) चउव्वीसत्थएणं भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) चउव्वीसत्थएणं दंसण-विसोहिं जणयइ ॥9॥

(प्र.) वंदणएणं भंते! जीवे किं जणयइ ?

(उ.) वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं कम्मं निबंधइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ। दाहिणभावं च जणयइ ॥10॥

(प्र.) पडिक्कमणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) पडिक्कमणेणं वय-छिद्दाइं पिहेइ। पिहिय-वय-छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते, अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥11॥

(प्र.) काउसग्गेण भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) काउसग्गेणं तीय-पडुपन्नं पायच्छित्त विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुय-हियए ओहरिय-भारोव्व भारवहे, पसत्थज्झाणोवगए सुहसुहेण विहरइ ॥12॥

(प्र.) पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) पच्चक्खाणेणं आसव-दाराइं निरुम्भइ ॥13॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 29, सूत्र 8-13

(प्र.) भगवन्! सामायिक से जीव को क्या प्राप्त होता है?

(उ.) जीव सावद्य योगों से विरति प्राप्त करता है।

(प्र.) भगवन्! चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति से जीव क्या प्राप्त करता है?

(उ.) जीव दर्शन-सम्यक्त्व की विशुद्धि प्राप्त करता है॥9॥

(प्र.) भगवन्! वन्दना से जीव किस फल को प्राप्त करता है?

(उ.) जीव नीच गोत्रकर्म का क्षय करता है और उच्च गोत्रकर्म का बन्ध करता है। वह अप्रतिहत सौभाग्य तथा आज्ञा का प्रतिफल प्राप्त करने के साथ दाक्षिण्यभाव को प्राप्त करता है॥10॥

-शेषांश पृष्ठ संख्या 21 पर

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- बन्धन संसार है और बन्धन को काटने की प्रक्रिया चारित्र है।
- यदि विषय-कषाय नहीं घटते हैं तो कहना चाहिए कि अब तक हमारे जीवन में चारित्र नहीं है।
- चारित्र उस क्रिया का नाम है जो संचित कर्मों को काटने का काम करती है।
- चारित्रवान कभी भी सामने वाले की गलती नहीं निकालता।
- चरित्र नहीं है तो चारित्र नहीं। चरित्र आने के बाद एक लाइन और बढ़ाते हैं, 'आ' की मात्रा लगाते हैं, तब चारित्र आता है।
- नियम या प्रतिज्ञा करने में गरीब-अमीर का भेद नहीं है।
- चारित्रवान मानव नमक हैं, जो सारे संसार रूपी सब्जी का जायका बदल देते हैं।
- जब कभी भी सोते, जागते, उठते, बैठते हम वीतराग का स्मरण करेंगे, ध्यान करेंगे, चिन्तन करेंगे, वह एक-एक क्षण परम कल्याणकारी होगा, जन-जन के ताप त्रय को दूर करने वाला होगा।
- आस्रव-त्याग के साथ जो तप की आराधना होगी वह दोगुनी ताकत वाली होगी।
- चारित्र के साथ, आस्रव-त्याग के साथ तपस्या की महिमा है।
- सद्गृहस्थों का कर्त्तव्य प्रतिदिन तप करना है।
- महावीर का जो मुक्ति-मार्ग है, वह त्याग या वीतरागता-प्रधान है।
- यदि महावीर के बताए अनुसार ऊनोदरी आदि तप करने लगे तो समझ लीजिए आधी बीमारी कम हो जाएगी।
- यदि 8 दिन में या 15 दिन में एक बार व्रत होता रहे तो आदमी को बीमारी जल्दी नहीं होती और डॉक्टर की शरण में जाने की जरूरत नहीं पड़ती।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

अपेक्षा नहीं, कर्त्तव्यपालन हैं शान्ति-समाधि का स्रोत

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा

आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने कल्पतरु गार्डन, कांदिवली, मुम्बई में ७ सितम्बर २००८ के प्रवचन में अपेक्षा की उपेक्षा करने, कर्त्तव्यशील रहने और निर्विकल्प बनने की प्रभावी प्रेरणा की है। प्रवचन का आशुलेखन नौरतन मेहता, जोधपुर ने किया है।-सम्पादक

मिथ्या मान्यता वाले मनुष्य की आशा, अपेक्षा, इच्छा, कामना अन्तहीन होती है। दूसरी ओर व्यक्ति की यदि समझ सही है तो संसार से अपेक्षा घटती है एवं उसके प्रति उपेक्षा बढ़ती है। सही समझ (सम्यक्त्व) उत्पन्न होने पर कर्त्तव्यपरायणता बढ़ती है, अधिकार की भावना घटती है। या यों कहें- जीवों से आत्मीयता बढ़ती जाती है, स्वार्थ भावना घटती जाती है। स्वार्थपूर्ति के लिये उनकी अपेक्षा नहीं रहती है। कर्त्तव्य-निष्ठा एवं निस्पृहता नहीं होने पर व्यक्ति अपने अधिकार की बात जताता है, दूसरों से कर्त्तव्य-पालन की बात कहता है।

उदाहरण के लिए पुत्र अपने पिता से स्नेह और सम्पदा का अधिकार माँगता है, परन्तु स्वयं विनय, सेवा एवं भक्ति के आचरण की नहीं सोचता। शिष्य भी अपेक्षा रखता है कि गुरु ने मुझे संसार से निकाला है और मैंने घर छोड़ा है तो गुरुदेव मुझे स्नेह से रखें, शास्त्र ज्ञान दें, पढ़ावें, मेरी सुख-सुविधा का ध्यान रखें। वह जितना अपने अधिकार के सम्बन्ध में सोचता है, क्या कर्त्तव्य के लिए भी उसकी ऐसी ही सोच है? अपेक्षा चाहे आपमें हो या हम संतों में, वह द्वन्द्व खड़ा करती है।

जब अपेक्षा है, अधिकार की पूर्ति की मांग मुख्य होगी, कर्त्तव्य गौण होगा। अपने अधिकार की पूर्ति और दूसरों के कर्त्तव्य-पालन की भावना ही अपेक्षा है। जब यह अपेक्षा पूरी नहीं होती और अपनी उपेक्षा होने लगती है, तो उस समय उत्पन्न संकल्प-विकल्प शान्ति एवं समाधि में बाधक होते हैं। जीवन-व्यवहार में आपको-हमको यह समझना आवश्यक है कि हम जब भी अपेक्षा करते हैं और यदि वह पूरी नहीं हुई तो हमें जो भी मिला है वह सुख-चैन देने वाला नहीं बनता।

आप जरा चिन्तन कीजिये- कोई व्यक्ति किसी दानदाता से संस्था-विशेष के लिए कुछ लेने पहुँचा। उसे अपेक्षा थी कि दया धर्म की हमारी योजना देखकर श्रीमन्त से हमें लाख रुपये मिल जायेंगे, किन्तु दाता ने मात्र हजार रुपए देकर विदा कर दिया। अपेक्षा थी एक लाख की और मिले एक हजार। क्या होगा? मन खिन्न होगा। वह अपने भाग्य को कोसेगा। दूसरा व्यक्ति किसी अनाथालय के लिए सौ रुपये की पानड़ी की अपेक्षा से आया, किन्तु उस दानवीर ने जो स्वयं अनाथालय से संतान लाया था, अनाथालय के प्रति भावना होने के कारण उसे हजार रुपये दे दिये। अपेक्षा से कहीं अधिक मिलने से गृहीता को हर्ष की अनुभूति तो हुई ही, वह मन-ही-मन अपने भाग्य की सराहना करने लगा। रकम दोनों को बराबर एक हजार रुपये मिली, पर एक को अपेक्षा से कम और दूसरे को अपेक्षा से अधिक मिलने के कारण एक को गम और दूसरे को खुशी का अनुभव हुआ। जहाँ भी दूसरों से अपेक्षा है वहाँ दुःख है, निराशा है और उपेक्षा में अपेक्षा की पूर्ति खुशी देने वाली है। स्वयं के द्वारा अपेक्षा की उपेक्षा कर दी जाए, वहाँ शांति है, समाधि है।

एक भिक्षुक किसी बड़ी हवेली में पहुँचा, लेकिन उसे ठण्डी-बासी रोटी मिली, मन खिन्न हो गया। वहीं किसी सामान्य गृहस्थ के घर पहुँचा तो उसे गरमागरम खीर मिल गई, तो मन मयूर नाच उठा। यह है अपेक्षा का खेल।

रत्नकम्बल का व्यापारी राजगृही के अधिपति श्रेणिक के दरबार में बहुत उम्मीद लेकर पहुँचा कि रत्नकंबल देखकर महाराजा कुछ रत्नकंबल तो खरीद ही लेंगे, लेकिन कीमत सुनी और महाराजा को लगा कि राज-कोष को सुख-सुविधा में लुटाना ठीक नहीं है, अतः एक भी कंबल उन्होंने नहीं खरीदा। व्यापारी को निराशा होनी स्वाभाविक थी। उदास चेहरा लिए वह पनघट पर जाकर बैठ गया। चिन्ता में निमग्न व्यक्ति से दासियों ने कहा- "भाई! तुम चलो, भद्रा माँ के पास जाओ, उनको पसन्द आ गई तो वे अवश्य तुम्हारी सारी कम्बलें खरीद लेंगी। व्यापारी किंकर्त्तव्यमूढ़ था। जब महाराजाधिराज ने मना कर दिया तो वे क्या लेंगी? सोचा, चलो भाग्य आजमाने में क्या हर्ज है? माता भद्रा ने कंबलें देखी और सोलह ही कंबलें खरीद लीं। साथ में व्यापारी से कहा- मुझे चाहिये तो बत्तीस थी, मिली केवल सोलह। वह भद्रा 'शालिभद्र' की माँ थी। अब व्यापारी को अत्यधिक खुशी हुई, क्योंकि उसे अपेक्षा नहीं थी।

जब तक बाहर की दृष्टि है तब तक अपेक्षाएँ हैं। अपेक्षा में अधिकार की बात कही जाती है। यह बात आपके लिए है तो हमारे लिए भी है। जिस दिन दृष्टि सही हो जायेगी कर्तव्य प्रमुख हो जाएगा, अधिकार गौण। कर्त्तव्यभावना से जब भी किसी कार्य को किया जाता है अथवा दायित्व निभाया जाता है तब कोई आशा-अभिलाषा नहीं होती, किन्तु किसी अपेक्षा से काम किया जाय और वह पूरा नहीं हो तो व्यक्ति अपने भाग्य को कोसता है, सामने वाले की निन्दा-बुराई से भी बाज नहीं आता। यह बात केवल आपके लिए ही नहीं, साधकों के लिए भी है।

संत-सती भी अगर अपेक्षा रखकर चलते हैं और उनकी उपेक्षा हो जाती है तो वे भी खिन्न होते हैं। गुरु भी शिष्य से अपेक्षा रखता है कि शिष्य सेवा करेगा, गोचरी-पानी की अनुकूलता का ध्यान रखेगा, उपकारों का गुणगान करेगा, गुरुभ्राताओं के साथ विनम्रता का व्यवहार रखेगा, संघ-सम्प्रदाय की शोभा बढ़ायेगा। यदि अपेक्षा के विपरीत वह स्वार्थी बनकर, सेवा में और कार्य में आलस्य करे तो वह किस काम का? कई हैं जो प्रवचन-पटु बनने के बाद स्वतंत्र-विचरण करना चाहते हैं अथवा गुरु को चलाना चाहते हैं तो उपेक्षावृत्ति वालों के व्यवहार से गुरु के मन में क्या आयेगा? याद रखना अपेक्षा अधिक है और अपेक्षा के अनुरूप नहीं मिलता तो दुःख होगा। अपेक्षा न होने पर थोड़ा भी मिला तो आनन्ददायक होगा।

एक लड़का है। उसका पिता उससे बहुत प्रेम करता है। लड़का सेवा कर रहा है, जानकर पिता ने सम्पत्ति उसके नाम कर दी। सम्पत्ति मिल गई, अब लड़के की दृष्टि बदली, सेवा करना बंद हो गया। आप बताइये-पिता को क्या होगा? पिता को दुःख होगा, पश्चात्ताप होगा कि उसने धन देकर भूल की।

पिता का एक दूसरा लड़का भी है। पिता ने उस पर ध्यान नहीं दिया। लड़का अपनी मेहनत से आगे बढ़ा और साधन-सम्पन्न भी हो गया। पिता रूग्णावस्था में है इसलिए वह दिन-रात सेवा करता है। पिता को क्या होगा? पिता को प्रसन्नता होगी , लड़के को लेकर संतोष रहेगा। पिता ने जिसके लिए सब कुछ किया, वह तो कुछ नहीं कर रहा है और जिसके लिए कुछ नहीं किया वह सब कुछ करने को तैयार है। अपेक्षा होती है उस समय सामने वाला कर्त्तव्य करता है तो खुशी होती है, संतोष रहता है।

मुम्बई चातुर्मास अगर मैं अपेक्षा रखकर करता तो मन में आ सकता था कि यहाँ इतने श्रावक हैं तो कई व्रती बनेंगे, कई शीलव्रत के खंद होंगे, संवर-पौषध की साधना-आराधना होगी। अपेक्षा रखता और कुछ नहीं होता तो दुःख होता। मन में संकल्प-विकल्प आ सकते हैं। किन्तु यदि अपेक्षा से नहीं, अपनी शारीरिक स्थिति से मुझे यहाँ रहना है, तुम धर्म-ध्यान करो तुम्हारी मर्जी, इस भावना से रहूँ और फिर साधना-आराधना अधिक हो तो आनन्द एवं संतोष का विषय बन जाता है।

मान लीजिये- आपने महीने भर पहले आरक्षण करवाया। ट्रेन स्टेशन पर एक मिनट ठहरती है। चढ़ने की जगह नहीं मिले तो क्या होगा- ''म्हारा भाग फूटोड़ा है, मैं आज किणरो मुण्डो देखियो'' इस तरह की बातें दिमाग में आयेंगी। रेलवे की अधिकारियों को कहेगा, पुलिस की मदद लेने की भी सोचेगा। वह है जिसने अपेक्षा की। दूसरा व्यक्ति सोचता है चलो, भगवान भरोसे चलते हैं, जगह मिलेगी तो मिल जायेगी, नहीं तो जैसे-तैसे यात्रा कर लेंगे। वह ट्रेन में चढ़ गया। कोई टी.टी. जान-पहचान वाला आ गया और उसने बर्थ दे दी। भगवान् की कैसी मेहरबानी है, गुरुदेव की कैसी कृपा है कहते-कहते वह थकता नहीं। यहाँ आते ही हमको सुनायेगा- ''बाबजी! आपकी कृपा से कोई तकलीफ नहीं हुई, वेटिंग का टिकट था, फिर भी बर्थ मिल गई। गुरु को पता नहीं कौन आ रहा है, पर गुरुकृपा की सराहना सुनने को मिल रही है। अपेक्षा में उपेक्षा हो जाय तो....?

आप नोट कर लें- परिवार में सुख-शांति से रहना चाहें तो अपेक्षा छोड़कर रहें और अपना कर्त्तव्य करें। जब तक संसार में हैं तब तक अपने लिए और परिवार के लिए कर्त्तव्य करना पड़ेगा। कर्त्तव्य कीजिये, पर अपेक्षा मत कीजिये। अगर किसी से अपेक्षा की तो दुःख होगा। संकल्प-विकल्प के दौर चालू हो जायेंगे। डोकरी कहे- ''मैं घणोई धर्म करियो, पण पोतो नी हुय्यो इण वास्ते धर्म सुं आस्था हटगी।'' यह भी अपेक्षापूर्वक धर्म करने का परिणाम है।

आप कर्त्तव्यशील बनकर चलेंगे तो सहज में दूसरों के लिए आदर्श स्थापित कर सकेंगे। नहीं तो आप पाप कर रहे हैं, दूसरों को भी पाप करने की बात ही कहेंगे। मैं तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी की बात को कहूँ- ''आप विकल्प वाली दृष्टि

को घटाकर निर्विकल्प कैसे बन सकते हैं, विचार करें। जब तक निर्विकल्पता नहीं आती, आप चाहे जितनी साधन-सामग्री वाले बन जायें संकल्प बढ़ते जायेंगे। निर्विकल्प बनने पर अपेक्षा घटती जायेगी।

कोई साधु बन गया, सीमित अपेक्षा रहेगी। फिर, उसने यह प्रतिज्ञा कर ली कि मैं किसी का सहयोग नहीं लूँगा, संभोग प्रत्याख्यान किया तो उसकी अपेक्षाएँ और घटेंगी। इस तरह शारीरिक अपेक्षा ही नहीं, शरीर का ममत्व भी घट जायेगा।

आप जीवन में कर्त्तव्य-दृष्टि की भूमिका लेकर चलिये। मैं जो कुछ कर रहा हूँ अपने कर्त्तव्य से कर रहा हूँ। मुझे जो कुछ मिलने वाला है, पुण्य जितना होगा, मिल जायेगा। यह निर्विकल्प भावना का सहज-सुन्दर तरीका है।

आप अपेक्षा घटाइये, कर्त्तव्यशील बनिये। अधिकार मत जताइये। आप कर्त्तव्य करते जायेंगे तो मन में शांति रहेगी। अधिकार जताते जायेंगे तो दुःखी होते जायेंगे। अपेक्षा हो फिर मिलने में कहीं-कोई कसर रह गई तो दुःख होगा।

आशाएँ-अपेक्षाएँ अनन्त हैं। आशाओं की पूर्ति कभी हुई नहीं, होगी नहीं। सुखी होना चाहते हैं तो अपेक्षाएँ घटाकर, कर्त्तव्यशील बनकर, जीना सीखिये तो हर हाल में शांति-समाधि रहेगी, संकल्प-विकल्प घटेंगे और आप निर्विकल्प होकर आगे बढ़ सकेंगे।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित सत्साहित्य प्राप्ति के अन्य स्थान निम्न प्रकार हैं:-

(1) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, **जोधपुर-342001,** (राजस्थान) फोन 0291-2624891 **(2) Shri Navratan ji Bhansali,** C/o. Mahesh Electricals, 14/5, B.V.K. Ayangar Road, **BANGALORE-560053** (Karnataka) Ph. : 080-22265957, Mob. : 09844158943 **(3) Shri B. Budhmal ji Bohra,** C/o. Bohra Syndicate, 53, Erullapan Street, Sowcarpet, **CHENNAI-79** (Tamilnadu) Ph. : 044-26425093, Mob.: 09444235065 **(4) श्रीमती विजया जी मल्हारा,** रतन सागर बिल्डिंग, कलेक्टर बंगला रोड, चर्च के सामने, **जलगाँव-425001** (महाराष्ट्र) फोन : 0257-2223223

प्रवचन

संघ-उन्नयन के तीन सूत्र : समर्पण, सक्रियता और समन्वय

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

संघ की वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान समारोह के अवसर पर देश के कोने-कोने से पधारे संघ-सदस्यों को सम्बोधित करते हुए महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने २१ सितम्बर २००८ को कल्पतरु गार्डन भवन, कांदिवली, मुम्बई में अपने प्रवचन में संघ कैसा हो, संघ सदस्यों को क्या करना चाहिये, संघ उन्नयन में समर्पण, सक्रियता, समन्वय क्यों आवश्यक है, इस विषय पर अपना चिन्तन प्रदान किया। प्रवचन का आशुलेखन सह सम्पादक श्री नौरतन मेहता, जोधपुर ने किया है।-**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा संस्थापित, गणधर भगवन्तों द्वारा संवर्धित, संघ अनुशास्ता आचार्य भगवन्तों द्वारा सुरक्षित तीर्थरूपी चतुर्विध संघ जयवन्त है। यह चतुर्विध संघ भरत क्षेत्र में पंचमकाल के इक्कीस हजार वर्ष तक सुरक्षित, संरक्षित, आरक्षित है और रहेगा। भगवती सूत्र में गणधर गौतम स्वामी भगवान् महावीर स्वामी से पृच्छा करते हैं- "भगवन्! आपका यह तीर्थ भरतक्षेत्र में कितने काल तक प्रवर्तमान रहने वाला है?" गणधर गौतम के प्रश्न का समाधान करते हुए भगवान् फरमाते हैं- "भरतक्षेत्र में मेरा यह तीर्थ इक्कीस हजार वर्ष तक प्रवर्तमान रहने वाला है। संघ जयवन्त था, जयवन्त है और जयवन्त रहने वाला है।"

आप-हम संघ की चिंता कर रहे हैं। वीतराग वाणी कह रही है- "इक्कीस हजार वर्ष तक संघ रहने वाला है। भगवान् की वाणी में कोई शंका नहीं, संशय नहीं। यह तीर्थ है और रहेगा। पंचम काल के अंत तक एक साधु-एक साध्वी, एक श्रावक-एक श्राविका रहेंगे।

तीर्थ किसके लिए? यह तीर्थ वासना की आग और तृष्णा के ताप को शान्त करने वाला नन्दनवन है। यह तीर्थ चतुर्विध संघ में अज्ञान-तिमिर का हरण करने वाला सूर्य है। यह तीर्थ संयम की शीतलता प्रदान करने वाला चन्द्र है। यह

संघ मर्यादा कायम रखने वाला सुमेरु है। यह संघ आत्मरमण करने के लिए स्वाध्याय का उद्घोष करने वाला श्रुत सागर है। यह संघ मुक्तिफल दिलाने वाला कल्पतरु है। यह संघ हमारी आन-बान-शान है।

आप-हम सौभाग्यशाली हैं कि इस संघ में हमें साधना करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। कैसा है इस धर्म संघ का गौरवमय इतिहास? कहते हैं तो गर्व से हमारा सिर ऊँचा हो जाता है। परम्परा के मूलपुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी महाराज की निस्पृहता के कारण रत्न-संघ का मजबूत आधार बना। पूज्य आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज ने संघ को ज्ञान गरिमा से गुम्फित किया। पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने क्रियोद्धार कर संयम में आई शिथिलता को दूर कर संयम का महत्त्व प्रकाशित किया। पूज्य आचार्य श्री हमीरमल जी महाराज जैसे तत्त्वज्ञ और पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमल जी महाराज जैसे सेवा-रसिक महापुरुष हमारे संघ में हुए हैं। पूज्य आचार्य श्री विनयचन्द्र जी महाराज की उदारता-विशालता से हमारा यह संघ तीर्थधाम बन गया। जयपुर वाले जानते हैं कि पूज्य आचार्य श्री विनयचन्द्र जी महाराज चौदह साल से अधिक जयपुर में स्थिरवास विराजे। पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज अद्भुत शिल्पकार थे। उस दिव्य दिवाकर ने रत्नसंघ की बगिया को हस्ती-सा माली दिया। पूज्य आचार्य गुरुवर्य श्री हस्तीमल जी महाराज की क्या बात कही जाय? आज जो भी यह नक्शा नज़र आ रहा है, पूज्य गुरुदेव की दूरदर्शितापूर्ण देन है। गुरु हस्ती के उपकारों से संघ का हर सदस्य उपकृत है। अध्यात्मयोगी युगदृष्टा पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज के हम पर अनन्त अनन्त उपकार हैं। अवस्था आने पर सब जाते हैं,उपकारी गुरु भगवन्त ने जाते-जाते संघ को एक ऐसा रखवाला-संरक्षक दिया जिस पर हमें गर्व है। संघनायक परमपूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज की विशेषताएँ आपके समक्ष हैं। मुझे संघनायक की अठारह साल से सेवा का सुअवसर मिल रहा है, यह मेरी पुण्यवानी है।

मुझे यहाँ श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज की बात याद आती है। एक शिष्य गुरु के पास आया और बोला-"गुरुदेव! मैं धर्म का प्रचार करना चाहता हूँ।" गुरुदेव अनुभवी थे, दूरदर्शी थे। उन्होंने जवाब दिया- "तू जा,

धर्म का प्रचार कर।'' गुरु ने एक हिदायत देते कहा- ''तू लोगों को धर्म से जोड़ना, खुद से मत जोड़ना'' इसका पूरा ध्यान रखना। आप सब सुज्ञ हैं, मुझे ज्यादा कहने की जरूरत नहीं।

पूज्य आचार्यप्रवर का स्वास्थ्य आज अनुकूल नहीं है और मुझको आपश्री का संकेत हुआ, इसलिये आपके समक्ष खड़ा हो गया हूँ। संघ का मेरे पर ऋण है उससे उऋण कैसे हुआ जाय, यह भाव मन-मस्तिष्क में आते रहते हैं। श्रद्धेय उपाध्याय श्री द्वारा कहे कथानक को कहीं पढ़ा इसलिए उद्धृत कर गया। परमपूज्य आचार्य श्री हस्ती ने अपने पट्टधर हीरा को घुट्टी दी कि तुम खुद से किसी को मत जोड़ना, संघ और धर्म से सबको जोड़ना। अपने आराध्य गुरुवर्य की सद्सीख को आपश्री ने जीवन-व्यवहार में आत्मसात् किया। आप इस सुन्दर बगिया को निरन्तर विस्तृत कर रहे हैं। संघ में चाहे संत हों, सतीवृन्द हों, श्रावक हों, श्राविकाएँ हों आपने सबको संवारा है, सुधारा है, आगे बढ़ाया है और निरन्तर आगे बढ़ाते जा रहे हैं।

संघ सदा रहेगा, व्यक्ति सदा नहीं रहेगा। आचार्य भगवन्त ने अपने संध्याकाल में कहा था- ''सागर में एक बूँद आती है, चली जाती है, सागर में बूँद का पता नहीं चलता। संघ सागर है, संघ सदा जयवन्त रहने वाला है।''

संघ का महत्त्व है, रहेगा। हम व्यक्ति को महत्त्व देने के बजाय संघ को उभारें। आप भी संघ उन्नति के लिए विचार करते रहते हैं। हमारा कर्त्तव्य क्या? मैं पहले कह गया, पुनः दोहरा रहा हूँ कि आज संघ विकास की और संघ अभ्युदय की बातें जहाँ-तहाँ सुनने को मिल रही हैं। संघ उन्नयन और संघ प्रगति सोपान की बातें आ रही हैं। उन्हें लगता है कि समय के साथ जैसे राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में क्षरण देखा जा रहा है कहीं संघ भी ह्रास की ओर नहीं बढ़ जाय। संघहितैषियों की चिन्ता स्वाभाविक है, पर भगवान् की वाणी कह रही है संघ पंचम आरे के अन्त तक रहेगा। जिस संघ का नायक संघ की दीप्ति के लिए सजग हो वहाँ आपका-हमारा संघ नायक के प्रति समर्पण संघ की जाहोजलाली के लिए बहुत है। संघ के हर सदस्य पर संघ का उपकार है। मेरे पर संघ और संघनायक के अनन्त उपकार हैं। दीक्षा देने वाले गुरुदेव प्रत्यक्ष में नहीं हैं तो भी शासन सेवा में सन्नद्ध रहने की प्रेरणा देने वाले साक्षात् आचार्यदेव हमारे बीच हैं।

हमारा संघ कैसा होना चाहिये? क्या चिन्तन है हमारा संघ के प्रति? भजन की कड़ियों में कहूँ-

एक राह हो, एक चाह हो, एक हो सबका नारा।
हो ऐसा संघ हमारा।।
जिन आज्ञा में रहें समर्पित, श्रद्धा हो अन्तर की,
गुणीजनों से प्रेम भाव हो, निन्दा न हो पर की।
नैतिकता की दीप शिखा से, जीवन हो उजियारा,
हो ऐसा संघ हमारा।।

संघ जयवन्त हो। हमारा संघ ऐसा हो जहाँ पर सिद्धान्तों का रक्षण हो, और गुणों का वर्द्धन हो। मर्यादाएँ सुरक्षित रहे। आचार-नियम का आचरण हो। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं का विसर्जन हो।

हमें संघ की सौरभ को दीप्तिमान करना है तो सिद्धान्तों का रक्षण करना होगा। वह चाहे प्रचार है, भाषण है, लेखन है, अध्ययन है, अध्यापन है, हर बात में सिद्धान्त प्रमुख रहे। पूज्य गुरुदेव तो फरमाते थे- सिद्धान्त के साथ समझौता नहीं हो। द्रव्य, क्षेत्र, काल के वातावरण में सिद्धान्त बदलते नहीं हैं। पहले सिद्धान्त, फिर अन्यान्य कार्यक्रम।

सिद्धान्त रक्षण की तरह गुणों का संवर्द्धन हो। हर प्रतिभा का, योग्यता का, पात्रता का विकास होना चाहिये। प्रतिभा का विकास भी हो, उपयोग भी हो। प्रतिभा आगे बढ़ने का उपकरण तो बने, अधिकरण नहीं। प्रतिभा का मान-सम्मान होना चाहिये, पर कम प्रतिभा वाले की उपेक्षा भी नहीं होनी चाहिये।

मर्यादाएँ कायम रहे। जब तक मर्यादाएँ हैं तब तक संघ है। जिस दिन मर्यादा नहीं रहेगी, संघ भी रहने वाला नहीं है। मर्यादा चाहे छोटी हो या बड़ी, आचार्य भगवन्त ने जिन मर्यादाओं को बनाया, उनमें गलियाँ निकालने की कोशिश न की जाय। आज गलियाँ निकालने का मानो रिवाज-सा हो गया है। मिथ्या मान्यताओं का खण्डन हो और व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं का विसर्जन हो। जिस संघ में व्यक्ति का महत्त्व बढ़ाया जायेगा, वह संघ आगे बढ़ने वाला नहीं होगा। इसका मतलब यह भी नहीं कि संघ में व्यक्ति का महत्त्व नहीं है। आज के लोग बड़े होशियार हैं धर्मस्थान में मोबाइल और टेप का निषेध है, वह यदि चालू हो तो हमारी

बात भी रिकार्ड की जा सकती है। व्यक्ति का महत्त्व है, पर व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा को प्रोत्साहित न किया जाय। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा में अन्दर में अहंकार रहता है, बाहर नज़र आए या नहीं। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएँ समाप्त न हो सकें तो भी उन्हें कम किया जाना चाहिये।

बातें बहुत हैं, पर समय सीमित है। संघ के हर सदस्य की संघ के प्रति निष्ठा और संघनायक के प्रति पूर्ण समर्पणता होनी चाहिये। समर्पण के साथ सक्रियता चाहिये और समन्वय भी चाहिये। संघ का हर सदस्य आचार में दृढ़ हो, व्यवहार में विशाल हो और जीवन में सहज हो। आज समर्पण की आवाजें बहुत उठ रही हैं। समर्पण किसके प्रति? क्या पद-प्रतिष्ठा पाने के लिए समर्पण है? क्या समर्पण केवल वचन तक ही है? समर्पण वचन-विलास तक ही न रहे, बल्कि गुरु के प्रति मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पण है तो वहाँ तर्क नहीं होगा, ननु-नच नहीं होगी। हर काम में, हर वृत्ति में, हर प्रवृत्ति में समर्पण है तो तहत (तह त्ति)होगा, हाथ जुड़े होंगे। समर्पण तन से होना चाहिये, मन से होना चाहिये।

सभा में से- धन से भी समर्पण होना चाहिये।

हाँ, आप ठीक कहते हैं। तन-मन से समर्पण के साथ श्रावक संघ को अपनी आवश्यकताएँ हैं तो कोई धन को जोड़कर समर्पण करे तो कोई हर्ज नहीं है। तन-मन-धन के समर्पण के साथ पूज्य गुरुदेव समय का भोग भी समर्पण में शुमार करते थे। आज धन देने वाले बहुत हैं, समय का भोग देने वाले विरले हैं। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज प्रायः अधिकारियों से कहते भी हैं- "थोड़ा समय मेरे को दो।" कल बातचीत में कार्याध्यक्ष ज्ञानेन्द्र जी से कहा- "थोड़ा समय निकालो।" आचार्यप्रवर अपनी सेवा के लिए नहीं, संघ-सेवा के लिए सजग कर रहे हैं। आप तन-मन-धन से और समय का भोग देकर संघ-सेवा का आदर्श उपस्थित करें। कुछ हैं जिनमें समर्पण है, लेकिन उनमें जैसी चाहिये वैसी सक्रियता नहीं। आप सक्रिय बनें। कुछ समर्पित हैं, सक्रिय भी हैं, लेकिन समन्वय की कमी है जिससे कार्यक्रम का क्रियान्वयन जैसा होना चाहिये, वैसा नहीं होता।

संघ के प्रति निष्ठा एवं संघनायक के प्रति समर्पण के साथ सक्रियता और समन्वय संघ की प्रगति के लिए आवश्यक है। आज अधिकांश संघ-सेवी जैसा चल रहा है, चलने दे रहे हैं। आपने कई बार सुना है- दुर्जन की दुर्जनता खतरनाक

नहीं, उससे ज्यादा खतरनाक है सज्जनों की निष्क्रियता। संघ का हर सदस्य जिसमें जैसी योग्यता है वह अपनी क्षमता से संघ-सेवा में सक्रिय बने। सबका सबके साथ समन्वय हो। संघ में समर्पण, सक्रियता और समन्वय तीनों जरूरी हैं। अभी आप तत्त्वचिन्तक मुनि श्री से सुन गये- ''महाराज! इस रास्ते से चलो, यह सीधा रास्ता है।'' दूसरा कहता है- ''नहीं महाराज, उससे अच्छा रास्ता यह है, आप इस रास्ते से चलें।'' संघ का हर काम समन्वय से होगा तो दूसरों को लगेगा कि इस संघ के सदस्य दूध में मिश्री की तरह घुले हुए हैं।

हमें संघनायक को भी सुनना है। आज तो घर के चार बेटों को चलना टेडी खीर है, पर हमारे नायक सभी को साथ लेकर चलते हैं, हम आपश्री के इंगित इशारे को समझकर संघ-सेवा में सन्नद्ध हों, यही मंगल मनीषा है।

शेषांश पृष्ठ ९ से.....

(प्र.) भगवन्! प्रतिक्रमण से जीव को क्या फल प्राप्त होता है?

(उ.) जीव स्वीकृत व्रतों के छिद्रों को ढांकता है, व्रत के छिद्रों को ढांकने वाला जीव पुनः आस्रवों को रोक देता है, चारित्र पर आये हुए धब्बे मिटा देता है, अष्ट प्रवचन माताओं में वह उपयोगवान् होता है फिर पृथक्त्व से रहित और सम्यक् प्रकार से प्रणिहित-समाधियुक्त होकर संयममार्ग में विचरता है॥11॥

(प्र.) भगवन्! कायोत्सर्ग से जीव को क्या लाभ प्राप्त होता है?

(उ.) कायोत्सर्ग से अतीत और वर्तमान के प्रायश्चित्त योग्य(अतिचारों) का विशोधन होता है। प्रायश्चित्त से विशुद्ध हुआ जीव भार को उतारने वाले भारवाहक की भांति शान्त (चिन्ता-रहित) हृदय वाला हो जाता है फिर प्रशस्त ध्यान में लीन होकर सुखपूर्वक विचरण करता है॥12॥

(प्र.) भगवन्! प्रत्याख्यान से जीव को क्या प्राप्त होता है?

(उ.) कर्मबन्ध के हेतु भूत हिंसादि द्वारों का निरोध होता है॥13॥

शोधालेख

जैन कर्म-सिद्धान्त और वंश-परम्परा विज्ञान (2)

डॉ. सोहनराज तातेड़

क्लोनिंग अर्थात् प्राणी प्रतिलिपिकरण

किसी जीव विशेष का जैनेटिकल प्रतिरूप पैदा करना अर्थात् डोनर पेरेन्ट (नर या मादा कोई एक) की हू-ब-हू शक्ल सूरत (प्रतिलिपि) पैदा कर देना क्लोनिंग कहलाता है। इसे जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार शरीर-नाम-पर्याप्ति कर्म के विपाक का फलित माना जा सकता है। किसी भी जीव के गुणों का निर्धारण उसकी घटक कोशिकाओं के अन्दर स्थित गुणसूत्रों के द्वारा होता है। विभिन्न विकसित प्राणी लैंगिक प्रजनन की विधि द्वारा अपनी सन्तानों को उत्पन्न करते हैं, जिसमें नर एवं मादा की जनन कोशिकाओं के आधे-आधे गुणसूत्र (वंशसूत्र) मिलकर एक नई रचना करते हैं, जिनमें जनक माता-पिता के गुण मिले रहते हैं। क्लोनिंग में मात्र नर अथवा मादा की सामान्य दैहिक कोशिकाओं के गुणसूत्रों के द्वारा सन्तान उत्पन्न की जाती है जो कि स्वाभाविक रुप से उनके दाता व्यक्ति (जनक) जैसी ही होती है। अविकसित जीवों, पेड़ पौधों आदि में तो यह क्रिया कायिक प्रजनन, अलैंगिक प्रजनन आदि के रूप में प्राकृतिक रूपेण पाई जाती है। परन्तु आधुनिक वैज्ञानिकों ने विकसित जीवों चूहों, भेड़ों एवं मनुष्यों तक को इस विधि से उत्पन्न करना शुरु कर दिया है।

स्तनधारी पशुओं में क्लोन बनाने की तकनीक

प्रत्येक पशु तथा वनस्पति में अनेक कोशिकाएँ (Cells) पाई जाती हैं। मनुष्य के शरीर में इन कोशिकाओं की कुल संख्या लगभग 60-70 खरब है। प्रत्येक कोशिका (Cell) अपने आप में पूर्ण जीवित इकाई होती है। कोशिका के केन्द्र में एक नाभिक (Nucleus) होता है। जिसे केन्द्रक भी कहते हैं। केन्द्रक के अन्दर उस जीव के गुणसूत्र (वंशसूत्र) होते है। मनुष्य की कोशिका में गुणसूत्रों (Chromosomes) की संख्या 46 होती है। इन गुणसूत्रों में आनुवांशिकी (Heredity) के सभी गुण मौजूद हैं। गुणसूत्रों की रचना डी.एन.ए. (D.N.A.) तथा आर.एन.ए. (R.N.A.) नामक रसायनों से होती है। इन गुणसूत्रों पर जीन स्थित होते हैं। कोशिका के केन्द्रक के चारों ओर एक जीव-द्रव होता है जिसे प्रोटोप्लाजमा कहते हैं।

नर के शुक्राणु (Sperm Cell) तथा मादा के अण्डाणु (Egg Cell) भी परिपक्व कोशिकाएँ होती हैं। इनमें द्विगुणन द्वारा वृद्धि नहीं होती। स्तनधारी पशुओं में लैंगिक (Sexual) प्रजनन होता है। इस प्रक्रिया में शुक्राणु, अण्डाणु के साथ मिलकर (Fusion) एक नई कोशिका का निर्माण होता है। इस नई कोशिका में द्विगुणन (Copying) करने की क्षमता होती है जिससे वह भ्रूण में परिवर्तित हो जाता है। इस कोशिका के केन्द्रक में गुणसूत्रों की संख्या तो 46 होती है, लेकिन इनमें से आधे गुणसूत्र नर के तथा शेष मादा के होते हैं। इसके विपरीत क्लोनिंग द्वारा उत्पन्न नई कोशिका में सारे के सारे गुणसूत्र किसी एक ही के होते हैं।

स्तनधारी पशुओं में क्लोन पैदा करने की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार से है- इसके लिए सर्वप्रथम मादा के एक स्वस्थ अण्डाणु (Egg Cell) को काम में लिया जाता है। इस अण्डाणु (Egg cell) में से विशेष तकनीक द्वारा केन्द्रक (Nucleus) को अलग कर दिया जाता है तथा उस केन्द्रक-विहीन कोशिका (Protoplasma) को एक सुरक्षित स्थान पर कल्चर मीडियम में डुबोकर रख दिया जाता है। अब हमें जिस प्रकार के जीव का क्लोन तैयार करना है (उस प्रकार के डोनर पेरेन्ट की) त्वचा में से कोशिका (Cell) अलग कर दी जाती है। इस कोशिका के केन्द्रक (Nucleus) को बड़ी सावधानीपूर्वक अलग कर दिया जाता है। इस केन्द्रक को पूर्व में सुरक्षित की गई केन्द्रक-विहीन कोशिका (Protoplasma) में प्रतिस्थापित (Transplant) कर दिया जाता है। इस प्रकार एक नई कोशिका पैदा हो जाती है, जिसका केन्द्रक डोनर पेरेन्ट की कोशिका का केन्द्रक होता है। इस प्रकार नई कोशिका में गुणसूत्र वे ही होते हैं जो कि डोनर पेरेन्ट (Doner Parent) के होते हैं। यही नई कोशिका द्विगुणन (Copying) द्वारा भ्रूण में परिवर्तित हो जाती है। इस भ्रूण को किसी भी मादा के गर्भाशय में स्थित कर दिया जाता है, जहाँ वह सामान्य रूप से विकसित होने लगता है। इस प्रकार जो नवजात पैदा होता है, उसमें गुणसूत्र वे ही होते हैं जो कि डोनर पेरेन्ट के होते हैं, अतः उसकी शक्ल सूरत हू-ब-हू डोनर पेरेन्ट (Doner Parent) जैसी ही होती है यानी कि वह डोनर पेरेन्ट (Doner Parent) की कार्बन कॉपी ही होती है। इस प्रकार हम जिसका प्रतिरूप (कॉपी-क्लोन) तैयार करना चाहते हैं, उसका केन्द्रक मादा के केन्द्रक-विहीन (Protoplasma) अण्डाणु में प्रतिस्थापित करना होगा। यदि हम नर का क्लोन तैयार करना चाहते हैं तो उसकी कोशिका (Cell) का केन्द्रक और यदि मादा का क्लोन तैयार करना चाहते हैं तो मादा की कोशिका का केन्द्रक मादा के केन्द्रक-विहीन अण्डाणु में प्रतिस्थापित

करना होगा।[6]

जैन कर्म-सिद्धान्त तथा मानव क्लोनिंग

जैन धर्मानुसार जीवन की विभिन्न क्रियाओं, रचनाओं तथा घटनाओं का नियंत्रण कर्मों के द्वारा होता है। विभिन्न जीवों को मिलने वाले अलग-अलग शरीर, आयु, गोत्र, सुख-दुःख आदि का निर्धारण विभिन्न कर्म करते हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन का पूर्ण संचालन कर्मों के द्वारा ही होता है। **वस्तुतः कर्म तो मात्र परिस्थितियों का निर्माण करते हैं, किन्तु उन कर्मों के अनुसार आचरण करना या नहीं करना इसमें जीव स्वतन्त्र है। आत्मा कर्मों के कारागार में बंधी अवश्य है, परन्तु वह अपने पुरुषार्थ के द्वारा कर्मों के फल में परिवर्तन कर सकती है। चेतना की स्वतन्त्र शक्ति के द्वारा कर्मों पर विजय पाना ही जिनधर्म है।**

अब यहाँ सवाल यह है कि जब वैज्ञानिक ही मानव तथा अन्य जीवों के लिए विभिन्न गुणों का निर्धारण करने लगे हैं तो जैन कर्म-सिद्धांत कहाँ लागू होता है? शरीर में किसी प्रकार का परिवर्तन करना क्या कर्म-सिद्धान्त को चुनौती नहीं है? इस विषय में यह कहना उचित होगा कि एक अपराधी किसी व्यक्ति का अंग-भंग कर देता है या कोई व्यक्ति शल्यक्रिया के द्वारा अंग परिवर्तित करवा लेता है अथवा कोई मानसिक उपचार के द्वारा अपराधी प्रवृत्ति से छुटकारा पा लेता है या फिर जहर/दुर्घटना से असमय में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तो यह सब कर्म-सिद्धान्त के लिए चुनौती नहीं माने जा सकते। यही कार्य अब और भी व्यवस्थित रूप से परन्तु अप्राकृतिक, अनैतिक रूप से क्लोनिंग प्रक्रिया के द्वारा वैज्ञानिक कर रहे हैं। एक समान मनचाहे जीवों को पैदा करने की बात भी बिल्कुल अधूरी है। एक जैसी शक्ल सूरत शरीर बन जाने का यह अर्थ नहीं होता कि उसका व्यक्तित्व और व्यवहार भी एक जैसा हो अर्थात् यह जरूरी नहीं की अपराधी का क्लोन अपराधी तथा वैज्ञानिक का क्लोन वैज्ञानिक ही बने। लोगों को लगता है कि क्लोनिंग के द्वारा किसी भी जीव को वैज्ञानिक सुनिश्चित रीति से बना सकते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। पहली क्लोन भेड़ का निर्माण इस सम्बन्ध में किए गए 277 परीक्षणों की असफलता के बाद हुआ था तथा मानव क्लोनिंग के 100 में से 1 या 2 मामलों में ही सफलता मिली है।[7]

जो जीव कई बार की असफलताओं के बाद बनते भी हैं तो वह दरअसल वैज्ञानिकों के द्वारा नहीं बनते हैं। वैज्ञानिक तो मात्र एक निश्चित शरीर रचना के

अनुकूल परिस्थितियाँ देते हैं। उसमें जीव/ आत्मा का आविर्भाव उनके बस में नहीं है। क्लोनिंग सिर्फ शरीर के स्तर तक जुड़ी हुई है जबकि आत्मा तथा पुनर्जन्म का सिद्धान्त वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की सीमाओं से परे है। आत्मा तथा पुनर्जन्म का आभास सत्यान्वेषी मानवों को होता है। इसे अभी वैज्ञानिक भी पूरे आत्मविश्वास तथा प्रमाणों के साथ नकार नहीं सके हैं। कारण स्पष्ट है कि इनके अस्तित्व के सम्बन्ध में संसार भर में असंख्य प्रमाण/घटनाएँ हर समय होती ही रहती हैं।[10]

जैन धर्म तथा प्रौद्योगिकी

जीव विज्ञान की आधुनिक विकसित शाखा जैव प्रौद्योगिकी में मानव जीनोम परियोजना, जैनेटिक आभियांत्रिकी, जैनेटिक सर्जरी तथा मानव क्लोनिंग आदि का अध्ययन-अन्वेषण किया जाता है। इसके नूतन अनुसंधानों के द्वारा जीवों के गुणसूत्रों पर स्थित जीन्स (संस्कारसूत्र) के कई गुण धर्मों का पता चल रहा है। जीवों की विभिन्न दशाओं-बुढापा, अपराध, बीमारियाँ आदि का नियमन भी इन संस्कार सूत्रों से होता है तथा इनके परिवर्तन के द्वारा मनोवांछित जीवन बनाने का दावा वैज्ञानिक कर रहे हैं। जीन तथा जैनेटिक कोड के इस गुणधर्म को ध्यान में रखते हुए जैनेटिक कोडों और कर्म-परमाणुओं के बीच सम्बन्धों पर परिकल्पना वैज्ञानिकों को दी गई है, जिस पर कुछ वैज्ञानिक व्यापक अनुसंधान भी कर रहे हैं।

पहले तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि जीन तथा जैनेटिक कोड सर्वोपरि नहीं है, उन शारीरिक, पर्यावरणीय वातावरण, आंतरिक तथा बाह्य परिस्थतियाँ भी नियंत्रण रखती हैं। जीवन के क्रियाकलाप उसके स्वयं के शरीर के साथ-साथ दूसरे जीवों के क्रियाकलापों तथा अन्य बाह्य परिस्थितियों द्वारा संचालित होते हैं। इन जीनों तथा इनको प्रभावित करने वाले उक्त कारण ही अन्ततः कर्म-परमाणुओं की संभावनाओं को सूचित करते हैं, जिनके संबंध में वैज्ञानिक वर्ग फिलहाल पूर्णतः मौन हैं। अगर वैज्ञानिक जैन कर्म-सिद्धान्त को समझकर जीवों के विभिन्न कार्य सच्चाई-झूठ, अहिंसा-अपराध, जीवदया-क्रूरता पर सतत अन्वेषण करें तो वे इस महान् जैन कर्म-सिद्धान्त को सत्य पायेंगे।[11]

जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार जीव के शरीर की रचना उसके नाम-कर्म के कारण होती है। कोई जीव कैसी शक्ल-सूरत प्राप्त करेगा उसका निर्धारण इसी नामकर्म से होता है। लेकिन यहाँ तो क्लोन से शरीर की रचना मनुष्य के अपने ही हाथों में आ गई है। हम जैसी शक्ल-सूरत बनाना चाहते हैं, बना सकते हैं। ऐसी

स्थिति में क्या नामकर्म की अवधारणा अर्थहीन हो गई है? ऐसा सोचना सही नहीं है। वस्तुस्थिति समझने के लिए हमें जैन कर्म-सिद्धान्त को गहराई से समझना होगा।

सबसे पहले तो हमें स्पष्ट करना होगा कि प्रत्येक घटना मात्र कर्म से घटित नहीं होती। आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपनी पुस्तक कर्मवाद में लिखा है- ''कर्म से ही सब कुछ नहीं होता। यदि हम कर्मों के अधीन ही सब कुछ घटित होना मान लेंगे तो यह वैसी ही व्यवस्था हो जायेगी जैसी कि ईश्वरवादियों की है कि जो कुछ होता है वह ईश्वर की इच्छा से होता है या फिर उन नियतिवादियों की स्थिति है कि सब कुछ नियति के अधीन है, हम उसमें कुछ भी फेर-बदल नहीं कर सकते। यदि कर्म ही सब कुछ हो जाए तो उनको क्षय करने के लिए न तो पुरुषार्थ का ही महत्त्व रह जाएगा और न ही मोक्ष संभव होगा, क्योंकि जैसे कर्म होंगे वैसा ही उनका उदय होगा और उस अनुरूप ही हम कार्य करेंगे तथा नए कर्मों का बंधन करेंगे। इससे पुरुषार्थ तथा मोक्ष की बात गलत सिद्ध हो जाएगी।'' अब यह स्पष्ट है कि कर्म ही सब कुछ नहीं है।[१२]

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी आगे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- ''कर्म एक निरंकुश सत्ता नहीं है। कर्म पर भी अंकुश है। कर्मों में परिवर्तन भी किया जा सकता है। भगवान् महावीर ने कहा- 'किया हुआ कर्म भुगतना पड़ेगा।'' यह सामान्य नियम है, लेकिन इसमें कुछ अपवाद हैं। कर्मों में उदीरणा, उद्वर्तन, अपवर्तन तथा संक्रमण संभव हैं, जिसके द्वारा कर्मों में परिवर्तन भी किया जा सकता है। सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि पुरुषार्थ द्वारा कर्मों की निर्जरा समय से पहले की जा सकती है। कर्मों की काल-मर्यादा और तीव्रता को बढ़ाया और घटाया भी जा सकता है तथा सजातीय कर्म एक भेद से दूसरे भेद में बदल सकते हैं। उदय में आने वाले कर्मों के फल की शक्ति को कुछ समय के लिए दबाया जा सकता है तथा काल विशेष के लिए पुनः फल देने में अक्षम भी किया जा सकता है, इसे उपशम कहते हैं।''[१३]

आचार्य महाप्रज्ञजी का मानना है- ''संक्रमण का सिद्धान्त जीन को बदलने का सिद्धान्त है।''[१४] एक विशेष बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि कर्मों का विपाक (फल) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुरूप होता है। व्यक्तित्व के निर्माण में कर्म ही सब कुछ नहीं होते हैं बल्कि आनुवंशिकता, परिस्थिति, वातावरण, भौगोलिकता, पर्यावरण यह सब मनुष्य के स्वभाव और व्यवहार पर असर डालते हैं। आयुष्य भी एक कर्म है, लेकिन बाह्य निमित्त जहर आदि के सेवन से आयुष्य को शीघ्र पूर्ण कर लिया जाता है। इसी प्रकार कोशिका (Cell) के गुणसूत्रों (Chromosome) में अवस्थित जीन्स (संस्कार सूत्र) में परिवर्तन करके शक्ल-सूरत में परिवर्तन किया जा

सकता है, क्योंकि जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार संक्रमण द्वारा यह संभव है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार मानव जीनोम परियोजना, जैनेटिक आभियांत्रिकी, जैनेटिक सर्जरी, मानव क्लोनिंग द्वारा एक ही शक्ल-सूरत वाले जीव पैदा करना, कोशिका के केन्द्रक को परिवर्तित कर देना संभव है। अतः वंश-परम्परा विज्ञान (Genetic Science) कर्म सिद्धान्त के लिए कोई चुनौती नहीं है, बल्कि जैन कर्म-सिद्धान्त को व्यवस्थित तरीके से समझ लेने पर वंश-परम्परा विज्ञान (Genetic Science) की व्याख्या जैन कर्म-सिद्धान्त के आधार पर आसानी से की जा सकती है।

जैन कर्म-सिद्वान्त और वंश-परम्परा विज्ञान (Jain theory of karma and Genetic science) दोनों का गहन अध्ययन व शोध कर जन-मानस तक यह तथ्य उजागर करना है कि हर प्राणी पुरुषार्थ कर संक्रमण के द्वारा अशुभ कर्मों को शुभ में बदल सकता है तथा त्याग, संयम, संवर और निर्जरा के द्वारा स्थूल शरीर के 'जीन्स' के स्वरूप को भी बदला जा सकता है। वंश-परम्परा विज्ञान (Genetic science) की शोध कर यह उद्घाटित करना है कि किसी भी प्राणी के जख्मी 'जीन्स' के स्थान पर स्वस्थ 'जीन्स' का प्रत्यारोपण कर स्थूल शरीर को उन्नत किया जा सकता है।

सामाजिक उपयोगिता

इस शोध कार्य से संसारी आत्मा की शुभ-अशुभ प्रवृत्ति से चिपकने वाले शुभ-अशुभ कर्मों की जानकारी मानव-जगत को मिलेगी, जिससे व्यक्ति अनैतिकता एवं हिंसा करने में संकोच करेगा। प्राणिमात्र के स्थूल शरीर की रचना में 'जीन्स' किस प्रकार अपना योगदान देते हैं, जैसा 'जीन्स' वैसा स्थूल शरीर का महत्त्व जन-मानस में प्रगट होगा, जिससे वे अपने 'जीन्स' के शुद्धीकरण के बारे में सचेत होंगे। **हमारी आत्मा चिन्तन व पुरुषार्थ में स्वतंत्र है, परन्तु कर्मों की बद्धता के कारण परतंत्र है। पुरुषार्थ से त्याग, संयम, संवर, निर्जरा करके प्राणी अपनी आत्मा की शुद्धि करके स्थायी सुखानुभूति प्राप्त कर सकता है। 'भाव परिवर्तन द्वारा कर्मों की निर्जरा की जा सकती है तथा 'जीन्स' का रूपान्तरण किया जा सकता है।**

जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार कर्मबद्ध आत्मा ही नये कर्मों का संचय करती है। कर्म का बीज है-राग-द्वेष। मुक्त आत्मा कर्म-संचय नहीं करती, क्योंकि उसके राग-द्वेष पूर्ण नष्ट हो चुके होते हैं। कर्म क्षय करने में जैन धर्म का पुरुषार्थ एवं

प्रयत्न में अटूट विश्वास है। जैन साधना पद्धति का उद्देश्य संवर, निर्जरा के द्वारा कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्ति करना है। संक्रमणकरण, उद्वर्तना, अपवर्तना तथा उदीरणा आदि के द्वारा पूर्वबद्ध कर्मों की स्थिति एवं अनुभाग को घटाया बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए समता-भाव की साधना-आराधना करते हुए तप रूप निर्जरा को जीवन का अंग बनाना आवश्यक है।

जीन हमारे स्थूल शरीर का अवयव है और कर्म हमारे सूक्ष्म शरीर का अवयव है। प्रत्येक विशिष्ट प्रकार के गुण के लिए विशिष्ट प्रकार का **'जीन'** होता है। यह जीन कर्मवाद के संवादी हैं। वंश-परम्परा विज्ञान में क्लोनिंग तकनीक के द्वारा मानव के विभिन्न अंगों को प्रयोगशाला में ही विकसित किया जा सकता है, जिससे कई असाध्य रोगों को दूर करने में आसानी होगी। इसके अलावा इस तकनीक से विभिन्न बेकार 'जीन्स' को बदला जा सकेगा तथा बुढापे को रोका जा सकेगा। संक्रमण का सिद्वान्त जीन को बदलने का सिद्धान्त है।

निष्कर्ष

वैज्ञानिकों के सामने एक चुनौती है कि अब जीन ही शरीर के प्रत्येक कार्य पर नियंत्रण रखता है तब जीन को कौन नियंत्रित करता है? इसका उत्तर उनके पास नहीं है। इस समस्या का उत्तर जैन दर्शन की कर्म-व्यवस्था द्वारा दिया जा सकता है। इन जीनों (Genes) को कर्म नियंत्रित करते हैं। कर्म ही समय-समय पर जीन्स को निर्देश देते हैं कि उन्हें आगे क्या कार्य करना है फिर जीन उसी के अनुरूप कार्य करते हैं यानी कि औदारिक शरीर के निर्माण में जीन-कर्म के संवादी तत्त्व हैं।

संदर्भ ग्रन्थ-

८. जीवन क्या है : डॉ. अनिल कुमार जैन, पृ. ९५
९. वर्मा, संजय, विज्ञान प्रगति (नई दिल्ली) मार्च, २००३, पृ. १९
१०. अर्हत् वचन - अजित जैन 'जलज' जनवरी-मार्च, २००४, पृ. ४९
११. अजीत जैन 'जलज' कर्म सिद्धान्त की जीव वैज्ञानिक परिकल्पना, अर्हत्वचन (इन्दौर) जुलाई, १९९९, पृ. १७-२२
१२. कर्मवाद - युवाचार्य (वर्तमान आचार्य) महाप्रज्ञ, पृ. १३२
१३. वही, पृ. १०२
१४. वही, पृ. १३२

-सलाहकार, जैन विश्वभारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं (राज.)

शोधालेख

जैन कथा साहित्य : एक समीक्षात्मक सर्वेक्षण(2)

प्रो. सागरमल जैन

विभिन्न काल खण्डों का जैन कथा-साहित्य

कालिकदृष्टि से विचार करने पर हम पाते हैं कि जैन कथा साहित्य ई.पू. छठी शताब्दी से लेकर आधुनिक काल तक रचा जाता रहा है। इस प्रकार जैन कथा साहित्य की रचना अवधि लगभग सत्ताईस सौ वर्ष है। इतनी सुदीर्घ कालावधि में विपुल मात्रा में जैन आचार्यों ने कथा-साहित्य की रचना की है। भाषा की प्रमुखता के आधार पर कालक्रम के विभाजन की दृष्टि से इसे निम्न पाँच काल खण्डों में विभाजित किया जा सकता है-

१. **आगमयुग** - ईस्वी पूर्व छठी शती से ईसा की पाँचवीं शती तक।

२. **प्राकृत आगमिकव्याख्यायुग**- ईसा की दूसरी शती से 8 वीं शती तक।

३. **संस्कृत टीका युग या पूर्वमध्ययुग** - ईसा की 8 वीं शती से 14 वीं शती तक।

४. **उत्तर मध्ययुग या अपभ्रंश एवं मरुगुर्जर युग** - ईसा की 14 वीं शती से 18 वी शती तक।

५. **आधुनिक भारतीय भाषा युग** - ईसा की 19 वीं शती से वर्तमान तक।

भारतीय इतिहास की अपेक्षा से इन पाँच कालखण्डों का नामकरण इस प्रकार भी कर सकते हैं - 1. पूर्वप्राचीन काल 2. उत्तरप्राचीन काल 3. पूर्वमध्य काल 4. उत्तरमध्य काल और 5. आधुनिक काल। इनकी समयावधि तो पूर्ववत् ही माननी होगी। यद्यपि कहीं-कहीं कालावधि में ओवर लेपिंग (अतिक्रमण) है, फिर भी इन कालखण्डों की भाषाओं एवं विद्याओं की अपेक्षा से अपनी-अपनी विशेषताएँ भी हैं। आगे हम इन काल खण्डों के कथा साहित्य की विशेषताओं को लेकर ही कुछ चर्चा करेंगे -

प्रथम काल खण्ड में मुख्यतः अर्धमागधी प्राचीन आगमों की कथाएँ आती हैं – ये कथाएँ मुख्यतः आध्यात्मिक उपदेशों से सम्बन्धित हैं और अर्धमागधीप्राकृत में लिखी गई हैं। दूसरे, ये कथाएँ संक्षिप्त और रूपक के रूप में लिखी गई हैं। जैसे – आचारांग में शैवाल छिद्र और कछुए द्वारा चाँदनी दर्शन के रूपक द्वारा सद्धर्म और मानवजीवन की दुर्लभता का संकेत हैं। सूत्रकृतांग में श्वेतकमल के रूपक से अनासक्त व्यक्ति द्वारा मोक्ष की उपलब्धि का संकेत है। स्थानांग सूत्र में वृक्षों, फलों आदि के विविध रूपकों द्वारा मानव–व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों को समझाया गया है। समवायांग के परिशिष्ट में चौबीस तीर्थंकरों के कथासूत्रों का नाम–निर्देश है। इसी प्रकार भगवती में अनेक कथा रूप संवादों के माध्यम से दार्शनिक समस्याओं का निराकरण भी हुआ है। इसके अतिरिक्त आचारांग के दोनों श्रुतस्कन्धों के अन्तिम भागों में, सूत्रकृतांग के षष्ठ अध्ययन में और भगवती में महावीर के जीवनवृत्त के कुछ अंशों को उल्लेखित किया गया है। इनके कल्पसूत्र और उसकी टीकाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि महावीर के जीवन के कथानकों में अतिशयों का प्रवेश कैसे–कैसे हुआ है।

जैन कथासाहित्य की अपेक्षा से ज्ञाताधर्मकथा की कथाएँ अति महत्त्वपूर्ण हैं, इसमें संक्षेप रूप से अनेक कथाएँ वर्णित हैं। प्रथम मेघकुमार नामक अध्ययन में वर्तमान मुनि जीवन के कष्ट अल्प हैं और उपलब्धियाँ अधिक हैं, यह बात समझायी गयी है। दूसरे अध्ययन में धन्ना सेठ द्वारा विजयचोर को दिये गये सहयोग के माध्यम से अपवाद में अकरणीय करणीय हो जाता है, यह समझाया गया है। इसी प्रकार इसके सातवें अध्ययन में यह समझाया गया है कि योग्यता के आधार पर दायित्वों का विभाजन करना चाहिये । मयूरी के अण्डे के कथानक से यह समझाया गया है, कि अश्रद्धा का क्या दुष्परिणाम होता है। मल्ली के कथानक में स्वर्णप्रतिमा के माध्यम से शरीर की अशुचिता को समझाया गया है। कछुए के कथानक के माध्यम से संयमी–जीवन की सुरक्षा के लिए विषयों के प्रति उन्मुख इन्द्रियों के संयम की महत्ता को बताया गया है। उपासकदशा में श्रावकों के कथानकों के माध्यम से न केवल श्रावकाचार को स्पष्ट किया गया है, अपितु साधना के क्षेत्र में उपसर्गों में अविचलित रहने का संकेत भी दिया गया है। अंतकृद्दशा, औपपातिकदशा और विपाकदशा में विविध प्रकार की तप–साधनाओं के स्वरूप को और उनके

सुपरिणामों को तथा दुराचार के दुष्परिणामों को समझाया गया है।

उपांग साहित्य में रायपसेनीयसुत्त में अनेक रूपकों के माध्यम से आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध किया गया है। इसी प्रकार उत्तराध्ययन, दशवैकालिक आदि में भी उपदेशप्रद कुछ कथानक वर्णित हैं। नन्दीसूत्र में औत्पातिकी बुद्धि के अन्तर्गत रोहक की 14 और अन्य की 26 ऐसी कुल 40 कथाओं, वैनियकी बुद्धि की 15, कर्मजाबुद्धि की 12 और पारिणामिकी बुद्धि की 21 कथाओं, इस प्रकार कुल 88 कथाओं का नाम संकेत है एवं उसकी टीका में इन कथाओं का विस्तृत विवेचन भी उपलब्ध होता है। किन्तु मूल ग्रन्थ में कथाओं के नाम संकेत से यह तो ज्ञात हो जाता है कि नन्दीसूत्र के कर्त्ता को उन सम्पूर्ण कथाओं की जानकारी थी। इस काल की जैन कथाएँ, विशेष रूप से चरित्र-चित्रण सम्बन्धी कथाएँ ऐतिहासिक कम और पौराणिक अधिक प्रतीत होती हैं। उनको सर्वथा काल्पनिक भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उनमें वर्णित कुछ व्यक्ति ऐतिहासिक भी हैं। आगमयुग की कथाओं में कुछ चरित नायकों के ही पूर्व जन्मों की चर्चा है, उनमें अधिकांश की या तो मुक्ति दिखाई गई है या फिर भावी जन्म दिखाकर उनकी मुक्ति का संकेत किया गया है। तीर्थंकरों के भी अनेक पूर्वजन्मों का चित्रण इनमें नहीं है। समवायांग आदि में मात्र एक ही पूर्व भव का उल्लेख है। कहीं-कहीं जाति स्मरण ज्ञान द्वारा पूर्वभवों की चेतना का निर्देश भी किया गया है। आगमों में जो जीवन गाथाएँ वर्णित हैं, उनमें साधनात्मक पक्ष को छोड़कर कथा विस्तार अधिक नहीं है। कहीं-कहीं तो दूसरे किसी वर्णित चरित्र से इसकी समरूपता दिखाकर कथा समाप्त कर दी गई है।

आगमयुग के पश्चात् दूसरा युग प्राकृत आगमिक व्याख्याओं का युग है। इसे उत्तर प्राचीन काल भी कह सकते हैं। इसकी कालावधि ईसा की दूसरी-तीसरी शती से लेकर सातवीं शती तक मानी जा सकती है। इस कालावधि में जो महत्त्वपूर्ण जैन कथाग्रन्थ अर्धमागधी प्रभावित महाराष्ट्री प्राकृत में लिखे गये, उनमें विमलसूरि का 'पउमचरियं', संघदासगणि की 'वसुदेवहिण्डी' और अनुपलब्ध 'तरंगवई' कहा प्रमुख है। इस काल की अन्तिम शती में यापनीय परम्परा में संस्कृत में लिखा गया वरांगचरित्र भी आता है। यह भी कहा जाता है कि विमलसूरि ने पउमचरियं (रामकथा) के समान ही हरिवंसचरियं के रूप में प्राकृत में कृष्ण कथा भी लिखी थी,

किन्तु यह कृति उपलब्ध नहीं है। इन काल के इन दोनों कथाग्रन्थों की विशेषता यह है कि इनमें अवान्तर कथाएँ अधिक हैं। इस प्रकार इन कथाग्रन्थों में कथाप्ररोह शिल्प का विकास देखा जा सकता है। इस काल के कथा ग्रन्थों में पूर्व भवान्तरों की चर्चा भी मिल जाती है।

स्वतन्त्र कथाग्रन्थों के अतिरिक्त इस काल में जो प्राकृत आगमिक व्याख्याओं के रूप में निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णि साहित्य लिखा गया है, उनमें अनेक कथाओं के निर्देश हैं। यद्यपि यहाँ यह ज्ञातव्य है कि निर्युक्तियों में जहाँ मात्र कथा संकेत हैं वहाँ भाष्य और चूर्णि में उन्हें क्रमशः विस्तार दिया गया है। धूर्ताख्यान की कथाओं का निशीथभाष्य में जहाँ मात्र तीन गाथाओं में निर्देश है, वहीं निशीथचूर्णि में ये कथाएँ तीन पृष्ठो में वर्णित हैं। इसी को हरिभद्र ने अधिक विस्तार देकर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना कर दी है।

इस काल के कथा-साहित्य की विशेषता यह है कि इसमें अन्य परम्पराओं से कथा वस्तु को लेकर उसका युक्ति-युक्त वर्णन किया गया है, जैसे पउमचरियं में रामचरित्र में सुग्रीव एवं हनुमान को वानर न दिखाकर वानरवंश के मानवों के रूप में चित्रित किया गया है। इसी प्रकार रावण को राक्षस न दिखाकर विद्याधर वंश का मानव ही माना गया है। साथ ही कैकयी, रावण आदि के चरित्र को अधिक उदात्त बनाया गया है। साथ ही धूर्त्ताख्यान की कथा के माध्यम से हिन्दू पौराणिक एवं अवैज्ञानिक कथाओं की समीक्षा भी व्यंग्यात्मक शैली में की गई है। राम और कृष्ण को स्वीकार करके भी उनको ईश्वर के स्थान पर श्रेष्ठ मानव के रूप में ही चित्रित किया गया है। दूसरे आगमिक व्याख्याओं विशेष रूप से भाष्यों और चूर्णियों में जो कथाएँ हैं, वे जैनाचार के नियमों और उनकी आपवादिक परिस्थितियों के स्पष्टीकरण के निमित्त निर्मित हुई हैं।

जैन कथा-साहित्य के कालखण्डों में तीसरा काल आगमों की संस्कृत टीकाओं तथा जैन पुराणों का रचाना काल है। इसकी कालावधि ईसा की 8 वीं शती से लेकर ईसा की 14 वीं शती मानी जा सकती है। जैन कथा-साहित्य की रचना की अपेक्षा से यह काल सबसे समृद्ध काल है इस कालावधि में श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय तीनों ही परम्पराओं के आचार्यों और मुनियों ने विपुलमात्रा में जैन कथा

साहित्य का सृजन किया है। यह कथा-साहित्य मुख्यतः चरित्र-चित्रण प्रधान है, यद्यपि कुछ कथा-ग्रन्थ साधना और उपदेश प्रधान भी हैं। जो ग्रन्थ चरित्र-चित्रण प्रधान हैं वे किसी रूप में प्रेरणा प्रधान तो माने ही जा सकते हैं। दिगम्बर परम्परा के जिनसेन (प्रथम) का आदिपुराण, गुणभद्र का उत्तरपुराण, रविषेण का पद्मचरित्र, जिनसेन द्वितीय का हरिवंश पुराण आदि इसी कालखण्ड की रचनाएँ हैं। श्वेताम्बर परम्परा में हरिभद्र की समराइच्चकहा, कौतुहल कवि की लीलावईकहा, उद्योतनसूरि की कुवलयमाला, सिद्धर्षिकृत उपमितिभवप्रपंचकथा, शीलांक का चउपन्नमहापुरिसचरियं, धनेश्वरसूरि का सुरसुन्दरीचरियं, विजयसिंहसूरि की भुवनसुन्दरीकथा, सोमदेव का यशस्तिलकचम्पू, धनपाल की तिलकमंजरी, हेमचन्द्र का त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, जिनचन्द्र की संवेगरंगशाला, गुणचन्द्र का महावीरचरियं एवं पासनाहचरियं, देवभद्र का पाण्डवपुराण आदि अनेक रचनाएँ हैं। इस कालखण्ड में अनेक तीर्थंकरों के चरित्र-कथानकों को लेकर भी प्राकृत और संस्कृत में अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं, यदि उन सभी का नाम निर्देश भी किया जाये तो आलेख का आकार बहुत बढ जायेगा। इस कालखण्ड की स्वतंत्र रचनाएँ शताधिक ही होंगी।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस काल की रचनाओं में पूर्वभवों की चर्चा प्रमुख रही है। इससे ग्रन्थों के आकार में भी वृद्धि हुई है, साथ ही एक कथा में अनेक अन्तर कथाएँ भी समाहित की गई हैं। इसके अतिरिक्त इस काल के अनेक स्वतंत्र ग्रन्थों और उनकी टीकाओं में भी अनेक कथाएँ संकलित की गई हैं - उदाहरण के रूप में हरिभद्र की दशवैकालिक टीका में 30 और उपदेशपद में 70 कथाएँ गुम्फित हैं। संवेगरंगशाला में 100 से अधिक कथाएँ हैं। पिण्डनिर्युक्ति और उसकी मलयगिरि की टीका में भी लगभग 100 कथाएँ दी गई हैं। इस प्रकार इस काल खण्ड में न केवल मूल ग्रन्थों और उनकी टीकाओं में अवान्तर कथाएँ संकलित हैं, अपितु विभिन्न कथाओं का संकलन करके अनेक कथाकोशों की रचना भी जैनधर्म की तीनों शाखाओं के आचार्यों और मुनियों द्वारा की गई है। जैसे- हरिषेण का 'बृहत्कथाकोश', श्रीचन्द्र का 'कथा-कोश', भद्रेश्वर की 'कहावली', जिनेश्वरसूरि का 'कथा-कोष प्रकरण' देवेन्द्र गणि का 'कथामणिकोश', विनयचन्द्र का 'कथानक कोश', देवभद्रसूरि अपरनाम गुणभद्रसूरि का

'कथारत्नकोष', नेमिचन्दसूरि का 'आख्यानक मणिकोश' आदि। इसके अतिरिक्त प्रभावकचरित्र, प्रबन्धकोश, प्रबन्धचिन्तामणि आदि भी अर्ध ऐतिहासिक कथाओं के संग्रह रूप ग्रन्थ भी इसी काल के हैं। इसी काल के अन्तिम चरण से प्रायः तीर्थों की उत्पत्ति कथाएँ और पर्वकथाएँ भी लिखी जाने लगी थीं। पर्व कथाओं में महेश्वरसूरि की 'णाणपंचमीकहा' (वि.सं. 1109) तथा तीर्थ कथाओं में जिनप्रभ का विविधतीर्थकल्प भी इसी कालखण्ड के ग्रन्थ हैं। यद्यपि इसके पूर्व भी लगभग दशवीं शती में 'सारावली प्रकीर्णक' में शत्रुंजय तीर्थ की उत्पत्ति कथा वर्णित है। यद्यपि अधिकांश पर्व कथाएँ और तीर्थोत्पत्ति की कथाएँ उत्तरमध्यकाल में ही लिखी गई हैं।

इसी कालखण्ड में हार्टले की सूचनानुसार ब्राह्मणपरम्परा के दुर्गसिंह के पंचतंत्र की शैली का अनुसरण करते हुए वादीभसिंहसूरि नामक जैन आचार्य ने भी पंचतंत्र की रचना की थी।

ज्ञातव्य है कि जहाँ पूर्व मध्यकाल में कथाएँ संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में लिखी गई, वहीं उत्तरमध्यकाल में अर्थात् ईसा की 16 वीं शती से 18 वीं शती तक के कालखण्ड में मरूगुर्जर भी कथा लेखन का माध्यम बनी है। अधिकांश तीर्थमाहात्म्य विषयक कथाएँ, व्रत, पर्व और पूजा विषयक कथाएँ इसी काल खण्ड में लिखी गई हैं। इन कथाओं में चमत्कारों की चर्चा अधिक है। साथ ही अर्धऐतिहासिक या ऐतिहासिक रासो भी इस कालखण्ड में लिखे गये हैं।

इसके पश्चात् आधुनिक काल आता है, जिसका प्रारम्भ 19 वीं शती से माना जा सकता है। जैसा कि हम पूर्व में उल्लेख कर चुके हैं यह काल मुख्यतः हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं में रचित कथा साहित्य से सम्बन्धित है। इस काल में मुख्यतः हिन्दी भाषा में जैन कथाएँ और उपन्यास लिखे गये। इसके अतिरिक्त कुछ श्वेताम्बर आचार्यों ने गुजराती भाषा को भी अपने कथा-लेखन का माध्यम बनाया। क्वचित् रूप में मराठी और बंगला में भी जैन कथाएँ लिखी गई। बंगला में जैन कथाओं के लेखन का श्रेय भी गणेश ललवानी को जाता है। इस युग में जैन कथाओं और उपन्यासों के लेखन में हिन्दी कथा शिल्प को ही अपना आधार बनाया गया है। सामान्यतया जैन कथाशिल्प की प्रमुख विशेषता नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना ही रही है, अतः उसमें कामुक कथाओं

और प्रेमाख्यानकों का प्रायः अभाव ही देखा जाता है, यद्यपि वज्जालग्गं तथा महाकाव्यों के कुछ प्रसंगों को छोड दें तो प्रधानता नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की ही रही है। यद्यपि कथाओं को रसमय बनाने के हेतु कहीं-कहीं प्रेमाख्यानकों का प्रयोग तो हुआ है, फिर भी जैन लेखकों का मुख्य प्रयोजन तो शान्त रस या निर्वेद की प्रस्तुति ही रहा है।

जैन कथाओं का मुख्य प्रयोजन

जैन कथा साहित्य के लेखन के अनेक प्रयोजन रहे हैं, यथा-

1. जन सामान्य का मनोरंजन कर उन्हें जैन धर्म के प्रति आकर्षित करना।
2. मनोरंजन के साथ-साथ नायक आदि के सद्गुणों का परिचय देना।
3. शुभाशुभ कर्मों के परिणामों को दिखाकर पाठकों को सत्कर्मों या नैतिक आचरण के लिए प्रेरित करना।
4. शरीर की अशुचिता एवं सांसारिक सुखों की नश्वरता को दिखाकर वैराग्य की दिशा में प्रेरित करना।
5. किन्हीं आपवादिक परिस्थितियों में अपवाद मार्ग के सेवन के औचित्य और अनौचित्य को स्पष्ट करना।
6. पूर्वभवों या परवर्तीभवों के सुख-दुःखों की चर्चा के माध्यम से कर्म-सिद्धान्त की पुष्टि करना।
7. दार्शनिक समस्याओं का उपयुक्त दृष्टान्त एवं संवादों के माध्यम से सहज रूप में समाधान प्रस्तुत करना जैसे - आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि के रायपसेनीय के कथानक में राजा के तर्क और केशी द्वारा उनका उत्तर। इसी प्रकार क्रियमाण कृत या अकृत है - इस सम्बन्ध में जमाली का कथानक और उसमें भी साड़ी जलने का प्रसंग।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन कथा-साहित्य बहुउद्देशीय बहु आयामी और बहुभाषी होकर भी मुख्यतः उपदेशात्मक और आध्यात्मिक रहा है। उसका मुख्य उद्देश्य निवृत्ति मार्ग का पोषण ही है। इस प्रकार वह सोद्देश्य और आध्यात्मिक मूल्यों का संस्थापक रहा है और लगभग तीन सहस्राब्दियों से निरन्तर रूप से प्रवहमान है।

-संस्थापक निदेशक प्राच्यविद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर 465001(म.प्र.)

अंग्रेजी-स्तम्भ

Science of Dhovana-Water(2)

Dr. Jeoraj Jain

Q 4. How do the Monks and the Laity adjust themselves with Dhovana or Boiled water of limited shelf-life to take care of its non-livingness endowed with "self-reversal" criteria?

A 4. It has been gathered that below mentioned practices are being followed by the Shwetambar sect of Jains:-

(1) If a suitable weapon is not reused after a definite period, called shelf-life, for any dead and stale mass of water, the water-bodied living-beings can take rebirth in that mass. Thus that water would again become living-mass. For dhovana, this period is 3 Prahar (1 prahar=3 hours) in rainy season. For different situations, different time-limits are carefully prescribed.

Quantity of Solute : While making dhovana, the ash powder is stirred well in the water. To ensure that the quantity of ash used is sufficient, a thumb rule is prescribed for simplicity. For guaranteeing the effectiveness, some excess quantity of ash powder is to be used, so that some of it settles down after its thorough mixing to form colloidal. This thoroughly mixed colloidal ensures proper mixing at molecular level. However, even this carefully prepared dhovana is not to be used for drinking after 5 prahar (15 hours)

Time-period : Monks can accept water from laity after 2nd prahar (6 hours after sun-rise) only after getting the already prepared dhovana (having ash sediment settled down at bottom) stirred well. It should also be not used after 5 prahar

(15 hrs.) After accepting such water, monks further filter it with a piece of cloth. This filtered water is also not used for drinking after 9 hours.

People, who do not have any vow to not to drink water after sun set (chouvihartyāga), but have taken a vow to not to drink any live-water, normally make fresh dhovana in the evening, preferably by rubbing and washing utensils etc. There is no restriction for them to drink this water after the sun-set. The dhovana from morning, which becomes live is not useable in the 2nd prahar of the night (3 hrs after sunset) for those having a vow of not drinking live-water.

Dhovana prepared with inadequate ash powder or washing and rinsing of 1-2 utensils or putting 2/4 cardamom or 2-4 crystals of sugar, might not have become 100% non-living, because its colour, taste and touch sense at microscopic level might not have changed.

(It is known that increase of temperature and humidity promotes the birth of living-beings in water. The shelf-life of non-living water gets reduced by these 2 factors. Because fridge has colder and humid environment, non-livingness cannot remain for a longer period. Hence wise laity does not keep dhovana boiled water in the fridge. Ice itself is living-water. If it is mixed with milk or juices, the liquids would become living body, at least for about 1/2 hour (24 minutes)after it's melting! Thereafter it may be in a state of 'mixed'-being)

All these prevalent and seemingly empirical practices can now be explained scientifically, in the light of the present theory of "A life without DNA and RNA', as propounded above. It becomes amply clear that these practices are not mere dogma, but have proper logic and scientific basis behind it.

Q5. When the wash-solution (dhovana) beomes life-less due to operation/rubbing of foreign particles with it, the dissolved air continues to remain in it. It means, breathing action can continue. Then the assumption to have made the dhovana water life-less seems to be a mere deception.

A 5. Before any answer is given, first let us understand the science behind it. Although the dissolved air continues to remain in dhovana, the micro structure of the Yoni is broken down due to the rubbing and mixing action of the foreign materials, employed for preparing the wash-solution. This makes the live water life-less. Because there is no appreciable change in the quantity of dissolved air, the time period of dhovana to remain non-living does not change with the season. Normally Sadhaks do not use dhovana after 9 hours. It may remain in non-living state for prolonged periods, if regular churning is done.

Q 6. Can the boiled water be reboiled after the expiry of its time-limit to make it again non-living for drinking purpose?

A 6. When the water is made non-living by boiling, its dissolved air is driven out. Alongwith this, the bacteria and other mobile micro-organism contained in it also get burnt and killed. These micro dead bodies continue to remain in it. After a certain time, when some oxygen is absorbed by this water-mass, these bodies start decaying and may even produce bad smell. If this water-mass containing these micro dead bodies, is reboiled after its life span, these bodies may turn (due to boiling) poisonous and become unfit for consumption.

In wash-water, (or mixed water) i.e. Dhovana, the quantity of foreign materials used, determine its life span and reusability. In simple kitchen wash-water, certain food ingredients start decaying faster than the others. This may

render it smelly. But if this water is properly filtered, its life span will be enhanced. However, in preparing 'wash-water' dhovana, normally alkaline foreign materials like ash etc. are used. They prevent the decaying of dead bodies of micro organisms. The heating process, which accelerates the decaying, is also absent here. Hence it remains fit for consumption for longer period.

This period also depends on the quality of the living water used for making dhovana. It should be carefully filtered (with proper cloth piece) before making dhovana. It is known that some types of bacteria do not become dead in Dhovana. They can thrive on the dead bodies of micro organisms at a slow rate. They can start emitting bad smell. This smelly dovana (it also remains as non-living water) should preferably be used for washing etc. rather than for drinking purpose.

Q 7. Does the living water body emit bio-photons?

A 7. As per the recent knowledge, the bio-photons are considered to be coherent-light, which can be radiated from a living being. Under certain circumstances, this light emission has been observed in a special type of water. It seems that these photons get attached to one end of the water-yoni(water cell) in form of somatids, and are emitted from that end.

In such special type of water, normally animate/micro-organisms (Traskaya) do not develop. One of such type is "Grander-water" This water is produced by creating turbulence in its flow in an involutes-shaped vessel, under a strong electromagnetic field. This non-decaying property is also observed in the water from upper Ganges River. These waters, stored in closed vessels, do not support bacteria or mobile micro organisms or extended periods of time. Even after prolonged storage, they were found to be free from mobile organisms. This property needs further study & research.

Q 8. Can dirty water become again live?

A 8. Broadly speaking, dirty water is of two types. One is due to presence of foreign bodies. Due to increase in its quantity and due to development of special type of foreign living beings, this non living water also becomes unfit for human consumption. The other type of water is dirty due to presence of foreign materials. This water can also be unfit for human consumption. Ocean water is live water.

In the background of these facts, it seems that when this dirt is mixed in the water, the water becomes non-living because its yoni and dissolved air etc. are affected adversely. In stale water with less dirt, yonis can again take shape after sometime, making it live. In flowing water, these broken yonis can also join together again in proper shape, with some difficulty, to become live.

Normally, these impurities hinder the formation of hexagonal structures/crystals. However, dirty water, whether dead or alive, is always considered to be unfit for drinking.

In some experiments, it was found that the drinking tap water, which was not so dirty, when stored in a vessel and treated with music and prayers, developed Hexa-Crystals and became alive. If the dirty raw water is treated with chemicals and other processes for making it palatable, it becomes partly dead. But after some time, it should again become alive.

(Continue...)

-Kamani Center, 2nd floor, Bistapur, Jamshedpur-831001

श्रद्धा - सुमन

जोधपुर दुर्ग मेहरानगढ़ में ३० सितम्बर २००८ को अचानक हुई भगदड़ में २१५ युवकों का आकस्मिक निधन हो गया। उन सबके प्रति जिनवाणी पत्रिका की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि। इस हृदयविदारक घटना में घायल हुए युवकों के पूर्ण स्वस्थ होने हेतु शुभकामनाएँ। **-सम्पादक**

Tattva bodha

NAMASKĀRA SŪTRA (3)

Dr. Priyadarshana Jain

The second ***pada*** is ***Namo Siddhāṇam*** and it means obeisance to the ***Siddhas***. As discussed earlier ***Arihantas*** and ***Siddhas*** are the two ***Deva padas. Jainism*** is a pluralistic religion and it believes in the plurality of the souls as well as Gods. ***Jainism*** propounds that all souls are potentially divine and those souls who manifest this talent potential divinity are called the ***Siddhas*** i.e. the perfect ones. They are the disembodied souls in ***Nirvāṇ*** enjoying infinite knowledge, vision, bliss, and power. As they have annihilated the eight types of ***karmas*** they have uprooted the tree of transmigration. Hence in the absence of the cause of ***Karmas*** there is no fruit of rebirth for the liberated souls. They are the accomplished souls and not creator Gods. The place where they ascend to is called ***Siddhālaya***, which is on the tip of the upper most portion of the universe. In this abode there is no birth, old age, disease, death, pain, misery, poverty, ***karma***, body, delusion, ignorance, deprivation, disgust, hunger, thirst, etc. All souls are spiritually alike and the bliss they enjoy is also of the same degree. None is great or small, all are equal, but each one is unique in the state of perfection. The bliss that they enjoy is indescribable and inexpressible. They are bodyless, formless, pure souls. They have accomplished the transcendental state and do not interfere in the worldly affairs as they have conquered desire, delusion, attachment, hatred, etc

Siddhāhood or Godhood of the ***Siddhas*** is neither like the ***Nirvāṇa*** stage of the Buddhist where the candle is blown out and nothing is left, nor that they become united with a supreme cosmic soul. Thus the concept of ***Siddhāhood*** is unique of the ***Jain*** tradition. This state of liberation is the ideal of every self-realized soul. When all bondaged souls become aware of their true nature which is not in essence different from the pure and the perfected ***Siddhas***, they try and exert to manifest this pure divinity. Just as

the tree is latent in the seed, pure ***Siddhāhood*** is latent in all souls, some have manifested this pure nature and others will in course of time.

Jainism says that the entire universe is filled with infinite number of micro and macro organisms. It reveals that even the ***Siddhas*** in their past lives were subject to the endless cycle of birth and death, pain and misery, but now they have removed the ignorance and karmic conditioning and have liberated themselves, and become worthy of veneration. When we bow down to them we ought to remember our pure nature and should exert to manifest that purity latent within. This is the sublime purpose of veneration. As the ***Arhats*** and ***Siddhas*** are beyond attachment and hatred, they are neither going to shower the grace nor they going to get angry if you do not pray to them. But by remembering them and paying obeisance to them we are inspired to exert in the right direction, as a result of which we too can transgress the worldly ocean of birth and death.Just by presenting ourselves before them we realize ourselves and eventually attain release from transmigration.

The spiritual bliss that the ***Arhats*** and ***Siddhas*** enjoy is not of varying degree, but the ***Arhats*** have destroyed the four destructive types of ***karmas*** and not eight like the ***Siddhas***. The ***Arhats*** move in this world guiding mankind for spiritual development as long as their age-determining ***karmas*** are not exhausted. Once they are close to annihilating the ***karmas*** that have kept them bound physically, they give up all physical, and verbal activities and ascend to ***Mokṣa***. The root word of ***Mokṣa*** is "munch" which means to be free. Thus the ***Arhats*** and ***Siddhas*** are free from birth and death, old age and disease, ignorance and delusion, pain and misery. According to ***Jainism*** and other religious traditions ***Mokṣa*** is the ***summum bonum*** of life and it can be achieved by sure means. As long as one does not exert to manifest this transcendental self which is beyond name and form, one cannot experience the ***Satchidānanda Svarupa***, which the ***Arhats*** and ***Siddhas*** experience and enjoy.

The third ***pada*** is ***Namo Ayariyāṇam*** and it means

obeisance to the *ācāryas*. The *ācāryas* are the ascetics devoted to the path of emancipation; moreover they are the heads of the congregation. They are endowed with numerous virtues and are elevated by the five great vows. They guide the members of the four-fold *Jaina* congregation, viz. the monks (*sādhus*), nuns (*sādhvis*), laymen (*Śrāvakas*) and laywomen (*Śrāvikas*). They are the messengers of the **Arhats** preaching the message of the *Tīrthaṅkaras* and practising the same in thought, word and deed. They are like the kindly light guiding mankind and are the torchbearers of spirituality. They practise pure conduct, and their life is the message to humanity to exert in non-violence, self-restraint and austerity. As the head of the congregation, their responsibility to lead other members of the congregation is immense. As they lead an awakened life they are capable of awakening others and hence worthy of veneration. As it is said "*Nāṇassa Sāramāyāro*" i.e. the essence of all knowledge is practice. Without practice, knowledge is nothing but a burden, hence when *Namo āyariyānam* is chanted, one is reminded to exert for self-realization and perfection, which is possible through the practice of Right-faith, Right-knowledge and Right-conduct.

(Continue)

विचार - मोती

१. सुख को ऐसे भोगो कि नये सुख का जन्म न हो सके। दुःख को ऐसे भोगो कि नये दुःख का जन्म न हो सके।

२. दुःख को स्वीकार करोगे तो सुख स्वतः आयेगा।

३. सुख आत्मबल को गिराने वाला है।

४. लज्जा निवारण के लिये कपड़े पहनने चाहिये, किन्तु शृंगार के लिए कपड़े पहनना पाप है।

५. राजनीति कहती है कि समाज को बदलो, धर्मनीति कहती है कि समझ को बदलो।

६. धर्म कहता है कि परिस्थिति को बदलने से शान्ति नहीं, अपितु मनःस्थिति को बदलने से शान्ति होगी।

- संकलन : डॉ. श्वेता जैन

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः ४५)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(आहारक शरीर)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा-आहारक शरीर किसे कहते हैं?

समाधान-चतुर्दश पूर्वधारी प्रमत्त मुनि को जब पूर्वों के ज्ञान में संशयादि उत्पन्न हो जाये, अथवा स्वयं का उपयोग नहीं लग पाये तब अपने शरीर में से एक हाथ का पुतला निकालकर तीर्थंकर भगवान के पास भेजकर समाधान प्राप्त करते हैं, उस लब्धिजन्य शरीर को आहारक शरीर कहते हैं।

जिज्ञासा-आहारक शरीर की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

समाधान-तत्त्वार्थ सूत्र अ. 2/49 में कहा है-

"शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव।" अर्थात्

1. आहारक शरीर शुभ पुद्गलों से निर्मित होने से अत्यधिक मनोज्ञ होता है।
2. विशुद्ध प्रयोजन से इसका निर्माण होने से यह विशुद्ध होता है।
3. यह न किसी को व्याघात पहुँचाता है और न किसी भी पदार्थ से आहत (बाधित) होता है।
4. इसका प्रमाण जघन्य कुछ कम एक हाथ तथा उत्कृष्ट एक हाथ का होता है।
5. इसका आकार समचतुरस्र संस्थान होता है।
6. यह कर्मभूमिज गर्भज सम्यग्दृष्टि ऋद्धि प्राप्त प्रमत्त श्रमण को ही होता है।
7. यह शरीर जघन्य पृथक्त्व वर्ष (9 वर्ष) तथा उत्कृष्ट एक करोड़

पूर्व वर्ष की आयु वाले प्रमत्त श्रमणों को ही होता है।

जिज्ञासा-आहारक शरीर कितने कारणों से बनाया जाता है?

समाधान-प्रज्ञापना सूत्र के 21 वें शरीर पद की टीका में उल्लेख मिलता है कि आहारक शरीर चार कारणों से बनाया जाता है-

1. चौदह पूर्व चितारते समय स्वयं को सूक्ष्म तत्त्वों के विषय में सन्देह उत्पन्न होने पर।
2. वादी के द्वारा प्रश्न पूछने पर सही उपयोग नहीं लगने पर।
3. तीर्थंकर भगवान् की ऋद्धि देखने का कुतूहल(इच्छा) उत्पन्न होने पर।
4. जीवदया का प्रसंग होने पर।

जिज्ञासा-क्या सभी चतुर्दश पूर्वधारी मुनियों के आहारक शरीर होता है?

समाधान-नहीं, सभी चतुर्दश पूर्वधारी श्रमणों के आहारक शरीर नहीं होता है। कोई-कोई चतुर्दश पूर्वधारी श्रमणों को यह शरीर विशिष्ट लब्धि से प्राप्त होता है।

तत्त्वार्थ सूत्र की हारिभद्रीय वृत्ति में उल्लेख मिलता है कि चतुर्दश पूर्वी के दो भेद हैं- 1. भिन्नाक्षर, 2. अभिन्नाक्षर।

सर्वाक्षर सन्निपाती को भिन्नाक्षर कहा है। इसे ही उत्कृष्ट श्रुतज्ञानी, श्रुतकेवली कहा जाता है। इसे श्रुतज्ञान का सर्वोत्कृष्ट पर्याय अनुभव हो जाने से संशय नहीं रहता है। ज्ञान की अत्यधिक गहराई के कारण भगवान् को देखने अथवा भगवान् की ऋद्धि को देखने का कुतूहल भी नहीं रहता। अतः ये आहारक शरीर का निर्माण करते ही नहीं हैं।

जो अभिन्नाक्षर चतुर्दश पूर्वी होते हैं, वे मूल सूत्रों को जानने वाले अथवा उनके शब्दानुगामी सामान्य अर्थ को जानने वाले होने से, अनुयोग सहित विस्तृत व्याख्या के जानकार नहीं होने से संशयादि उत्पन्न हो सकता है। कुतूहल वृत्ति भी पूरी तरह नष्ट नहीं होने से ये आहारक शरीर का निर्माण करते हैं।

जिज्ञासा-भिन्नाक्षर तथा अभिन्नाक्षर का क्या अर्थ समझना चाहिए?

समाधान-प्रत्येक अक्षर, शब्द, वाक्यादि के आगम में अनन्त गम, पर्याय बतलाये हैं। उन गम-पर्यायों की जानकारी स्वरूप अक्षर को भेदित अर्थात् चूरा-चूरा कर देने से भिन्नाक्षर को पूर्ण श्रुतज्ञानी कहा जाता है।

अभिन्नाक्षर अर्थात् अक्षर का भेदन किया हुआ नहीं होने से, अक्षरों-शब्दों-वाक्यों में रहे हुए सभी अर्थों को नहीं जान पाता है। इसलिये इसे संशयादि उत्पन्न हो सकते हैं।

भिन्नाक्षर सम्पूर्ण चतुर्दश पूर्वों का ज्ञाता होता है, जबकि अभिन्नाक्षर तेरह पूर्वो का पूर्ण ज्ञाता तथा चौदहवें पूर्व का अपूर्ण ज्ञाता भी हो सकता है।

जिज्ञासा-आहारक लब्धि की प्राप्ति किसे होती है?

समाधान-सातवें और आठवें गुणस्थानवर्ती ऋद्धिप्राप्त अप्रमत्त चतुर्दश पूर्वी श्रमण को आहारक लब्धि विशिष्ट क्षयोपशम होने पर प्राप्त होती है। कर्मग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि सातवें तथा आठवें गुणस्थान के छठे भाग तक ही आहारक शरीर का बन्ध होता है। साध्वियों में पूर्वज्ञान संभव नहीं होने से उन्हें यह लब्धि प्राप्त नहीं हो पाती।

यह ज्ञातव्य है कि जो-जो लब्धियाँ पूर्व ज्ञान पर आधारित होती हैं, वे लब्धियाँ साध्विओं को प्राप्त नहीं हो पाती। जैसे-पुलाक लब्धि, परिहारविशुद्धि चारित्र, आहारक लब्धि आदि।

आहारक लब्धि की प्राप्ति अप्रमत्त अवस्था में होती है जबकि आहारक लब्धि का प्रयोग प्रमत्त अवस्था में होता है।

जिज्ञासा-आहारक शरीर कितनी बार बनाया जा सकता है?

समाधान-प्रज्ञापना सूत्र के समुद्घात पद से स्पष्ट होता है कि आहारक शरीर एक जीव द्वारा एक भव में अधिकतम दो बार तथा अनेक भवों में अधिकतम चार बार बनाया जा सकता है।

आहारक शरीर अधिकतम तीन भवों में बनाया जा सकता

है, इससे अधिक भवों में नहीं।

यह उल्लेखनीय है कि तीन बार आहारक शरीर बनाये हुए जीव निगोद में अनन्त तथा शेष स्थानों (नारकी, देवता,तिर्यञ्च आदि)में असंख्यात मिल जाते हैं। किन्तु चार बार जिन्होंने आहारक शरीर बना लिया, ऐसे जीव मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं मिलते। इससे स्पष्ट होता है कि चार बार आहारक शरीर बनाने वाला साधु उसी भव में सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो जाता है।

जिज्ञासा-आहारक शरीर बनाते समय श्रमणों में कौनसा गुणस्थान रहता है?

समाधान-कर्मग्रन्थ, पंचसंग्रह आदि में उल्लेख है कि आहारक शरीर बनाने हेतु आहारक लब्धि का प्रयोग छठे प्रमत्त संयत गुणस्थान में प्रारम्भ होता है किन्तु बीच में कुछ समयों के लिये अप्रमत्तता भी आ सकती है। अतः व्याख्या ग्रन्थों में छठा व सातवाँ दो गुणस्थान माने हैं।

किन्तु प्रज्ञापना सूत्र के 21 वें पद में उल्लेख है कि सभी प्रकार की लब्धि का प्रयोग प्रमाद अवस्था में ही होता है। अतः आगमानुसार आहारक शरीर बनाते समय छठा गुणस्थान ही मानना उचित प्रतीत होता है।

जिज्ञासा-आहारक शरीर बनाते समय जो एक हाथ का पुतला निकलता है, वह किनके पास जाता है?

समाधान-नजदीक के क्षेत्र में रहे हुए तीर्थंकर भगवान् अथवा केवली भगवान् के पास जाता है। ऋद्धि दर्शन हेतु तो पुतला तीर्थंकर भगवान् के पास ही जाता है, किन्तु स्वयं की शंका होने पर तथा वादी के प्रश्न पूछने पर उपयोग नहीं लगने पर समाधान लेने तीर्थंकर अथवा केवली दोनों में से किसी के भी पास जा सकता है।

जिज्ञासा-जीवदया के निमित्त से आहारक शरीर किस प्रकार बनाया जाता है?

समाधान-जब कोई अन्यायी, क्रूर, हिंसक प्रवृत्ति का राजा/शासक हो, वह लोगों के समझाने पर भी हिंसक प्रवृत्ति- नरबलि, पशुबलि आदि बन्द नहीं करे तो आहारक लब्धिवन्त श्रमण अपने शरीर में से एक

हाथ का पुतला निकालकर उस शासक के क्षेत्र में भेजता है। वह पुतला जोर-जोर से आकाशवाणी करता है, हिंसा के दुष्परिणामों को बतलाता है, जिसे सुनकर वह शासक हिंसा जन्य प्रवृत्ति बन्द कर देता है।

जिज्ञासा-आहारक शरीर के रूप में जो पुतला प्रमत्त संयत मुनि निकालते हैं वे कहाँ से निकालते हैं?

समाधान-प्रमत्त संयत मुनि जो आहारक शरीर के रूप में पुतला निकालते हैं, वे अपने शरीर के उत्तम अंग - मस्तिष्क से निकालते हैं। आहारक शरीर में मुनिराज के असंख्यात आत्म-प्रदेश रहते हैं। असंख्यात ही आत्मप्रदेश मुनिराज के औदारिक शरीर में रहते हैं तथा जब आहारक शरीर तीर्थंकर भगवान् के पास जाता है तब औदारिक व आहारक शरीर इन दोनों के बीच में भी असंख्यात आत्म-प्रदेशों का सम्बन्ध रहता है।

जिज्ञासा-क्या आहारक लब्धि के प्रयोग के समयों में जीव के आगामी भव का आयुष्य बन्ध हो सकता है?

समाधान-आहारक लब्धि के प्रयोग में जब तक आहारक मिश्र काय योग होता है, तब तक आयुबन्ध नहीं होता। किन्तु आहारक काय योग में आयुबन्ध हो सकता है, क्योंकि द्वितीय कर्मग्रन्थ में आहारक काय योग में देवायु का बन्ध माना है।

जिज्ञासा-क्या आहारक लब्धि के प्रयोग(आहारक शरीर का निर्माण करते)के समयों में जीव काल कर सकता है?

समाधान-आहारक लब्धि के प्रयोग के समय जीव काल नहीं कर सकता। क्योंकि भगवती सूत्र में सर्वबन्ध-देशबन्ध के अधिकार में आहारक शरीर के देशबन्ध की स्थिति जघन्य-उत्कृष्ट, अन्तर्मुहूर्त ही बतलायी है। जघन्य स्थिति एक समय नहीं बतलायी। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

चिन्तन

अणुबम और अहिंसा

श्री लालचन्द जैन

२ अक्टूबर को महात्मा गाँधी की जयन्ती पर उनके अहिंसा विषयक विचारों को प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। उनके ये विचार जैन विचारधारा के सर्वथा अनुकूल हैं। 'हरिजन बंधु' में प्रकाशित इन विचारों का गुजराती से हिन्दी में अनुवाद जिनवाणी के लेखक एवं स्वाध्यायी श्री लालचन्द जी जैन, जोधपुर ने अपने देहावसान के पूर्व हमें प्रेषित किया था। -सम्पादक

मेरे अमेरिकन मित्र कहते हैं कि अणुबम द्वारा अहिंसा की सिद्धि होगी। उनका कथन है कि अणुबम की संहारक शक्ति से डरकर संसार हिंसा से घृणा करने लगेगा और इस प्रकार संसार में अहिंसा का अवतरण होगा। थोड़े समय के लिये भले ही संसार हिंसा के मार्ग से घृणा करने लगे, किन्तु यह घृणा स्थायी नहीं हो सकती। जैसे कोई व्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार की मिठाई ठूँस-ठूँस कर खाये तो उससे अघा जाये और वह मिठाई खाना छोड़ दे, किंतु कुछ समय बाद जब पुनः मिठाई खाने का मन हो जाय तो वह दुगुने उत्साह से मिठाई खाने लगेगा। इसी प्रकार अणुबम की संहारक शक्ति से डर कर संसार हिंसा का तिरस्कार करने के लिये प्रेरित हो सकता है, किन्तु कुछ समय बाद उस तिरस्कार की प्रेरणा फीकी पड़ जाने पर वह फिर से दुगुने उत्साह से हिंसा के रास्ते पर आ जायेगा।

कई बार अशुभ में से भी शुभ की उत्पत्ति होती है, किन्तु यह प्रकृति की योजना है, मनुष्य की नहीं। मनुष्य का तो यही अनुभव है कि जैसे शुभ में से शुभ उत्पन्न होता है, वैसे ही अशुभ में से अशुभ ही उत्पन्न होता है।

अमेरिका के वैज्ञानिक और सैन्य अधिकारियों ने जिस अणुशक्ति का उपयोग संहार के लिये किया, उसी को अन्य वैज्ञानिक मानवहित के कार्य में भी प्रयुक्त कर सकते हैं। यह अवश्य संभव है, किंतु मेरे अमेरिकन मित्रों का कथन ऐसा सीधा सादा नहीं है। उनका अर्थ ऐसा सरल होता तो कहना ही क्या? परन्तु वे इतने भोले नहीं हैं। आतंकवादी जिस अग्नि को अपने पापी आशय को पूरा करने के लिये प्रज्वलित करते हैं, उसी अग्नि का उपयोग महिलाएँ अपने रसोईघर में मानवता के

पोषण के लिये करती हैं।

मेरे अनुभव के अनुसार मनुष्यों ने जिन सुंदर भावनाओं को उत्पन्न किया है, उन्हें अणुबम ने भोंथरा कर दिया है। युद्ध के लिये जो निर्णय स्वीकृत हैं, अणुबम के प्रयोग से उन पर अमल नहीं किया जा सकता। युद्ध के सच्चे स्वरूप को आज हम जान गये हैं। युद्ध पशुबल के सिवाय किसी नियम को नहीं जानता। अणुबम से मित्रराज्यों के शस्त्रों पर आसान विजय प्राप्त हुई, किन्तु भले ही थोड़े समय के लिये जापान की प्रजा का नाश हुआ हो, किन्तु उसके संहारक परिणाम से प्रजा की आत्मा पर क्या बीती, उसे समझने का समय अभी बीता नहीं है। प्रकृति के बलों का कार्य गूढ और रहस्यमय होता है। ऐसे शस्त्रों के प्रयोग का जो परिणाम आया है, उसी से अभी तक अलभ्य परिणामों का अनुमान किया जा सकता है। गुलाम को पिंजरे में डालने के लिये पहले स्वयं को पिंजरे में जाना पड़ता है। कोई ऐसा न समझे कि मैं जापान का पक्ष लेकर उसकी घृणित महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये किये गये अत्याचारों का बचाव कर रहा हूँ। दोनों पक्षों में जो अंतर है, वह केवल प्रमाण का है। मैं ऐसा मानता हूँ कि जापान का लोभ दोनों पक्षों से अधिक था, किन्तु कम लोभ वाले पक्ष को जापान के नगरों पर अणुबम डाल कर निष्ठुरता से स्त्रियों, बच्चों और निरपराध मनुष्यों को मारने का अधिकार किसने दे दिया?

अणुबम की इस अत्यन्त करुण घटना से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हिंसा से प्रतिहिंसा का नाश नहीं होता। इस अणुबम की संहारक शक्ति के सामने अधिक विनाशक बम बनेंगे। लोगों को हिंसा से बचाने के लिये अहिंसा के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। द्वेष को मात्र प्रेम से ही जीता जा सकता है। द्वेष के सामने द्वेष करने से द्वेष का विस्तार और उसकी गहनता बढ़ती है। आज तक मैंने जो बात कही है और अपनी शक्ति अनुसार उस पर अमल किया है, वही बात मैं पुनः कह रहा हूँ, किन्तु यह नया कथन नहीं है, सृष्टि की रचना के समान सत्य है। मैं बालकों की पुस्तकों में लिखे सिद्धान्तों को मात्र कह कर नहीं बताता, मेरी रग-रग में जिसका अनुभव होता है, वही बात मैं बार-बार कहता हूँ।

जीवन के अनेक क्षेत्रों में परीक्षित सत्य पर मेरी श्रद्धा अधिक दृढ़ और समृद्ध होती गई और अन्य मित्रों के अनुभव से उसका समर्थन ही हुआ। मेरे द्वारा कथित सत्य सभी सिद्धान्तों के भीतर बसा हुआ सत्य है और एक मात्र मनुष्य ही उसका पालन कर सकता है। मैक्समूलर ने वर्षों पहले कहा था कि जब तक सत्य के

प्रति अश्रद्धा रखने वाले मनुष्य इस विश्व में रहेंगे, तब तक उस सत्य का बार-बार उच्चारण करते रहना पड़ेगा। मैं भी इस कथन से सहमत हूँ, इसीलिये बार-बार कहता हूँ कि अणुबम की संहारक शक्ति से अंहिसा का उद्भव कभी नहीं हो सकता।

-10/595, नन्दनवन, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर(राज.)

मिथ्या संसार

कस्तूर चंद जैन 'अष्टम'

मोह के ही जाल में संसार सारा है फँसा।
आसक्ति स्वार्थपूर्ण है, इससे न कोई है बचा।।
कहते हैं सबसे प्रिय है बेटा, किन्तु झूठी बात है।
पत्नी है उससे भी बढ़कर, यह अनोखी बात है।।
गर्भ में यदि पुत्र हो, असाध्य पत्नी हो गई।
ऑपरेशन से बचेगा, एक दोनों में कोई।।
पूँछते हैं डॉक्टर, किसको बचाना चाहते।
पत्नी ही जीवित रहे, हम पुत्र को नहीं चाहते।।
वही प्रियतमा एक कमरे में, हमारे साथ है।
अर्द्धांगिनी जन्मान्तरों से जो निभाती साथ है।।
यदि आग कमरे में लगी, हम छोड़ उसको भागते।
स्वार्थमय बस प्राण रक्षा, स्वयं की ही चाहते।।
पत्नी मरे, जलकर गिरे, परवाह किंचित् है नहीं।
यह स्वार्थमय संसार है, अभीप्सित स्वार्थ में सभी।।
खुद के ही तन का अंग, विकृत रोग से यदि हो गया।
उसका ज़हर फैलेगा, हमसे चिकित्सक ने कह दिया।।
विष फैल पाया यदि तो फिर आप बच सकते नहीं।
अंग कटवाना पड़ेगा, आप बच सकते तभी।।
तत्काल कहते काट दीजिए, अंग श्रीमान् हमारा।
इस संकुचित संसार में, निज प्राण ही है पियारा।।
मरना न कोई चाहता, ध्रुव सत्य मरना पड़ेगा।
आसक्ति मोह, ममत्व, स्वार्थ, सब यहीं पर रहेगा।।

-नृसिंह कॉलोनी, वार्ड 18, खेरली गंज-321606, जिला-अलवर(राज.)

कविता

जिनवाणी : स्वाध्याय की क्रांति

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'

जिसके पठन से पाठकों को, प्राप्त होती है शांति।
'जिनवाणी' पत्रिका लाई, स्वाध्याय की क्रांति।।

जोधपुर* की धरती से, इस क्रांति का शंखनाद हुआ,
डाक टिकट के पंख लगाकर, उड़ना इसको याद हुआ।
हर गाँव-शहर प्रतिमाह पहुँचना, अच्छी तरह जो जानती,
'जिनवाणी' पत्रिका लाई, स्वाध्याय की क्रांति।।१।।

संपादक के ज्ञान की जिसमें, स्पष्ट गहराई झलकती है,
तभी साधारण कागज पर, असाधारण बातें छपती हैं।
परिभ्रमण से थके जीव को, जो दे सदा विश्रांति,
'जिनवाणी' पत्रिका लाई, स्वाध्याय की क्रांति।।२।।

सम्यग् दर्शन-ज्ञान-चारित्र का, करती सदा प्रचार,
साधु और श्रावक का हमको, बतलाती आचार।
अनुसृत रहती शास्त्रों से, नहीं मिथ्या कभी बखानती,
'जिनवाणी' पत्रिका लाई, स्वाध्याय की क्रांति।।३।।

स्वयं, स्वयं को पहचानो, क्यों लझ रहे हो पर में?
वरना शांति नहीं मिलेगी, जंगल और नगर में।
सत्य स्थापित करके जो, सदा मिटाए भ्रांति,
'जिनवाणी' पत्रिका लाई, स्वाध्याय की क्रांति।।४।।

'जिनवाणी' को पढ़कर मैंने, जो अब तक है सीखा,
अनुभव वह इन पंक्तियों में, 'प्रेक्षक' ने है लिखा।
प्रगति सदा करे पत्रिका, फैले यश और क्रांति,
'जिनवाणी' पत्रिका लाई, स्वाध्याय की क्रांति।।५।।

-'समर्थ भवन' खींचन-342308, जिला-जोधपुर (जोधपुर)

धारावाहिक (क्रमशः५३)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- जम्बूकुमार की आठवीं पत्नी जेतश्री ने मरुदेवी माता का उदाहरण देते हुए समझाया कि माता-पिता की सेवा करते हुए मन को निर्मल कर मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, साधुवेश धारण करना आवश्यक नहीं है। आपने धर्म के मर्म को समझने का प्रयास नहीं किया। आप धर्म के नाम पर अनुचित व्यवहार कर रहे हैं। आप कृपा कर यह बताइए कि आप हमें किस कारण त्याग रहे हैं। क्या हमने अपने स्त्री कर्तव्य पूरे नहीं किये? अब आगे...

जीवनाधार! हमें स्त्रियों के कर्त्तव्य पालन करने का अवसर ही नहीं मिल पाया है। मगर विश्वास कीजिए प्रियतम! हम लोग इनका पालन करके सब प्रकार से आपको सुखी बनाने का प्रयत्न करेंगी। आपकी रुचि एवं अभिलाषा के प्रतिकूल व्यवहार जीवन में हमसे न होगा। फिर भी यदि कोई अपराध हम सबसे या किसी से बन पड़ा हो तो कृपा कर उसे प्रगट कीजिए। हम उसका यथोचित प्रायश्चित्त करके आपको संतोष प्रदान करेंगी।

यदि ऐसा नहीं हुआ है और आपने हम सबको निरपराध एवं निर्दोष समझा है तो फिर हमारा त्याग क्यों कर रहे हैं? इस तरह हम हर्गिज आपको न जाने देंगी। देखें आप, कैसे चले जाते हैं? हम आपके चरणों में लेट जायेंगी। स्मरण रखिए, हम आपकी अर्द्धांगिनी हैं। आपके ऊपर हमारा पूर्ण अधिकार है। आप हमारी स्वीकृति लिए बिना कदापि दीक्षा धारण न कर सकेंगे।

इतना ही नहीं, यदि आप फिर भी हमारी प्रार्थना स्वीकार न करेंगे तो बात यहीं समाप्त न होगी। हम भी श्री सुधर्मा के पास जाएंगी और उनसे प्रार्थना करेंगी कि- आचार्य महाराज! आप वीर संघ के स्वामी हैं। आपके व्यवहार पर धर्म की प्रतिष्ठा और अप्रितष्ठा निर्भर है। यदि आप हमारे पतिदेव को दीक्षा देंगे तो हमारा सौभाग्य- हमारा सर्वस्व हमसे छिन जाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है

कि करुणा के सागर श्री सुधर्मा स्वामी कदापि हमारे ऊपर डाका न डालेंगे और आपको हर्गिज दीक्षा न देंगे! पर ऐसा करने में न आपकी प्रतिष्ठा रहेगी और न हमारी प्रतिष्ठा रहेगी। पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों में तीसरे व्यक्ति को खींच लेना उचित नहीं है, मगर जब आप किसी भी प्रकार न मानेंगे तो हमारे पास और उपाय ही क्या है? अतएव आप खूब गहरा सोच-विचार लीजिए। उसके बाद ही अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कीजिए।

एक बात और मैं स्पष्ट कर देना चाहती हूँ। मैंने भी धर्म का थोड़ा सा स्वरूप गुरु महाराज के अनुग्रह से सीखा है। मैं धर्म की विराधिनी नहीं हूँ आपको सदा के लिए दीक्षा को भी मना नहीं करती। मेरी प्रार्थना तो कुछ दिनों तक ही गृहस्थ अवस्था में रहने के लिए है। मैं समझती हूँ कि आपको हमारी प्रार्थना स्वीकार करने में किसी प्रकार की आनाकानी नहीं होगी।

प्रभो! बस, अब मुस्करा कर कह तो दीजिए कि अच्छा, तुम्हारी बात मुझे मंजूर है। आपसे ये शब्द सुनकर हम निहाल हो जाएगी। अपने जीवन को, अपने यौवन को और अपने प्रयत्न को हम सार्थक समझेंगी।

स्वामिन्! प्राणों के प्राण यदि मुझसे कोई बात उत्तेजना के कारण अनुचित निकल गई हो तो कृपा करके क्षमा प्रदान कीजिए और हमारी अभ्यर्थना को अंगीकार करके मुरझाए हुए हमारे चेहरों को प्रफुल्लित कीजिए।

जम्बूकुमार की नवविवाहिता पत्नियों ने उन्हें अपने स्नेह के प्रबल पाश में बांधने के लिए कोई प्रयत्न शेष नहीं रक्खा, मगर जम्बूकुमार पर वैराग्य का जो पक्का रंग चढ़ गया था, वह दूर न हो सका और वे उस पास में आबद्ध होने के लिए किसी भी प्रकार तैयार न हुए। सात स्त्रियों को वे पहले ही प्रतिबोध दे चुके थे। अब सिर्फ एक पत्नी अवशिष्ट रही थी। उसने भरसक प्रयत्न किया कि जम्बूकुमार किसी प्रकार संकल्प से च्युत हो जाएं, पर उसका प्रयत्न निष्फल हुआ। उसका विनीत निवेदन, धमकी, फुसलाहट कुछ भी काम नहीं आ सके। जम्बूकुमार ने अत्यन्त शान्ति के साथ उसकी सब बातें सुनीं। जब वह अपने समस्त हार्दिक उद्‌गारों को वाचनिक रूप दे चुकी और मौन हो गई, तब जम्बूकुमार ने कहा-

भद्रे! तुम कहती हो कि हम ऐरी-गेरी कन्याएँ नहीं हैं, हम कुलीन हैं, इत्यादि। सो निस्संदेह तुम उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो। पर उत्तम कुल उत्तम व्यवहार पर निर्भर है। उत्तम व्यवहार उसी को कहते हैं जिससे स्व-पर का कल्याण हो। अतएव तुम्हें अपनी कुलीनता का विचार है तो ऐसे कार्य करो जिससे तुम्हारी आत्मा का कल्याण हो और साथ ही अन्य प्राणियों की भलाई हो। ऐसा व्यवहार धर्म की आराधना ही हो सकता है। इसलिए तुम्हें भी धर्म की आराधना में दत्तचित्त होना चाहिए।

संसार का प्रत्येक प्राणी भोगोपभोगों की अभिलाषा करता है और भोगोपभोगों में रचा-पचा रहकर अपने बहूमुल्य जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षण वृथा गंवा देता है। उच्च कुल के लोग भी यदि इसी प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर दें तो उनमें नीच कुल वाले से क्या भेद रहेगा।

तुम कहती हो कि मैंने तुम्हारी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी और अब तुम्हें त्यागने जा रहा हूँ अतएव यह प्रतिज्ञा का विरोध है। पर कल्याणी! मैं पहले बता चुका हूँ कि संसार में जन्म-मरण-जरा, आधि-व्याधि आदि का संकट आने पर कोई भी किसी की रक्षा नहीं कर सकता। यदि इन सब संकटों से छूटना है तो ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे जन्म-मरण आदि उत्पन्न ही न होने पावे। जन्म-मरण आदि कर्म के उदय से उत्पन्न होने वाली पर्यायें हैं और जब कर्मों का सर्वथा अभाव हो जाता है तब जन्म पर्यायों का भी अभाव हो जाता है। तात्पर्य यह है कि समस्त कर्मों का संपूर्ण अभाव हुए बिना आत्मा की रक्षा नहीं हो सकती। मैंने तुम्हारी रक्षा करने की प्रतिज्ञा की है अतएव मेरा यह भी कर्त्तव्य है कि तुम्हें रक्षा का सर्वोत्तम उपाय बताऊँ। बस उपाय बताना और उसके अनुसार चलने की प्रेरणा करना ही मेरे अधीन है। उस पर चलना न चलना तुम्हारे वश की बात है। इसी कारण मैं तुम्हें रक्षा का उपाय बता रहा हूँ और इस प्रकार की हुई प्रतिज्ञा का पालन कर रहा हूँ। मेरे द्वारा प्रदर्शित उपायों के सिवाय स्थायी सुरक्षा का और कोई उपाय नहीं है। अतएव प्रतिज्ञा-विरोध का दोष मुझमें नहीं आता।

प्रिये! अप्रतिष्ठा का भय करना उचित है, पर उस भय की भी एक

सीमा होती है। संसार में सब प्रकार के मनुष्य हैं। एक आदमी चाहे जितना अच्छा कार्य करे फिर भी दुर्जन लोग अपने हृदय में रही हुई द्वेष की भावना से प्रेरित होकर उसमें भी कोई न कोई दोष निकालने का प्रयत्न करते हैं। यदि थोड़ा-बहुत दोष का अंश उनके हाथ लग गया तब तो कहना ही क्या है? दरिद्र को खजाना मिलने पर जैसी प्रसन्नता का अनुभव उसे होता है उसी प्रकार दुर्जन को दूसरे का दोष पाकर असीम आह्लाद होता है। कदाचित् उन्हें दोष न मिले तो उन्हें बड़ी निराशा होती है और वे किसी प्रकार दोष का उद्भावन कर ही लेते हैं। ऐसे दुर्जनों को किसी का सद्गुण नज़र नहीं आता। वे दोषदृष्टि होते हैं अतएव उनके भय से किसी कार्य को आरम्भ न करना बुद्धिमत्ता नहीं है। जो कार्य वस्तुतः नैतिक या धार्मिक दृष्टि से हेय है, जिससे आत्मा का अकल्याण होता है या संसार को हानि पहुँचती है ऐसा कार्य करने से सत्पुरुषों की दृष्टि में भी मनुष्य बुरा समझा जाता है। इससे सत्पुरुषों में प्रतिष्ठा का भंग होता है। प्रतिष्ठा भंग का यही रूप भयंकर है। इसी से मनुष्य को डरना चाहिए। अपनी आत्मा जिस कार्य को पूर्ण निर्दोष समझती है और शिष्ट एवं धार्मिक पुरुष जिसे हेय न समझ कर उपादेय समझते हैं उस कार्य के करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

दीक्षा ग्रहण करना धार्मिक कृत्य है। अनादि काल से बड़े-बड़े पूज्य पुरुष दीक्षा ग्रहण करते आ रहे हैं। तब मैं भी यदि दीक्षा ग्रहण करूँ तो इसमें बदनामी का क्या कारण है? फिर भी यदि कोई बदनामी करना चाहे तो उसकी इच्छा। इससे हमारा क्या बिगाड़ होगा? बिगाड़ तो उसी निन्दक का होगा। अतएव ऐसी बदनामी से डरने वाला कायर पुरुष मैं नहीं हूँ। (क्रमशः)

आलोक पर्व दीपावली

बालकों एवं उनके अभिभावकों से निवेदन है कि वे दीपावली पर आतिशबाजी से बचें। यह ज्ञान का आलोक पर्व है। इसे तप एवं साधना के द्वारा आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करें।

–सम्पादक

उपन्यास (१२)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- जंगल से लाये हुए नवजात शिशु को सोमदत्त मामा बनकर पालने लगा। अब उसको मन बहलाने के लिए एक खिलौना मिल गया। एक रात्रि शिशु जब अत्यधिक रुदन कर रहा था तब वह उच्च स्वरों में लोरी सुनाने लगा, पिछवाड़े में ही सजा काट रही निर्मला ने अपने भाई के स्वर को सुना तो उसका दिल तड़फ उठा। उसने दासी के माध्यम से अपनी बात सोमू तक पहुँचाई। बहन का संदेश पाकर वह बहुत खुश हुआ और रात्रि में मिलने की सूचना दासी द्वारा प्रेषित की। जैसे-तैसे दोनों ने दिन का समय पूरा किया, रात्रि के प्रथम प्रहर में मिले और अपनी-अपनी आप बीती सुनाई। भाई ने उलाहना देते हुए कहा-" तुम तो रानी बन गई, इसलिए तुम्हें मेरी याद नहीं आई होगी"। यह सुनकर.....

निर्मला का दिल टीस उठा-"कैसी रानी हूँ मैं। मन में आया भाई को अपनी दशा बता दूँ, लेकिन उसने अपने भाई को अपनी पीड़ा सुनाकर दुःखी करना उचित न समझा।" बात को मोड़ दिया- "तू यह किसके बच्चे को लोरी सुनाकर चुप करा रहा था ?"

सोमदत्त ने बताया- "बहन ! यह बच्चा मुझे वन में एक वृक्ष के नीचे मिला था। इसकी शक्ल-सूरत बिल्कुल तुमसे मिलती है। मैंने इसे उठा लिया। अब इसका पालन-पोषण कर रहा हूँ।"

"यह बच्चा तुझे कितने दिन पहले मिला था ?" निर्मला ने उत्सुकतावश सोमदत्त से पूछ ही लिया।

"छह महीने हो गए। अब तो मैंने इससे मामा का रिश्ता जोड़ लिया है। यह मेरा भानजा है और मैं इसका मामा।" पुलक में भरकर सोमदत्त ने बताया-"बहन ! अभी रात का अँधेरा है। तू देख नहीं सकती। यदि देखेगी तो तू भी इसे अपना ही पुत्र मानेगी।"

निर्मला के दिमाग में बिजली-सी कौंधी। मेरे पुत्र हुए भी छह महीने ही हुए हैं। अवश्य ही यह मेरा पुत्र है। किसी ने षड्यन्त्र करके मेरी बगल में कुत्ते का पिल्ला रखवा दिया होगा। पुत्र के जीवित रहने की सूचना का हर्ष और उससे न मिल पाने की पीड़ा दोनों भाव एक साथ उमड़ आये। उसका मातृत्व रो उठा। अधिक बात करने की दशा न रही। कण्ठ अवरुद्ध हो गया। उसने बात समाप्त करने के लिए कहा- 'सोमू ! अधिक बात करना उचित नहीं। कोई सुन लेगा तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी। तू सो जा।''

निर्मला अपनी खाट पर आ बैठी। अब उसके आँसू सूख चुके थे। उसका दिमाग एक ही दिशा में दौड़ रहा था, कौन है मेरा दुश्मन? मेरे साथ किसने ऐसा षड्यन्त्र किया? मेरे पुत्र को जीवित ही वन में फिंकवाने से किसको लाभ हो सकता है?

'लाभ' शब्द के साथ ही उसके मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी-मेरी सपत्नियाँ-राजा की पहली पत्नियाँ। उन्हें ही लाभ हो सकता है, क्योंकि उनके अभी तक कोई पुत्र नहीं है।

उसे अपने प्रसव बेला की स्मृति हो आई-मैं तो मूर्च्छित हो गई थी। अकेली गंगा ही थी मेरे पास.....तो रानियों ने गंगा से मिलकर यह षड्यन्त्र किया है .....अब समझी।

निर्मला के मस्तिष्क में सब कुछ स्पष्ट हो गया।

दूसरे दिन उड़द के बाकुले देने दासी आई तो निर्मला ने उसे विश्वास में लिया और प्रेम भरे स्वर में पूछा- ''तू मेरी विश्वस्त है। बहन जैसी ही है। मुझे सच-सच बता क्या मेरे उदर से कुत्ते का पिल्ला ही पैदा हुआ था ?''

इस सीधे प्रश्न पर दासी सकपका गई। गहरे सोच में डूब गई। कुछ कह न सकी, चुप रह गई।

निर्मला को लगा- ''जैसे इस रहस्य की जानकारी इस दासी को भी है।'' उसने आँखों में आँसू भरकर कहा- ''तू मेरी दशा देख रही है। कितनी दुखी हूँ मैं। कैसा कष्ट पा रही हूँ। बस, इतना बता दे यह रहस्य क्या है ? मैं किसी से भी नहीं कहूँगी। मुझे संतोष हो जायेगा।''

दासी को निर्मला से सहानुभूति थी, बोली- ''रानीजी ! रहस्य मुझसे मत उगलवाओ । मेरी इन दो आँखो ने क्या देखा है, जबान पर नहीं ला सकती। रानियाँ मेरी खाल खिंचवा लेंगी। बस, इतना ही समझ लीजिए कि कोई भी नारी कभी किसी भी पशु-शावक को जन्म नहीं देती, उसकी कुक्षि से तो मानव-शिशु ही जन्म लेता है।'' इतना कहकर दासी तेजी से निकल गई।

निर्मला को षड्यन्त्र का विश्वास हो गया। उसने सच्चाई पर से परदा उठाने का विचार किया, पति को सब कुछ स्पष्ट बताने का निश्चय कर लिया; लेकिन बताये कैसे ? पति तो कक्ष में भी नहीं आते, मुँह भी देखना नहीं चाहते।

निर्मला का दुःख और बढ़ गया। जब तक सच्चाई का ज्ञान उसको नहीं था तब तक तो उसने अपने भाग्य का दोष मानकर संतोष कर लिया था; लेकिन अब संतोष कैसे हो?

उसका मातृत्व तड़फ उठता। बच्चे को गोद में लेने को मन मचलता, लेकिन विवशता थी। वह अपने ही शिशु को देख भी नहीं सकती थी। कैसी थी यह परतंत्रता, नारी जीवन की घोर विवशता। अपनी विवशता पर वह रोती-तड़फती-सिसकती और आह भरती।

इस विवशता में उसका एक मात्र सहारा उसका भाई सोमदत्त था। उसी के साथ रात में पहले प्रहर के बाद वह बातचीत करके स्वयं को दिलासा देती, सोचती-कभी तो दिन फिरेंगे, पुत्र और पति का मिलन होगा। षड्यन्त्र पर से परदा उठेगा, सुख के दिन आयेंगे।

गुप्त रूप से परस्पर की हुई मंत्रणा की भी प्रगट होने की संभावना रहती है तो उच्च स्वर से किया हुआ वार्तालाप गुप्त रह सकेगा, किसी को मालूम नहीं होगा, किसी के कान में भनक भी नहीं पड़ेगी, यह संभावना ही व्यर्थ थी।

रानी निर्मला भी इस तथ्य को जानती थी। लेकिन वह अब निश्शंक थी, चाहती थी- मेरे और मेरे भाई सोमू के मध्य होने वाले वार्तालाप की भनक किसी तरह पतिदेव राजा रूपसेन के कानों तक पहुँच जाय।

उसकी धारणा थी-''उस स्थिति में राजा मेरे पास अवश्य आयेंगे और मैं सत्य को उद्घाटित करके रहस्य पर से परदा उठा सकूँगी, रानियों के षड्यन्त्र को

बेनकाब कर सकूँगी।'' इसलिए वह अपने भाई सोमू से और भी उच्च स्वर में बात करने लगीं।

इधर षड्यन्त्रकारी रानियाँ निर्मला की ओर से भी सशंकित रहती। यद्यपि निर्मला की दशा उन्होंने दासियों से भी बदतर कर दी थी, महाराज निर्मला को फूटी आँखों से भी नहीं देखना चाहते थे, उसकी कोठरी की ओर जाते भी नहीं थे। इस स्थिति से सभी रानियाँ मन-ही-मन प्रसन्न थीं। लेकिन उनकी प्रसन्नता में शंका की खटक भी प्रतिपल रहती थी। षड्यन्त्रकारी सदैव ही अपने षड्यन्त्र का भेद खुल जाने से भयभीत रहता है और इसीलिए जिसके प्रति उसने षड्यन्त्र किया है, उसकी प्रत्येक गतिविधि पर कड़ी नज़र रखता है। पल-पल की खबर रखता है।

रानियाँ भी इसी भय से अन्दर ही अन्दर भयभीत थीं। वे भी निर्मला की पल-पल की खबर रखती थीं। उन्होंने निर्मला के चारों तरफ दासियों का जाल-सा बिछा दिया था। दासियाँ उन्हें निर्मला की प्रत्येक गतिविधि का विवरण बताती रहती थीं।

एक दासी द्वारा जब रानियों को यह मालूम हुआ कि निर्मला रात के समय किसी पुरुष से बातें करती है तो उनकी बाँछे खिल गई। सोचा, इस नई रानी का किस्सा अब खत्म होगा। रात के समय जब राजा रनिवास में आये तो रानियों ने बड़े प्रेम से उनका सत्कार किया। इधर-उधर की मनोविनोद और हँसी-मजाक की बातें करने लगीं। बातों ही बातों में बड़ी रानी ने निर्मला की बात छेड़ दी; कहा- ''स्वामी! आपकी नई रानी के क्या हाल-चाल हैं?''

राजा ने बेरुखी से उत्तर दिया- ''वह कुलक्षिणी तो दण्ड भोग रही है। एक कोठरी में पड़ी है। मैं तो उधर जाता भी नहीं। मुझे उससे नफरत है।''

''स्वामी ! ऐसी नफरत भी ठीक नहीं।'' छोटी रानी बोल उठी-''अभी उसकी उमर ही क्या है। कुछ ऐसा-वैसा कर दिया तो.....?''

राजा रूपसेन का चेहरा एकदम तन गया, बोले- ''तुम कहना क्या चाहती हो ? साफ-साफ कहो।''

मझली रानी ने बात बनाई- ''प्राणनाथ ! नाराज़ होने की बात नहीं। निर्मला रानी का किसी पुरुष से बातचीत का सिलसिला तो शुरु हो चुका है।''

राजा की भौएँ तन गयीं।

बड़ी रानी ने कहा- ''स्वामी ! रात के पहले प्रहर के बाद आपकी नई रानी किसी पुरुष से घण्टों बात करती रहती है, जाने क्या बातें होती हैं ?''

''वह पुरुष महल के अन्दर आता है ?'' राजा ने प्रश्न किया।

बड़ी रानी ने उत्तर दिया- ''नहीं नाथ ! वह पुरुष महल की दीवार से लगकर खड़ा होता है और नई रानी अपनी कोठरी के झरोखे से ही बात करती है।''

इतना सुनते ही राजा रोषारुण होकर खड़े हो गये। राजा चलने लगे तो रानी ने इतना और कहा- ''स्वामी ! राजकुल के गौरव का प्रश्न है। हम इसकी मर्यादा जानती हैं। इसलिए आपको सूचित कर दिया।''

राजा के कदम नई रानी की कोठरी की ओर बढ़ गये। पहले कोठरी में जाना उचित न समझा। सोचा-रानी सावधान हो जायेगी। ऊपर छत पर पहुँचे। देखा तो रानी किसी पुरुष से बात कर रही है। पुरुष महल की दीवार से लगा खड़ा है। रानियाँ सच कहती हैं यह विश्वास हो गया। क्रोध का पारा एकदम सातवें आसमान पर जा पहुँचा। नीचे उतरे। कोठरी के दरवाजे पर कसकर लात मारी। दरवाजा अन्दर से बन्द था। तुरन्त निर्मला ने दरवाजा खोला। पति को सम्मुख देखकर उसकी आँखों में चमक आ गई। चरणों में गिरकर कहने लगी ''प्राणनाथ ! आज मेरे भाग्य खुल गये आप पधारे....''

निर्मला इतना ही कह सकी कि राजा गरजे- ''भाग्य खुल गये या फूट गये.....'' राजा इतना ही कह सके, क्रोधावेग के कारण उनके मुख से आगे शब्द ही न निकले।

निर्मला ने देख लिया कि पतिदेव क्रोध में लाल-पीले हो रहे हैं। उसने पति को ठंडा करने के लिए कहा- ''मेरे नाथ ! आप कैसी बात कर रहे हैं। मैं तो आपके दर्शनों के लिए तरसती रहती हूँ। मेरा प्रत्येक पल आपकी प्रतीक्षा में बीतता है।''

राजा के मुख से व्यंग्यपूर्ण शब्द निकले- ''मेरी प्रतीक्षा....! या पर-पुरुष की प्रतीक्षा ? यह तिरिया चरित्र मत दिखाओ। इस जाल में अब मैं नहीं फँस सकता।''

''जाल में तो आप रानियों के फँसे हैं स्वामी ! उनके षड्यन्त्र के शिकार हुए

हैं।'' निर्मला ने रानियों पर सीधी चोट की।

राजा गरजे- ''चुप रहो, रानियों के चरित्र पर कीचड़ मत उछालो। उनके खिलाफ एक शब्द भी कहा तो जबान खींच लूँगा।''

''वह तो कब की खिंच चुकी है नाथ ! छह महीने पहले से ही मेरी जबान पर ताला पड़ गया है।'' निर्मला ने कहा।

''ताला पड़ चुका तो पटर-पटर किससे बात कर रही थी ? मुझे बता यह कौन है ?'' राजा चीख से पड़े।

रानी निर्मला बोली- ''नाथ ! इसी समय अपना अनुचर भेजकर उसको बुलवा लीजिए। और स्वामी ! आप इस झरोखे में से देखते रहिए कि आपके अनुचर उसको शीघ्र ही पकड़कर लाते हैं या नहीं।''

राजा चकित हो उठे, फिर भी बोले- ''तुझे राजकुल की मर्यादा का ध्यान नहीं हैं अच्छी तरह समझ ले, परपुरुष से बात करने का दण्ड मृत्युदण्ड है।''

''वैसे भी मैं मृत्युदण्ड से कम सजा नहीं भोग रही। बिना किये अपराध का ऐसा कठोर दण्ड मुझे भोगना पड़ रहा है। पर नाथ ! आप जल्दी ही उस व्यक्ति को बुलवाइये। मैं चाहती हूँ आपकी आँखों का परदा जल्दी से जल्दी उठ जाये। उसके बाद जो आपकी इच्छा हो, वह दण्ड दें। मैं भोगने के लिए तैयार हूँ।'' निर्मला ने निर्भय होकर कहा।

राजा रूपसेन असमंजस में पड़ गये। अपराधी के मुख पर जो संकोच और लज्जा का भाव होता है वह तो निर्मला के चेहरे पर था ही नहीं, वह तो निर्भय थी। स्त्रियाँ तो पर-पुरुष या अपने प्रेमी को छिपाना चाहती हैं, लेकिन यह निर्मला तो उसे सामने लाने को उतावली है। यह रहस्य क्या है ?

राजा ने पूछा- ''मेरी आँखों पर कैसा परदा है जिसे तुम उठाना चाहती हो। मुझे बताओ तो सही।''

निर्मला ने नम्र किन्तु दृढ़ स्वर में कहा- ''इस समय आप इतना ही विश्वास कर लीजिए कि मैंने आपके पुत्र को जन्म दिया है, किसी कुत्ते के पिल्ले को जन्म नहीं दिया है।''

(क्रमशः)

युवा-स्तम्भ

मर्यादाओं का उल्लंघन न करें

श्री पदमचन्द गाँधी (थाँवला वाले)

आज खुले आम पारिवारिक, सामाजिक एवं नैतिक मर्यादाओं का उल्लघंन हो रहा है। वैचारिक नियंत्रण कमजोर हो गया है। जहाँ पर नियंत्रण लागू किया जाता है वहीं विद्रोह उत्पन्न हो जाता है, दुर्घटनाएँ घटित हो जाती हैं, आत्म-संताप एवं कभी-कभी आत्मघात की भी स्थिति बन जाती है। आज की भौतिकवादी संस्कृति में खुली विचारधारा के कारण फैशन, मोबाइल, इण्टरनेट का उपयोग कम, दुरुपयोग ज्यादा हो रहा है, जिसकी सजा भोग रही है खासतौर पर आज की युवा पीढ़ी। पाश्चात्त्य सभ्यता एवं संस्कृति की उच्छृंखलता से युवा पीढ़ी प्रभावित हुई है। जिसे वह स्वतंत्रता एवं खुलापन समझ रही है, वास्तव में वह उच्छृखंलता है। पश्चिम का उन्मुक्त एवं उच्छृंखल यौनाचार हमारे समाज में असाध्य रोग के समान संक्रमित हो चुका है। मोबाइल, टी.वी., मीडिया चैनल ने तो इसे इतना ज्यादा खुला कर दिया है कि सद् आचरणशील व्यक्ति इन्हें देखना भी पाप समझता है। इन सबके प्रभाव एवं परिणाम आये दिन अखबारों की सुर्खियों में पढ़ने को मिलते हैं। आज अच्छे-अच्छे संस्कारी, धार्मिक एवं खानदानी परिवारों में सेंध लग चुकी है। अनैतिक सम्बन्धों के कारण भ्रूण-हत्या एवं गर्भपात का आंकडा प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। एकान्त एवं सूने स्थानों का दुरुपयोग हो रहा है। अध्ययन करने के बहाने युवा पीढ़ी कहाँ जाती है, क्या करती है, घर वालों को हवा तक नहीं लगती। आज परिधानों में, विचारों में, खानपान में, बोलचाल में, कार्यशैली में, रहन-सहन में, बाजारों में, दफ्तरों में कामुकता झलकती है। युवा पीढी में जो श्रेष्ठ विचारों एवं व्यवहार से जो सदाचरण प्रवृत्ति होनी चाहिए, उसके स्थान पर नकारात्मक एवं निकृष्ट विचारों का जमघट उन्हें निकृष्ट कर्म करने को मजबूर कर देता है। सामाजिकता एवं नैतिकता की वे सभी दीवारें कुछ ही पलों में तोड़ दी जाती हैं जिन्हें हमारे पूर्वजों ने एवं संस्कृति ने सदियों से संजोया है।

दुराचरण में वे सभी कर्म आते हैं, जो व्यक्ति को पतित करते हैं, गिराते हैं और जिनके फलस्वरूप अपार बेचैनी एवं उद्विग्नता पैदा होती है। इसमें भ्रष्टाचार, व्यभिचार, चोरी, परपीड़ा, नशाखोरी, लड़कियों को भगाना इत्यादि अनेक कर्म

शामिल हैं। पत्नी की पवित्रता को भंग करना अर्थात् पति-पत्नी के संवेदनशील सम्बन्धों को तोड़कर किसी अन्य से सम्बन्ध बनाना व्यभिचार में आता है। विवाह से पूर्व प्रेमविवाह रचाना तथा उसे पूर्णरूप से नहीं निभाना या तलाक तक पहुँचाना भी अनैतिकता में आता है। इतना ही नहीं माता-पिता की आज्ञा के बिना नैतिक एवं सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ कर घर से अलविदा हो जाना कायरतापूर्ण कृत्य के साथ-साथ निम्न स्तर की अनैतिकता में गिना जाता है।

आये दिन अखबारों में पढने या कर्णाकर्णि सुनने में आता है कि आज अमुक की लड़की किसी गैरजातीय युवक के साथ चली गयी। आज अमुक की लड़की अमुक लड़के के साथ पकड़ी गयी। अमुक ने माता-पिता के डर से जहर पी लिया। अमुक ने कोर्ट मैरिज कर ली। ये सभी परिस्थितियाँ सद्आचरणशील व्यक्ति को झकझोर देती हैं, उसे चिन्तन करने पर मजबूर कर देती हैं। आज सद्आचरण का उपहास किया जा रहा है। कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि इतना अधिक हमारा सामाजिक एवं नैतिक अवमूल्यन होगा। इन गिरे हुये मूल्यों के प्रवाह से लगता है आज सद्कर्म धूमिल हो गया है। इन सब परिस्थितियों के और भी कई कारण हो सकते हैं जैसे घर के वातावरण एवं बाह्य वातावरण में अन्तर, माता-पिता का बहुत अधिक पारम्परिक होना, बच्चों की भावनाओं को समझने का अभाव, आवश्यक स्वतंत्रता का न मिलना, बच्चों के निर्णय के स्थान पर स्वयं माता-पिता के निर्णय को थोपा जाना, माता-पिता द्वारा उन्हें आवश्यक समझ नहीं दिया जाना; उनके साथ विचार मंच पर खुली विचारधारा प्रस्तुत नहीं करना, बारीकी से अपने बच्चों पर नजर नहीं रखना या गौण करना, जरूरत से ज्यादा आवश्यकता की पूर्ति करना, साधन जुटाना एवं आर्थिक छूट देना। प्रोफेशनल मेच न मिलना, युवा पीढी का क्षमता से अधिक महत्त्वाकांक्षी होना इत्यादि अनेक कारण हैं, जिनसे गाड़ी ट्रेक से नीचे उतर जाती है।

सामाजिक मर्यादाओं में पतिव्रत और पत्नीव्रत धर्म को बड़ी गहरायी से आचरण में उतारा जाता है तथा पवित्र माना जाता है, लेकिन आज यह मात्र शाब्दिक आदर्श रह गया है। यौन मर्यादाओं का उल्लंघन जितना इस दौर में हुआ है इतना शायद पहले कभी नहीं हुआ। आने वाले समय का तो भगवान् मालिक है। देखने में आता है चार-चार बच्चों की माताएँ भी किसी अन्य पुरुष के साथ चली जाती हैं, फिर कुंवारियों का तो कहना ही क्या? कभी घर की सीमाओं और

मर्यादाओं में रहने वाली नारी माता एवं देवी के समान पूजी जाती थी, आज इन सुन्दर अंलकारों को उतार कर फेंक रही है। नारी के सबसे बड़े धन 'शील' एवं 'लज्जा' मानो तार-तार हो रहे हैं। पुरुषों का चरित्र खो रहा है। खोए हुए मूल्यों के एवज में हमें जो कुछ भी मिला है, वह इतना सामर्थ्यवान नहीं कि हमें आन्तरिक खुशी दे सकें।

आज युवा पीढी अपनी सीमाओं का उल्लंघन इस प्रकार कर रही है कि इन्द्रिय सुखों की लालसा में अपना अमूल्य चरित्र भी दांव पर लगा रही है। वे सभी हदें पार कर दी जाती हैं जो नहीं करनी चाहिए। इन हदों को पार करने से माता-पिता को अतीव पीड़ा का अनुभव होता है। कई तो दम तोड़ देते हैं। ऐसी हदें पार करने वाले यह सोचकर खुश होते हैं कि हम परतंत्रता की बेड़ियां काट कर आजाद हो गये हैं, किन्तु यह स्वतंत्रता नहीं, एक तरह की उच्छृखंलता है, जो उन्हें नीचा गिराती है।

सामाजिक एवं पारिवारिक मर्यादाओं को भंगकर एक अलग दुनियां बसाने की घटनाएँ आम हो रही हैं। माता-पिता के संजोये सपनों को, उनके वात्सल्य को अपमानित किया जाता है। जिन्होंने अपनी तरफ से वे सभी सुविधाएं जुटाई जिनको शायद अपने स्वयं के बचपन में एवं जीवन में नहीं भोगी हो। बच्चों को फूलों की तरह पाल पोषकर बड़ा किया, लेकिन अत्याधुनिक विचारधारा की युवा पीढी में सभी रिश्ते मात्र दो चार दिन की दोस्ती के पीछे एक ऐसी दहलीज पार कर लेते हैं जो केवल शर्म, गम, एवं नीरसता को ही जन्म देते हैं। इन सबका परिणाम इतना गहरा एवं व्यापक होता है कि सोचते ही दिल दहल जाता है, मन कांप उठता है उनका यह पाप पूरी पीढी को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है। इस पाप से उनका जितना पतन होता है वह तो अलग बात है, लेकिन उसकी आंच से पूरी पीढी झुलस जाती है। इतना ही नहीं उनकी सन्तानें भी इस आत्मघाती राह पर चल पड़ती हैं। ऐसे में समूचा पारिवारिक वातावरण असह्य और नारकीय हो जाता है। समाज एवं परिवार की नज़र से गिरने के साथ-साथ उनके सम्बन्ध विच्छेद तो होते ही हैं, लेकिन स्वयं का जीवन भी खतरे में आ जाता है। खास तौर पर युवतियों की स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि उन्हें मजदूरी, नौकरी एवं निम्नस्तर का कार्य करना पड़ता है। जातीय समानता प्रायः नहीं रह पाती, जिनसे रीति रिवाज; धार्मिक क्रियाएँ, खान-पान, पहनावा संस्कार सभी बदलना पड़ता है, जीवन की पूरी चर्या

बदल जाती है। लम्बे समय तक ऐसे रिश्ते चलना मुश्किल हो जाता है। प्रेमविवाह के आंकड़े बताते हैं कि इनमें 90 प्रतिशत असफलता ही मिलती है, जिनके परिणाम स्वरूप या तो लड़कियों को छोड़ दिया जाता है, बेच दिया जाता है या तलाक दे दिया जाता है। जिनसे उन्हें एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

उपर्युक्त परिस्थितियों पर चिंतन करना अनिवार्य है। घर-परिवार एवं समाज को जागरूक होना आवश्यक है, अन्यथा लड़कियों के घटते प्रतिशत में शिकारी की तरह घूमते युवा किसी का भी शिकार कर सकते हैं। यदि वास्तव में सुधार लाना है तो युवा पीढी को तो संभलना ही है, साथ ही साथ माता-पिता को भी निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है:-

1. पुत्र एवं पुत्रियों को किशोरावस्था में हित शिक्षाएँ एक मित्र के रूप में दी जाएं।
2. आधुनिक उपकरण मोबाइल, लेपटोप आदि अत्यधिक आवश्यकता हो तो ही देवें, अन्यथा नहीं।
3. तड़क-भड़क, साज-सज्जायुक्त, वस्त्रों का बहिष्कार करें।
4. अपने लाड़लों के साथ ग्रुप काउंसलिंग करें तथा खुला विचार मंच दें।
5. माँ का आंचल एवं पिता का साया आवश्यक है। माता-पिता अपने कैरियर के पीछे बच्चों को नकारते हैं, आर्थिक दौड़ में समय नहीं दे पाते हैं, उन्हें इस क्रूशियल उम्र में पैनी नजर रखनी चाहिए।
6. साधन, वाहन एवं अर्थ सहायता पर पूर्ण नियंत्रण रखें, खुली छूट नहीं देवें।
7. मित्र मंडली पर पूरी नज़र रखें, उनके चाल-चलन, हाव-भाव, इशारों को समझें। उसी अनुरूप कदम उठाएँ।
8. अपने किशोरों एवं युवकों/युवतियों की मानसिकता इतनी मजबूत करें कि वे किसी के बहकावे में, लालच या सहानुभूति में नहीं आएं।
9. एकान्त वास में पूरा ध्यान रखें, इसका दुरुपयोग न हो।
10. अकेले युवक, अकेली युवती को साथ नहीं छोड़ें।
11. सभी का विश्वास जीतकर वीरता का परिचय दें। आत्मघात की राह पर कदम न बढाएं।

उपर्युक्त सभी को ध्यान में रख कर सामाजिक एवं पारिवारिक मर्यादाएँ बचायी जा सकती हैं तथा युवा पीढी को संवारा जा सकता है।

-25, महेशनगर विस्तार (बी), बैंक कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

गीतों की विरासत बचाएँ

डॉ. दिलीप धींग

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि संस्कृति के संरक्षण और विकास में महिलाओं का अप्रतिम योगदान है। उनके द्वारा यह योगदान अनेकानेक आयामों में अभिव्यक्त होता रहा है। उनमें एक महत्त्वपूर्ण आयाम है- गीत। नारी-कण्ठ कुदरती तौर पर मधुर होता है तथा स्वभावतः उन्हें गीत, संगीत, स्तवन, भजन आदि प्रिय होते हैं। अनेक सांस्कृतिक,सामाजिक,धार्मिक एवं पारिवारिक रस्मों के साथ महिलाओं द्वारा मंगल गीत गाये जाने की विविध परम्पराएँ जुड़ी हुई हैं। अवसर के अनुसार गीत गाकर महिलाएँ वातावरण में रस घोल देती हैं तथा किसी भी उत्सव को उमंग व उत्साह से भर देती हैं।

जैन धर्म का लोक जीवन भी ऐसा ही रसीला रहा है। वहाँ धार्मिक, सामाजिक और पारिवारिक अवसरों पर जैन धर्म की शाश्वत संस्कृति के प्रथम और प्रधान आराध्य तीर्थंकरों से जुड़े गीत व भजन गाये जाते रहें हैं। सामाजिक रीति-रिवाजों की दृष्टि से तेजी से बदलते समय में ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पारम्परिक धार्मिक लोकगीत कई रूपों में जीवित हैं।

गाँव के नैसर्गिक वातावरण में मेरा बचपन व्यतीत हुआ। मुझे याद है विवाह के अवसर पर विवाह से पूर्व कुछ दिनों तक सूर्योदय से पहले ही सपने गाने के लिए घर-घर तेड़े (बुलावे) लगाये जाते थे कि 'हपना गावा पधारजो' अर्थात् सपने गाने के लिए आना। सभी महिलाएँ इकट्ठी होकर सपने गाती थीं। आज भी विवाह के अवसर पर सपने गाये जाते हैं। इन गीतों में तीर्थंकर के गर्भ में आने पर उनकी माता द्वारा देखे गये सपनों का वर्णन होता है। श्वेताम्बर मतानुसार इन सपनों की संख्या चौदह और दिगम्बर मतानुसार सोलह होती है। इन सपनों के माध्यम से महिलाएँ नवयुगल, उनके परिवार तथा सबके लिए सुख-सौभाग्य तथा सांसारिक एवं आध्यात्मिक कल्याण की कामना करती हैं। इसी प्रकार के धर्म-गीत बच्चे के जन्म के बाद होने वाली पारिवारिक रस्मों के अवसर पर भी गाये जाते हैं। इन धर्म-गीतों के साथ अन्य कई प्रकार के लोक-गीत भी गाये जाते हैं तथा अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग गीत-परम्पराएँ बनी हुई हैं।

लोक संस्कृति और धर्म के ताने बाने की बात यहीं तक सीमित नहीं है। मेवाड़ के कुछ गाँवों में परिपक्व उम्र में संसार से विदा लेने वाले व्यक्ति की अंतिम यात्रा में कुछ दूर तक महिलाएँ चौबीसी गाती हुई चलती हैं। स्थानक, उपाश्रय या नियत स्थान तक अंतिम यात्रा में साथ चलकर चौबीसी गाकर पुनः बीच में से ही वे लौट आती हैं। जब कोई श्रावक या श्राविका संथारा धारण कर लेता है, तब संथारे के दौरान भी संथारे के गीत गाये जाते हैं। संथारे की सम्पूर्ति तथा संथारे से देह-त्याग करने वाले की अंतिम यात्रा में भी कई स्थानों पर गीत गाने की परम्परा है।

जन्म और विवाह जैसे सांसारिक कार्यों में तीर्थंकर भगवन्तों का स्मरण मुझे अद्‌भुत तथा प्रेरक लगा। साथ ही मरण के अवसर पर शाश्वत के स्मरण में भी हमारी प्रतिबद्धताएँ व्यक्त होती हैं। हमारे पुरखों ने जीवन के सांसारिक और धार्मिक पक्षों में जो सामंजस्य बिठाया, वह इन गीतों में अभिव्यक्त होता है। जन्म से लेकर मरण तक गीतों की यह सरिता मानव की अन्तर की प्यास बुझाती हुई कई बातों के लिए निरन्तर अनुप्रेरित करती रहती है।

पिछले दो-तीन दशकों से जन्म और विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले धर्म-गीतों की परम्परा लुप्त-सी होती जा रही है। शहरी शिक्षित युवतियों को जैसे इन धर्म-गीतों से कोई सरोकार ही नहीं हो। कई ऐसे पारम्परिक कार्यक्रमों में जब बुजुर्ग महिलाएँ गीत गा रही होती हैं, तब शिक्षित व सुसभ्य कहलाने वाली ये नारियाँ या तो चुपचाप बैठी रहती हैं या वहाँ से उठकर चली जाती हैं। ऐसा नहीं है कि इस दौर की लड़कियों को गीत पसंद नहीं हो। मन मलिन करने वाले फूहड़ फिल्मी गीत तो उन्हें बहुत याद हैं। कहीं-कहीं तो धार्मिक कार्यक्रमों में भी फिल्मी गीतों तथा उन पर आधारित नृत्य आदि होने लगे हैं। छोटे-छोटे बच्चों को भी फिल्मी गीत याद हैं और वे उन पर थिरकते हैं। ऐसे में हमें बच्चों, युवाओं और महिलाओं को संस्कार पैदा करने वाले गीतों की ओर मोड़ना बहुत जरूरी है।

इस बीच आश्वस्त करने वाला तथ्य यह है कि वर्षीतप एवं तपस्या के अवसर पर गाये जाने वाले तप-गीत और चौबीसी की परम्परा आज भी पूरे जैन समाज में लगभग जीवित है। चौबीसी के माध्यम से चौबीस तीर्थंकरों का मंगल स्मरण किया जाता है। तप के अवसर पर होने वाले आडम्बरों ने इस स्वस्थ परम्परा को भी आहत किया है। जबकि आडम्बरों से बचने में ही तप का वास्तविक गौरव बढ़ता है।

सामाजिक पारिवारिक अवसरों पर धार्मिक लोक-गीतों की इस परम्परा में

हमारी पुनीत संस्कृति की सत्प्रेरणाएँ तथा संकल्प गूंथे हुए होते हैं। ऐसे गीतों की रचना कब किसने की, यह भी प्रायः पता नहीं होता है। ऐसे अधिकांश गीत क्षेत्रीय तथा आँचलिक लोक भाषओं में रचे होते हैं। इनमें गुंफित भाव, कल्पनाएँ व शब्द-प्रयोग बड़े अनूठे होते हैं। ये गीत समय के साथ काफी परिवर्तित भी हो जाते हैं और प्रायः यह पता करना मुश्किल होता है कि इनकी रचना कब किसने की। वर्तमान में आधुनिक व प्रचलित धुंनों पर भी कई रचनाकारों ने ऐसे गीतों की रचना की है, जो जन जीवन का हिस्सा बने हुए हैं। गीतों की रसिक अनेक महिलाओं ने भी अपनी स्थानीय एवं तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार इस तरह के गीत रचे हैं। कई गीतों को वे अपने निकटस्थ किसी रचनाकार की मदद से ठीक कर लेती हैं। जन जीवन में सैकड़ों चौबीसियाँ, सपने और पद प्रचलित हैं। जिनमें से कई रचनाएँ अज्ञात रचनाकारों की तो कई अल्पज्ञात या सुज्ञात रचनाकारों की हैं।

इधर हमारे धर्मस्थलों में भी सामाजिक जीवन को उत्कर्ष देने वाले तथा आगमिक आख्यानों पर आधारित गीत, पद्यात्मक संवाद तथा नाटक प्रस्तुत किये जाते थे, जो अब बहुत कम हो गये हैं। साधु-साध्वियों के पदार्पण, विहार आदि अवसरों पर भी श्राविकाओं द्वारा ऐसी प्रस्तुतियाँ देखने को मिल जाया करती थीं। जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी, उपाध्याय केवल मुनि, मगन मुनि 'रसिक', सौभाग्य मुनि 'कुमुद',चन्दन मुनि आदि अनेक संत कवियों ने तथा कई अन्य कवियों ने ऐसे अनेक लोक-गीत रचे हैं, जो जनजीवन में संस्कार, सदाचार व मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हैं। इन वर्षों में रत्नसंघीय गौतम मुनि भी ऐसे लोकग्राह्य गीत रच रहे हैं।

सांस्कृतिक गीतों की इस महत्त्वपूर्ण विरासत को बचाने की विशेष जिम्मेदारी महिलाओं की है। घर, परिवार और समाज में वे अपनी बहू-बेटियों और तरुणियों को ऐसे धर्म-गीतों की वाचनाएँ दिया करें तो यह परम्परा आगे से आगे बढ़ सकती है। मैं मेरी माता उमराव देवी का ही उदाहरण दूँ, जिन्हें सैकड़ों गीत और स्तवन कण्ठस्थ हैं। उनसे मेरी अग्रजा स्वाध्यायी आशा दाणी ने अनेक गीत सीखे। उन्हें याद भी खूब हैं और गाती भी अच्छा है। इन माँ-बेटी ने कइयों को गीत सिखाए हैं। लोक संस्कृतिविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने ऐसे गीतों की विरासत बचाने के लिए कार्य किया है। भीलवाड़ा(राज.)की श्राविका मनीषा कच्छारा ने जैन धर्म के ऐसे ज्ञात-अज्ञात 91 लोक गीतों को संकलित कर प्रकाशित किया है। श्रेष्ठ संस्कार सृजन और संस्कृति की रक्षा के लिए लोक जीवन के इस पक्ष की ओर ध्यान देना भी बहुत आवश्यक है।

-53-बी, डोरे नगर, उदयपुर-313002

स्वानुभव

अनमोल उपहार

श्री कस्तूरचन्द बाफना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के आदेशानुसार पर्वाधिराज पर्युषण में सेवा देने हेतु शिरपुर (धुलिया, महाराष्ट्र) गया था। सहायक थी- (1) सुश्री धनश्री संचेती, धरणगांव (2) सुश्री रूपाली गुजराती, धरणगांव। पूरे पर्युषण के कार्यक्रम अच्छे रहे। संघ प्रभावित हुआ। संवत्सरी के दूसरे दिन स्थानीय संघ की ओर से सामूहिक क्षमायाचना एवं स्वाध्यायियों का सत्कार कार्यक्रम रखा गया।

मैंने संघ से निवेदन किया कि सत्कार, भेंट एवं पूजा स्वाध्याय संघ द्वारा वर्जित है और न ही जरूरत है। **'क्षमा वीरस्य भूषणम्'** की विवेचना करते हुए मैंने कहा कि अगर महावीर ग्वाले के सामने आँख भी खोल देते तो कानों में कीले ठोकने की बात तो दूर वह वहाँ पर ठहर भी नहीं पाता, पर उन्हें तो कर्मों की निर्जरा करनी थी और क्षमा का आदर्श रखना था। गजसुकुमाल सोमिल के सामने नज़र उठाकर देख लेते तो एक क्षण भी वह वहाँ ठहर नहीं पाता, सिर पर अंगारे रखने की बात तो दूर। उन्हें भी कर्मों का भुगतान करना था। साथ ही यह भी बता दिया कि क्षमा में कितनी बड़ी ताकत है कि जो काम वर्षों की तपस्या के बाद होता वह काम क्षमा के माध्यम से कुछ ही घंटों में हो गया।

क्षमा मांगने वाले तथा क्षमा करने वाले दोनों को अपना दिल दिमाग विशाल बनाना पड़ता है, तब कहीं क्षमा दी व ली जाती है। जैसे ही क्षमा के विचार दिल दिमाग में आते हैं, क्रोध और मान रोड़ा अटकाते हैं। क्रोध पैर की बेडी एवं मान हाथ की हथकड़ी के समान होता है। क्रोध कहता है कहाँ चला क्षमा माँगने? आजीवन न बोलने की कसम खाई है। मान कहता है कहाँ चला माफी माँगने? सामने वाले से तूं क्या कम है जो सामने वाले के आगे जाकर झुकता है। इन दोनों तीव्र कषायों की बात अनसुनी कर दी जाती है। तब कहीं क्षमा मांगी जाती है इसलिए कहा गया-**''क्षमा वीरस्य भूषणम्!''**

आप हमें सम्मानित करना चाहते हैं तो एक चीज की भेंट लेने में मुझे कोई एतराज नहीं। मैंने कहा- उपस्थित लोगों में वे लोग आएं, जिनमें आपस में रंजिश

है, मनमुटाव है, अबोलापन है। वे सबके सामने क्षमायाचना कर गले लग जाएँ। जो हुआ उसे सदा के लिए भूल जाएँ। भविष्य में सामान्य व्यवहार हो जाए। सभा में सन्नाटा छा गया।

पाँच मिनट के आपसी विचार-विमर्श के बाद दो सज्जन आगे आए जिनकी वर्षों से रंजिश थी। आपस में क्षमायाचना की और गले मिले। ऐसा अनमोल उपहार मिला श्री संघ शिरपुर से।

- Bafna Financess, 11, Bhatia Market Ist Floor, JALGAON-425001(Mah.)

क्षमामूर्ति भगवान् महावीर

श्री चम्पालाल बोथरा

(तर्ज- देख तेरे संसार की हालत..... ।)

महावीर के उपदेशों की, महिमा बड़ी महान
गायें हम उनके गुणगान, गायें हम उनके गुणगान ।।टेर।।
सत्य अहिंसा, क्षमा, दया का दिया सभी को ज्ञान,
गायें हम उनके गुणगान, गायें हम उनके गुणगान।
पिता सिद्धार्थ, माता त्रिशला, कुण्डलपुर में अमृत छलका
चौदह सपने माँ को आये, पण्डितों ने शुभफल बतलाये
चैत्र सुदी तेरस को जन्मे नाम रखा वर्द्धमान ।।१।। गायें हम.....
सत्य वचन सब हरदम बोलो, कभी किसी का मर्म न खोलो
नहीं दुखाओ किसी के मन को, कष्ट नही दो किसी के तन को
चींटी हो, चाहे हाथी सबको अपनी प्यारी जान ।।२।। गायें हम.....
पूर्व भवों का वैर जो जागा, चण्डकौशिक ने प्रभु को काटा
क्रोध दृष्टि से जब फुफकारा, बही दूध की निर्मल धारा
क्षमा मूर्ति महावीर ने, दिया क्षमा का दान ।।३।। गायें हम.....
बैल छोड़कर गया था ग्वाला, समझ प्रभु को है रखवाला
लौट के आया बैल न दीखे, कानों में ठोके कीलें तीखे
आह न निकली प्रभु के मुख से, मगन रहे धर ध्यान ।।४।। गायें हम.....

प्रेरक चिन्तन

जिनवाणी का प्रकाश

प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन

1. जिस तरह हमें घर में कचरा पसंद नहीं है, उसी प्रकार हमारे आत्मा रूपी मकान में विषय-कषाय रूपी कचरा भरे रखना समझदारी नहीं है। आज आवश्यकता है अपनी समझ बढ़ाने की।
2. जिनवाणी का प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करता है। वस्तुतः जिनवाणी सत्य-शाश्वत-दिव्य, सर्व-हितकर अद्भुत-अनुपम ज्योति है। हमें ध्याता से ध्येय बनाने में परम सहायक शक्ति है।
3. श्रद्धा मल्हम रूप है, ज़ो भव-भ्रमण के घावों और रोगों का उपचार करने वाला है। हमें जिन-वचनों पर श्रद्धा रखकर भव-भ्रमण के रोगों का उपचार करके परीत संसारी बनना है।
4. आज हमारा भगवान् पर विश्वास कम और डॉक्टर पर विश्वास अधिक बढ़ गया है। इसी कारण दुःखों एव समस्याओं का सिलसिला दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। जरूरत है सर्वज्ञों के कथन पर श्रद्धा-विश्वास करने और तदनुरूप पुरुषार्थ करने की।
5. आनन्द-कामदेव आदि श्रावकों का जीवन यही प्रेरणा देता है कि-हमारे भी हड्डी, मज्जा एवं रोम-रोम में धार्मिक दृढ़ता के संस्कार बढ़ें, हम भी दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी, आदर्श श्रमणोपासक बनें।
6. भक्ति का रस अमृत से भी मीठा होता है। जरूरत है भावों के उत्कृष्ट रसायन की, पराकाष्ठा की।
7. धर्म एवं जिनवाणी का आलंबन लेकर, इसे आचरण रूप में स्वीकार करके मानव महान् बना है। जरूरत है सम्यक् श्रद्धा एवं दिशाबद्ध पुरुषार्थ की।
8. श्रोत्रेन्द्रिय का मिलना अनन्त पुण्यवानी का उदय है, आवश्यकता है श्रोत्रेन्द्रिय के सदुपयोग की, जिनवचन श्रवण में इसे लगाने की।
9. जीव मरता नहीं है, मरता शरीर है, अतः शरीर की ओर से ध्यान हटाकर आत्मा की ओर ध्यान लगाने वाला साधक अपने इस भव-परभव दोनों को सुखी बनाता है।

- 175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमंडी

बाल-स्तम्भ

जीवन का समझें मोल

डॉ. राजेन्द्र मुनि

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 10 नवम्बर 2008 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

जो व्यक्ति धर्म साधना नहीं करता, वह दुःख पाता है और सिर धुन-धुनकर पछताता है। लेकिन इस दुःख का कारण वह अपने आपको न मान कर काल,कर्म और ईश्वर पर झूठा दोष लगाता है कि कलियुग (काल) के कारण अथवा मेरे कर्म खोटे हैं, इस कारण अथवा ईश्वर मुझसे रूठ गया है, इस कारण ही मुझे दुःख मिल रहे हैं-

सो परम दुख पावइ, सिर धुन धुन पछिताइ।
कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ॥

किसी नगर में एक कोटीश्वर श्रेष्ठी रहता था। उसका नाम था धन्नावह। धन्नावह का भवन राजमहल जैसा भव्य, विशाल और सुन्दर था। रथ, घोड़े आदि की भी समृद्धि थी, नगद धन तो था ही। घर में दास-दासियाँ भी भरपूर थे। बस, एंक संतान नहीं थी। लेकिन उसे भाग्योदय ने ज्यादा निराश नहीं किया। सेठानी गर्भवती हो गई। सेठ ने सुना तो प्रसन्न होकर बोला- "मेरी अपार सम्पत्ति को भोगने वाला कोई आ जाएगा। मुझे इस बात की चिन्ता रहती थी कि संतान के बिना इस धन का भोग कौन करेगा?"

"संतान के लिए तो निर्धन भी तरसते हैं।" सेठानी ने कहा- "धन और संतान में यदि किसी एक के मिलने की बात चले तो मैं संतान को ही चाहूँगी। तुम धन के लिए संतान चाहते थे, पर मैं अपने मातृत्व की चाह पूरी

करना चाहती हूँ।''

"संतान पिता को भी कम प्यारी नहीं होती।'' श्रेष्ठी धन्नावह ने कहा- ''लेकिन संतान का सुख धन के बिना भी तो फीका है। बालक दूध के लिए भूखा और दूध के लिये एक छदाम भी न हो तो कितना बुरा लगता है?''

''सो तो है।'' सेठानी ने कहा-''पर आप तो कुछ और ही कर रहे थे। पुत्र के लिए धन रहे इसकी चिन्ता हमें नहीं करनी चाहिए। पुत्र सुपुत्र होगा तो उपार्जन कर लेगा। यदि पुत्र कुपुत्र हुआ तो पिता द्वारा छोड़े गए धन को भी नष्ट कर देगा।''

''स्वामी संसार में न तो पुत्र अपना है और न धन, मात्र धर्म ही अपना है।''

''तुम चाहे जब रंग में भंग कर देती हो।'' सेठ ने कहा- ''मातृत्व की चाह भी रखती हो और पुत्र को अपना भी नहीं मानतीं। यह भी कोई बात हुई?''

''बात क्यों नहीं हुई?'' सेठानी ने कहा-''पुत्र की चाह, मातृत्व की चाह मेरे हृदय की भावना है और धर्म अपना है, यह मेरा विवेक अथवा मस्तिष्क का विचार है। जीवन में दिल-दिमाग दोनों का ही तो महत्त्व है।''

यों बातों-बातों में दिन बीत गए। सेठानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। बड़ी खुशियाँ मनाई गईं। समय के साथ श्रेष्ठिपुत्र बड़ा हो गया। उसकी माता चल बसी। माता के बिना श्रेष्ठिपुत्र उदास रहने लगा। तभी उसके मित्रों ने आ घेरा और कहने लगे- ''अरे मित्र, इस तरह दुःखी जीवन कब तक काटोगे? चलो हमारे साथ। हम तुम्हारे जीवन में खुशियाँ भर देंगे।''

श्रेष्ठिपुत्र के जीवन में खुशियाँ भर गईं। मदिरा, वेश्या-गमन, द्यूत-ये तीनों व्यसन उसे तथाकथित सुख देने लगे। लेकिन इन सुखों में धन को घुन लग गया। श्रेष्ठिपुत्र कुसंग में पड़ कर पिता के धन को फूँकने लगा। 'पाय कुसंगति को न नसाई?' कुसंग को पाकर कौन नष्ट नहीं हुआ है? श्रेष्ठिपुत्र नष्ट होने के मार्ग पर बड़ी तेजी से दौड़ रहा था।

धन्नावह सेठ को पता चला कि उसका पुत्र सभी दुर्व्यसनों में फँसकर धन को नष्ट कर रहा है और अपने जीवन को चौपट कर रहा है। यह जानने के बाद सेठ ने पुत्र को समझाया कि व्यापार में ध्यान दो। मेरे बाद तुम्हें ही तो

धनोपार्जन करना है। मैं तुम्हारे लिए कब तक कमाऊँगा? दुष्ट मित्रों की संगत छोड़ो। धन नष्ट होने पर ये मित्र कभी तुम्हारे काम नहीं आएंगे।

श्रेष्ठिपुत्र ने पिता की बात को एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया। फिर एक दिन वही हुआ, जो होना था। धन्नावह सेठ परलोक सिधार गए। उसके मरते ही व्यापार ठप्प पड़ गया, क्योंकि उसके पुत्र को न तो व्यापार करने का अनुभव था और न उसमें रुचि थी। फिर व्यसनों में फँसा होने के कारण समय भी उसके पास नहीं था। जो जमा पूँजी थी सब नष्ट हो गई। व्यापार रुकने से आमदनी भी रुक गई।

एक दिन ऐसा आया जब श्रेष्ठिपुत्र ढाक के तीन पात होकर रह गया। दुर्व्यसनों में उसे अपने पिता की हवेली भी बेचनी पड़ी। धनाभाव के कारण वेश्या ने तो उसे धक्के मारकर निकाल दिया। मित्र भी साथ छोड़ गए। सच्चा मित्र ही वक्त पर काम आता है। व्यसनों में साथ देने वाले मित्र तो होते ही नहीं। मित्र तो वह है, जो बुरे रास्ते से हटाकर अच्छे रास्ते पर लगा दे- **'कुपथ निवारि सुपंथ लावई।'**

श्रेष्ठिपुत्र दाने-दाने को मोहताज हो गया। एक दिन उसे एक तपस्वी मिला। उसने उसे आश्वासन दिया- ''यदि तुम साहस कर सको और जोखिम उठा सको तो मैं तुम्हें अक्षय धन का स्रोत दे सकता हूँ।''

''श्रेष्ठिपुत्र, मेरी जानकारी में एक रसकूप है। तुम उसमें से रस कुप्पी भर लाओ। उस रस की एक बूँद से ही मनों स्वर्ण बन जाता है। लेकिन रसकूप तक जाने का मार्ग अंधकार से भरा, साँप-बिच्छुओं और काँटों वाला है। मार्ग में अनेक व्यंतर जीव भी सताते हैं। इन सबसे बचकर यदि तुम रसकूप तक जा सको तो तुम्हारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा। साथ में एक दीपक ले जाना।''

''सोना प्राप्त करने के लिए तो मैं सब कुछ कर सकता हूँ।'' श्रेष्ठिपुत्र ने कहा- ''चलिए आप मुझे मार्ग बताइए।''

तापस उसे वन में ले गया और एक ओर संकेत करके कहा-''इसी मार्ग पर सीधे चले जाओ। एक योजन चलने के बाद तुम्हें रसकूप दिखाई देगा। लेकिन वहाँ तक जाने के मार्ग में कुछ नहीं दीखेगा। दीपक को सावधानी से ले जाना।''

दीपक और रस भरने के पात्र को लेकर श्रेष्ठिपुत्र आगे चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद हवा का ऐसा तीव्र झोंका आया कि उसका दीपक बुझ

गया। अब तो उसे आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। साहस करके वह अँधेरे में ही आगे बढ़ा। कुछ ही दूर चला था कि उसका पैर सर्प पर पड़ गया। और सर्प ने उसे डस लिया।

थोड़ी देर में ही श्रेष्ठिपुत्र के प्राण पखेरु उड़ गए। इस तरह मानव जीवन का मूल्य नहीं जानने वाले अपने जीवन को कुव्यसनों में खो देते हैं। नरक, देव और तिर्यञ्च के भव में कर्म करने की स्वतन्त्रता नहीं होती, अतः मानव-भव अनमोल है।

प्रश्न :-

1. "काल, कर्म और ईश्वर हमारे दुःखों के कारण हैं।" क्या आप इससे सहमत हैं? कारण सहित उत्तर दीजिए।
2. "पुत्र सुपुत्र होगा तो उपार्जन कर लेगा और यदि कुपुत्र हुआ तो पिता के धन को नष्ट कर देगा।" इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध लोकोक्ति को बताइये।
3. धन्नावह सेठ पुत्रोत्पत्ति से क्यों प्रसन्न था।
4. अर्थ बताइये- कोटीश्वर, अक्षय, भाग्योदय, धनोपार्जन, श्रेष्ठी।
5. इस कहानी से मुहावरे लिखो।
6. सप्त कुव्यसन लिखिये।
7. सर्प के 5 पर्यायवाची लिखिए।

बाल-स्तम्भ [अगस्त-२००८] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-२००८ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'राजा उदायन की क्षमा' कहानी के प्रश्नों के उत्तर २७ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २० में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	अंकिता भण्डारी-जोधपुर	१९.२५
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	पल्लवी जैन-जोधपुर	१९
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	दर्शना जैन-जोधपुर	१८.७५
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	कमलेश कुमार जैन-पादरू	१८
	श्वेता आंचलिया-नरडाणा	१७.५
	सौरभ भण्डारी-पीपाड़ शहर	१७.५
	कोमल जैन-सवाईमाधोपुर	१७.५
	दीप्ति जैन-लाडपुरा,कोटा	१७

स्वास्थ्य-विज्ञान

मेरुदण्ड की स्वस्थता के लिए उपयोगी आसन

डॉ. चंचलमल चोरडिया

मेरुदण्ड का नाड़ी संस्थान से गहरा सम्बन्ध होता है। हमारी सारी संवेदनाओं का आदान-प्रदान नाड़ी संस्थान के माध्यम से होता है। नाड़ी संस्थान के नियन्त्रण में मेरुदण्ड की अहं भूमिका होती है। सीधी कमर न बैठने, वजन उठाने, झुक कर चलने अथवा अन्य किसी कारण से मेरुदण्ड के खिंचाव आ जाने से मेरुदण्ड बराबर कार्य नहीं करता। सरवायकल स्पोन्डोलायसिस, साइटिका, स्लिप डिस्क, घुटनो एवं जोड़ों में दर्द आदि रोगों का कारण मेरुदण्ड की खराबी ही होती है। मेरुदण्ड की क्षमता का आगे निरूपित विधि द्वारा पता लगाया जा सकता है।

रोगी को पीठ के बल सीधा पालकी आसन में लेटा दें तथा उसकी दोनों हथेलियों की अंगुलियों को आपस में फंसाकर गर्दन के नीचे रखावें। अब रोगी को कमर के बल बिना कोई सहारा लिये बैठने को कहें। यदि इस स्थिति में रोगी बैठ सकता है तो उसका मेरुदण्ड प्रायः अच्छा होता है और ऐसी स्थिति में रीढ़ का रोग ज्यादा पुराना नहीं होता। परन्तु यदि इस ढंग से रोगी न उठ सके तो मेरुदण्ड की कार्य क्षमता लगभग 10 प्रतिशत कम हो जाती है।

दूसरी स्थिति में पैरों को सीधा करके हथेलियों को पहले की भांति गर्दन के नीचे रखते हुये रोगी को बिना सहारा दिये बैठने को कहें। यदि रोगी इस स्थिति में भी न उठ सके तो मेरुदण्ड की क्षमता लगभग 15 से 20 प्रतिशत कम हो जाती है।

तीसरी स्थिति में दोनों हाथों को जमीन से स्पर्श करते हुए सिर से ऊपर पूरा ले जाते हुये रोगी को पीठ के बल लेटने को कहें। यदि इस स्थिति में भी बिना सहारा रोगी न बैठ सकता हो तो मेरुदण्ड की क्षमता 20 से 30 प्रतिशत के लगभग कम हो जाती है। तत्पश्चात् रोगी के दोनों टखनों को दूसरा व्यक्ति दबा कर रखे, फिर भी रोगी न बैठ सके तो मेरुदण्ड में 35 से 40 प्रतिशत असंतुलन समझना चाहिये। यदि रोगी के दोनों घुटनों को दबाये रखने के बावजूद भी रोगी न बैठ सके तो मेरुदण्ड में 40 से 50 प्रतिशत या उससे अधिक खराबी की संभावना रहती है।

जितना अधिक असंतुलन होगा, रोग उतना ही पुराना एवं संक्रामक होगा

और उपचार में समय भी उसके अनुपात में अधिक लगेगा।

मेरुदण्ड के घुमावदार व्यायाम

योगमहर्षि स्वामी देवमूर्तिजी द्वारा अन्वेषित मेरुदण्ड के घुमावदार आसनों से रीढ़ के मणकों में आया तनाव, खिंचाव और विकृति सरलतापूर्वक दूर की जा सकती है। इन आसनों को स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, स्वस्थ और रोगी सभी आसानी से कर सकते हैं। इनके नियमित अभ्यास से रोगी के मेरुदण्ड संबंधी विविध रोग ठीक हो जाते हैं तथा निरन्तर स्वस्थ बने रह सकते हैं। जैसे हजार रुपयों के सिक्कों के बोझ को हजार के नोट में बदल कर व्यक्ति भार से बच जाता है, उसी प्रकार वर्तमान में प्रचलित विविध व्यायामों का संयुक्त लाभ अकेले मेरुदण्ड के इन घुमावदार व्यायामों से मिल जाता है।

मनुष्य को छोड़कर सभी प्राणियों की रीढ़ की हड्डी क्षितिज के समानान्तर होती है। अतः चलने फिरने में उनके मणके स्वयं हलचल में आ जाते हैं। परिणाम स्वरूप उनकी सुषुम्ना नाड़ी की सुप्त शक्तियाँ स्वयं जागृत हो जाती हैं। यही कारण है कि अन्य जीवों को मनुष्य की अपेक्षा स्नायु-सम्बन्धी रोग कम होते हैं। मनुष्य में भी रीढ़ के विविध धुमावदार आसनों को नित्य विधिपूर्वक करने से उनमें भी सुषुम्ना शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं, ऊर्जा चक्र सक्रिय होने लगते हैं एवं स्नायु संस्थान ताकतवर होने से, स्नायु संबन्धी रोगों के होने की संभावनाएँ बहुत कम हो जाती हैं।

हम देखते हैं कि घोड़ा दिन भर बोझा खींचता है, जिससे उसकी रीढ़ के मणके आपस में चिपक जाते हैं। सायंकाल वह जमीन पर लेटकर मस्ती से अपने शरीर को दायें बायें करता है, जिससे उसके मणकों में आया तनाव, विकृति और खिंचाव दूर हो जाता है, मणके अपने स्थान पर आ जाते हैं। उसकी सारी थकान दूर हो जाती है। यदि हम भी घोड़े की तरह रीढ़ की हड्डी को सुबह-शाम लेटकर 'ठोडी दायें तो घुटना बायें' और 'घुटना दायें तो ठोडी बायें' घुमाना प्रारम्भ कर दें तो मेरुदण्ड में आई विकृतियाँ दूर हो जाती हैं।

रीढ़ के घुमावदार व्यायाम करने के लिये सर्वप्रथम दोनों हाथ कन्धों के बराबर फैलाकर एक दम सीधा पीठ के बल जमीन पर लेट जाना चाहिए। इस व्यायाम की विविध स्थितियाँ होती हैं। जिसमें पैरों की ही स्थितियाँ अलग-अलग ढंग से बदली की जाती हैं। गर्दन को घुमाने का एक ही तरीका और नियम होता है।

जब पैरों को बायीं तरफ घुमाया जाता है तो गर्दन को दाहिनी तरफ मोड़कर, ठोढ़ी को कंधों से स्पर्श किया जाता है। जब पैरों को दाहिनी तरफ घुमाया जाता है, तो गर्दन को उसी ढंग से बायीं तरफ घुमाया जाता है।

प्रथम स्थिति में पैरों की दोनों एडियों के बीच पगथली के बराबर दूरी रखी जाती है तथा एक पगथली की अंगुलियों को बारी-बारी से दूसरे पैर की एडी से स्पर्श किया जाता है तथा गर्दन को उसके विपरीत दिशा में घुमाया जाता है।

दूसरी स्थिति में दोनों टखनों एवं पगथलियों को पास-पास में रखकर अंगुलियों को एक बार बायीं, फिर दाहिनी तरफ, बारी-बारी से जमीन को स्पर्श किया जाता है तथा साथ ही साथ गर्दन को विपरीत दिशा में घुमाया जाता है।

ठीक इसी प्रकार तीसरी स्थिति में एक पगथली के ऊपर दूसरी पगथली रख कर, चौथी स्थिति में पैर के अंगूठे और उसके पास अंगुलि के बीच दूसरे पैर की एडी को बारी-बारी से रख, पाँचवी स्थिति में दोनों घुटनों को पास-पास खड़ा कर दोनों पैरों को आपस में स्पर्श करते बारी-बारी से बायें दाहिने जमीन को स्पर्श कराया जाता है। पाँचवें आसन को क्वीन एक्सरसाइज (रानी आसन) भी कहते हैं।

इस प्रकार छट्ठी स्थिति में दोनों घुटनों को कुछ दूरी पर खड़ा रख पगथली को जमीन से स्पर्श कर पैर को बायें दाहिने घुमाते हुये, एक घुटने को जमीन तथा दूसरे को पहले पैर की एडी से बारी-बारी स्पर्श कराया जाता है। इस आसन को किंग एक्सरसाइज (राजा आसन) भी कहते हैं।

सातवीं स्थिति में एक पैर को सीधा रख दूसरे पैर की पगथली को उसके घुटने के पास रख कर, दूसरे पैर के घुटने को दूसरे पैर की दिशा में जमीन से बारी-बारी स्पर्श कराया जाता है। आठवीं स्थिति में दोनों घुटनों को छाती से स्पर्श करते हुये बायीं दाहिनी तरफ पैरों व गर्दन को घुमाया जाता है।

दसवी स्थिति में पवन मुक्तासन की स्थिति में दोनों हथेलियों से घुटनों को पकड़ सीने से चिपकाते हुये बायें दाहिने पैरों की तरफ सारे शरीर को घुमाया जाता है और अंत में सीधा पवन मुक्तासन किया जाता है।

व्यायाम करते समय ध्यान रखने योग्य सावधानियाँ

प्रत्येक आसन के पश्चात् कुछ समय शवासन करना चाहिये। प्रत्येक आसन को कम से कम 15 से 25 बार करना चाहिये। इन आसनों का अभ्यास प्रायः

प्रातः मल-त्याग के पश्चात् खाली पेट करना चाहिए। परन्तु जिन्हें कब्ज की शिकायत रहती है, उन्हे उषापान करने के पश्चात् इन आसनों को करना अधिक गुणकारी होता है। महिलाओं द्वारा मासिक धर्म के दिनों में एवं गर्भावस्था के तीन मास पश्चात् तथा किसी भी व्यक्ति के द्वारा शल्य चिकित्सा के तुरन्त पश्चात् अथवा फ्रेक्चर होने की स्थिति में इन आसनों को नहीं किया जाना चाहिये।

प्रत्येक व्यायाम श्वास भर कर करने से अधिक लाभकारी होता है, परन्तु जिन्हें इसमें कठिनाई हो, वे साधारण स्थिति में भी इन आसनों को कर सकते हैं। आसन करते समय शरीर के साथ किसी प्रकार की जोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। सहजता एवं सरलता से शरीर जितना घुमाया जा सकता है, उतना ही घुमाना चाहिए। जिन व्यक्तियों के मेरुदण्ड के मणकों में लोच की कमी होती है, या बायें-दायें करने में कष्ट होता है, उन्हें धीरे-धीरे जितना बायें-दायें कर सकते हैं करना चाहिए अर्थात् झटका न दें और न ही देर तक किसी एक कष्टदायक स्थिति में रुकें और न ही शरीर के उस भाग को जबरदस्ती जमीन तक ले जाने की कोशिश करें। घुमाते समय धीरे-धीरे दायें-बायें जाना चाहिए अर्थात् किसी प्रकार का झटका नहीं देना चाहिए। घुमाते समय शरीर की जिन मांसपेशियों में दर्द हो, वे मांसपेशियाँ शरीर में रोगों से संबंधित होती हैं। उन मांसपेशियों का उपचार करने से रोग में तुरन्त आराम मिलता है। उन दर्दयुक्त मांसपेशियों के उपचार हेतु एक्यूप्रेशर, चुम्बक, मेथी एवं खिंचाव जैसी सरल स्वावलंबी चिकित्साओं का सहयोग लिया जा सकता है।

जिन व्यक्तियों को अनिद्रा की शिकायत हो, उन्हें निद्रा से 4 घंटे पूर्व भोजन कर लेना चाहिए। निद्रा से पूर्व इन व्यायामों को करने से व्यायाम करते-करते ही निद्रा आने लग जाती है। नियमित इन आसनों के करने से बौने बच्चों की लम्बाई-बढ़ने लगती है। नाभि अपने स्थान पर आ जाती है। कब्ज, गैस, थकावट, आलस्य, अनिद्रा, मोटापा, मधुमेह आदि रोगों; नाड़ी संस्थान, मेरुदण्ड एवं एडी से लगाकर गर्दन तक के विविध अन्य रोगों में लाभ होता है।

-चोरडिया भवन, गोल बिल्डिंग रोड, जोधपुर-342003(राज)
फोन : 0291-2621454, मोबाइल : 9414134606, फेक्स : 0291-2435471

संवाद (16)

जून २००८ की जिनवाणी में सत्य बोलने के नियम का व्यापक स्वरूप समझने के सम्बन्ध में जिज्ञासा की गई थी। उसके समाधान जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर २००८ के अंकों में प्रकाशित किए गए हैं। उसी शृंखला में देवेन्द्र भारती, अगस्त २००८ के अंक से उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. के लेख का अंश प्रकाशित है। *-सम्पादक*

कई तथाकथित श्रावक लोग आज व्यापार आदि में बोले जाने वाले असत्य को अल्प झूठ में शुमार करके हजारों रुपये कमाते हैं तथा जहाँ-जहाँ असत्य बोलने से अपना स्वार्थ सिद्ध होता हो, वहाँ-वहाँ असत्य बोलने से भी प्रायः नहीं हिचकिचाते। परन्तु इस व्रत की मर्यादा में पैसों के लेन-देन, स्वार्थसिद्धि व किसी साधारण लाभ के लिए असत्य बोलना वर्जित है। इसी प्रकार सरकार की कर-चोरी, तस्करी, चोरबाजारी, हेराफेरी, सरकारी कानून भंग आदि सब गुनाह स्थूल असत्य में शुमार हैं।

अपने स्वार्थ के लिए सत्य को छोड़ देना अनुचित है। अहमदाबाद में रावजी भाई पटेल रहते थे। उनके पिता मणिभाई पटेल की एक व्यक्ति ने हत्या कर दी। पुलिस ने हत्यारे को पकड़ा और उस पर मुकदमा चलाया। लेकिन कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न मिलने पर पुलिस ने रावजी भाई को झूठे प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए कहा। इस पर रावजीभाई ने जो उत्तर दिया, वह अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा- ''हत्या तो मेरे पिता की हुई है। अतः मुझे जितना दुःख हो सकता है, उतना दूसरे को न होना स्वाभाविक है। मेरे पिता की हत्या करने वाले की हत्या करने के लिए मैं मिथ्या प्रमाण पेश करके सत्य की हत्या नहीं करना चाहता। मैं मनुष्य की हत्या से बढ़कर भयंकर सत्य की हत्या को मानता हूँ। अतः मैं कोई प्रमाण पेश नहीं कर सकता।'' यह उत्तर सुनकर पुलिस अधिकारी स्तब्ध हो गया।

किसी गृहस्थ श्रावक का लड़का बीमार है। उसकी बीमारी असाध्य है। डॉक्टर आया और रोगी को देखकर उसके पिता को एक ओर ले जाकर कहा- ''यह बच नहीं सकता। अब यह घड़ी दो घड़ी का मेहमान है'' बीमार पूछता है- ''डॉक्टर साहब मेरे लिए क्या बता गए?'' अब यदि वह रोगी को सच-सच बता देता है 'कि तू बच नहीं सकता घड़ी-दो-घड़ी का मेहमान है' तो रोगी को गहरा धक्का लग सकता है और अत्यन्त शोक एवं आघात से उसकी हृदयगति अवरुद्ध हो सकती है। इस प्रकार बीमार पर विपत्ति आ पड़ने की शंका होने से विवेकी

श्रावक ऐसे समय में सच कहकर रोगी को मुसीबत में डाल नहीं सकता।

इस प्रकार की आपत्ति आने पर जैन धर्म सत्य के विषय में गृहस्थ की मर्यादाएँ बताता है और ऐसा करना उचित भी है। गृहस्थ को अपने राष्ट्र, अपने समाज और परिवार की रक्षा के लिए ऐसे मौके पर सत्य की मर्यादाओं को स्वीकार करना पड़ता है।

अगर कोई नागरिक किसी दूसरे (शत्रु) देश में गिरफ्तार हो जाय और शत्रु देश को कोई सैन्य अधिकारी उससे देश की गुप्त बातें खोल-खोलकर बतला दे, तो उस पर या उसके देश पर मुसीबत आ सकती है। सत्य बताने पर देश मुसीबत में पड़ता है और झूठ कहने पर व्रत खतरे में पड़ता है। ऐसे संकटापन्न समय में 'शास्त्र' गृहस्थ श्रावक की सत्य की मर्यादा में कहते हैं- 'रहस्याभ्याख्यान' रहस्य (गुप्त) बात को प्रकट कर देना गृहस्थ के लिए सत्यव्रत का अतिचार है।

हाँ, अगर उसकी मृत्यु के स्वीकार करने की तैयारी है तो वह साफ-साफ कह देगा कि मुझे मौत मंजूर है, मगर देश की गुप्त बात बतलाना कतई मंजूर नहीं है। अगर उस गृहस्थ की भूमिका इतनी ऊँची नहीं है। उसकी तैयारी मृत्यु का वरण करने की नहीं है, उस गृहस्थ के लिए सत्य की सीमा बाँध दी है कि जितना चल सके, उतना ही चले।

तात्पर्य यह है कि सत्य की जितनी भी मर्यादाएँ हैं या सत्य के विषय में जितनी छूटें दी गई हैं, वे हर समय के लिए उत्सर्ग मार्ग के रूप में नहीं दी गई हैं। वे सब अपवादस्वरूप हैं और अपवाद का प्रयोग क्वचित् ही किया जा सकता है।

(क्रमशः)

नया प्रश्न

क्या जैन धर्म ईश्वर (God) को स्वीकार नहीं करता है? यदि वह ईश्वर को स्वीकार नहीं करता है तो 'भगवान्', 'परमपिता', 'परमात्मा' 'प्रभु' 'नाथ' आदि शब्दों का प्रयोग क्यों किया जाता है? मेरी सीमित समझ में हम सब आत्माओं से ऊपर एक परम-आत्मा है, जो निराकार, ज्योतिर्मय एवं बिन्दुस्वरूप है और वही आत्मा समय-समय पर आकर इस संसार को बोध देती रहती है। क्या यह सही नहीं है?

- मोतीचन्द नवलखा, मुम्बई

इस प्रश्न के उत्तर हमें यथाशीघ्र इस पते पर प्रेषित करें, ताकि आगामी अंक में उत्तर सम्मिलित किए जा सकें - *डॉ. धर्मचन्द जैन, 3 के 24-25, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर (राज.) 342005*

आओ स्वाध्याय करें - १९

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१९)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (१९) का आयोजन 'जिनवाणी' के जुलाई-अगस्त-सितम्बर २००८ के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल ५० प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, १९२ बी, मीटर गेज रेलवे कॉलोनी, बजरिया-३२२००१, सवाईमाधोपुर, फोनं. ९४६०४४१३५१** के पते पर **१५ नवम्बर २००८** तक मिल जाने चाहिए। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को क्रमशः १००१ रुपये, ५०१ रुपये एवं २५१ रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। १०० रुपये के १० प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जायेंगे। ये सभी पुरस्कार १५ से ४५ वर्ष के युवा श्रेणि के उत्तरदाताओं को भी अलग से दिए जायेंगे। इस प्रकार पुरस्कारों की संख्या २६ हो गई है। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांकं व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। -सम्पादक

(क) मुझे पहचानो-

01. मैं सारे दोषों का कारण हूँ।
02. मेरा नियम आना और जाना है।
03. मैं मनुष्य की स्वतंत्रता एवं आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचाता हूँ।
04. मेरी उपेक्षा से तनाव हो सकता है।
05. दोषरहित प्रभावयुक्त आहार से आदमी मुझ पर काबू पा सकता है।
06. मेरे बिना जीवन में धर्म को व्याप्त नहीं किया जा सकता।
07. कर्म मैल को मुझसे धोया जाता है।
08. मुझे मत करो, मुझमें नहीं है कुछ सार।
09. हमारी संस्कृति के सजग प्रहरी।
10. कर्मवाद जैसा गम्भीर विषय मेरे रूपक से समझाया गया है।

(ख) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

11. भगवान् महावीर को किस आसन में ध्यान करते हुए केवलज्ञान हुआ था?

12.परम गुरु माता हो। कौन?

13.जो धर्म प्रधान, कर्म प्रधान और भोग प्रधान होता है।

14.कुमतिवश पाप कर्म से धनोपार्जन करने वाला किस गति का मेहमान होता है?

15.यह शांति, मुक्ति, भक्ति व परमात्म पद के पाने का पवित्र मार्ग है?

16.पाँच प्रकार के वर्ण वाले मेघों को किस प्रकार के रंग की उपमा दी गई है?

17.वह एक कोशिका जिससे विषाणु का शरीर बनता है?

18.जो प्रवृत्ति जीवन के लिए विपत्ति रूप होती है।

19.गद्य-पद्य मिश्रित जैन कथा साहित्य का दूसरा नाम क्या है?

20.मन से आसक्ति की ज्वाला बुझा देने का नाम है?

(ग) रिक्त स्थान भरिए-

21. जैन दृष्टि से तनाव का मूल कारण.....है।

22.....कार्यों में अपने वीर्य को छुपाना माया है।

23.विकृति के बाजार में.....सुसंस्कृति का शंखनाद है।

24.लक्ष्य की प्राप्ति के लिए.....की व्याकुलता जगनी चाहिये।

25.निमित्त विद्या का आश्रय लेकर जो व्यवहार चलाता है वह.....है।

26.जन्म और मरण के बीच के पृष्ठों में.....चलता है।

27.जिसकी होती है.....उसे सुनने को मिलता है जिनवाणी।

28.दसों ही प्राण प्रमुख है, पर.....बलप्राण सबसे प्रमुख है।

29.जब सामान्य और विशेष एक-दूसरे के प्रति सापेक्ष होते हैं तब.....कहलाते हैं।

30.एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी.....है।

(ङ) अंकों में उत्तर दीजिए

31.कितने द्रव्य तुल्य हैं?

32.'आओ प्रत्याख्यान करें' कविता में प्रत्याख्यान शब्द कितनी बार आया है?

33.गौतम लुणावत कितने वर्षों से जिनवाणी पढ़ रहे हैं?

34.आजीवक मतानुसार कितने समवाय अनुकूल होने पर कार्य सिद्धि होती है।

35.'आओ स्वाध्याय करें' प्रतियोगिता क्रमांक.....को मैं हल कर रहा हूँ।

36.संयमी साधक कितने प्रकार की भाषाओं का वर्जन करते हैं?

37.'प्रतिक्रमण' में कितनी बातों को प्रतिक्रमण बतलाया गया है?

38.एक जीन पर कितने आदेश लिखे हुए होते हैं?

39.अमेरिका में प्रतिदिन भोजन के लिए कितने प्राणियों का हनन होता है?

40. वासुदेव श्री कृष्ण कितने करोड़ यादवों के स्वामी थे?

(ङ) हाँ/ना में उत्तर दीजिये।

41. चारित्र मोहनीय कर्म व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि को सम्यक् नहीं होने देता।
42. नियति के विधान को पुरुषार्थ भी अन्यथा नहीं कर सकता है।
43. जीवन बनाने की अपेक्षा जीवन चलाना महत्त्वपूर्ण है।
44. प्रलोभन के प्रतिकार का प्रत्येक क्षण सफलता का द्वार खोलता है।
45. देवता पर्युषण में नंदीश्वर द्वीप पर व्रताराधना करते हैं।
46. सम्यक् शब्द का अर्थ है ठीक-ठाक।
47. मतिज्ञानी आहार को अपनी जिह्वा लोलुपता की पूर्ति का साधन समझता है।
48. जब स्थानक कच्चे थे तो श्रावक पक्के थे।
49. आत्मिक आनन्द एवं सच्चा सुख साधना में नहीं साधनों में है।
50. जब-जब संकट आता है तो तीर्थंकर जन्म लेते हैं।

जिनवाणी पाठकों एवं आजीवन सदस्यों हेतु सूचनाएँ

१. जिनवाणी मासिक पत्रिका में सितम्बर २००८ से कुल १३२ पृष्ठ हो गए हैं। इससे पाठ्यसामग्री अधिक उपलब्ध हो सकेगी।

२. जो जिनवाणी के आजीवन-सदस्य बने हैं, उनकी सदस्यता नियमानुसार निधनोपरान्त समाप्त हो जाती है, किन्तु जिनवाणी कार्यालय को इसकी सूचना भिजवाने का नैतिक दायित्व परिवारजनों का होता है। वे जिनवाणी यदि निरन्तर मंगवाना चाहते हैं तो उन्हें आजीवन-सदस्यता का सहर्ष नवीनीकरण करा लेना चाहिए। आशा है आगे से जिनवाणी के सदस्य स्वेच्छा से निधन-सम्बन्धी सूचना अवश्य प्रेषित करेंगे तथा सदस्यता का नवीनीकरण स्वरुचि से करायेंगे।

३. जिनवाणी के जो नए सदस्य बन रहे हैं, वे कृपया अपने पूर्ण पते के साथ फोन नं. भी सूचित करें। वैधानिक रूप से भी इसकी आवश्यकता है।

४. जिन सदस्यों को जिनवाणी प्राप्त नहीं हो रही हो अथवा पता परिवर्तित हो गया हो, वे जयपुर कार्यालय को सूचित करें ताकि समय पर जिनवाणी मिल सके।

-मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

फोन : 0141- 2575997

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की अस्थायी वरीयता सूची

(27 जुलाई 2008 परीक्षा)

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 27 जुलाई 2008 को आयोजित कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा की अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है।

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
8392	सुनन्दा बसन्त जी जैन	गोरेगांव	99.5	प्रथम
5213	मिश्रीदेवी विमलप्रकाश जी जैन	डीग(भरतपुर)	99	द्वितीय
5143	नीता संजीव जी डागा	बैंकॉक	98.5	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

3865	आरती राजेन्द्र जी मुथा	अमरावती	99.5	प्रथम
3922	आरती निलेश जी मुथा	अंबाजोगाई	99	द्वितीय
9126	शिल्पा जी बागरेचा	शिमोगा	98.5	तृतीय
4662	रिनु कोमल कुमार जी जैन	मुडियासाद	98.5	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

7064	नीलू सुमित जी डागा	बीकानेर	99.5	प्रथम
6116	करूणा अरूणलाल जी डोसी	गंगाधाम, पूना	98.5	द्वितीय
5657	प्रीति दिलीपचन्द जी कटारिया	पांढरकवड़ा	97.5	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

9109	शीला संजय जी श्रीश्रीमाल	दुर्ग	98	प्रथम
8862	निर्मला प्रकाशचन्द जी संकलेचा	चेन्नई	97	द्वितीय
3472	पारुल नवलकिशोर जी जैन	अलवर	96	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

5321	लीला गुलाबचन्द देशलहरा	गुन्डरदेही	94	प्रथम
9131	विरक्ता एलिजा जैन	हिण्डौन सिटी	93.5	द्वितीय
344	सपना धर्मचन्द जी पितलिया	डूंगला	93	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

285	ममता मोहनलाल जी लुंकड़	भोपालगढ़	99.5	प्रथम
5766	सुनिता अजयकुमार जी रूणवाल	बीजापुर	98.5	द्वितीय
8912	निधि प्रमोद जी सुराणा	अलवर	97	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

6881	अर्चना अशोक कुमार जी तालेरा	चिदम्बरम	95	प्रथम
7454	मनीषा दिलीप जी शाह	नागपुर	94.5	द्वितीय

2950	कविता पंकज जी लोढ़ा	शिर्डी	94	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

6249	सरला सुन्दरलाल जी हींगड़	मैसूर	98.5	प्रथम
4175	सुव्रत भगवानदास जी	टोहाना	98	द्वितीय
2010	ज्योति गौतमचन्द जी तालेड़ा	कुकनूर	97	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

8600	कविता मनोज कुमार जी जैन	मुणोतविला, मुम्बई	97	प्रथम
688	कुसुम परेश जी पुनमिया	इचलकरंजी	96	द्वितीय
7646	प्रेम कुशलचन्द जी संचेती	अलवर	94.5	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर- उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

2243	संतोष मदनलाल जी सोनीगरा	पेरम्बूर	93	प्रथम
7647	मंजू योगेशचन्द जी पालावत	अलवर	86	द्वितीय
2219	नमिता निर्मल कुमार जी संचेती	रायपुरम	83	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर- पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं कक्षा)

3076	वर्षा अशोक जी सुराणा	घोटी	92	प्रथम
3073	पुष्पा नवसुखलाल जी पींचा	घोटी	89	द्वितीय
7284	राजुबाई रमेशचन्द जी कोठारी	धुलिया	88.5	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-उत्तरार्द्ध (बारहवीं कक्षा)

2332	कौशल्या संजय कुमार जी सिंघवी	चेन्नई	88	प्रथम
8915	शर्मिला बसन्त जी सिंघवी	जयपुर	82	द्वितीय
6388	किरण प्रकाशचन्द जी बोथरा	वैजापुर	81	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री-पूर्वार्द्ध (तेरहवीं कक्षा)

5725	चन्द्रकला सुरेश जी कांकरिया	पिपलगांव बसवन्त	92.5	प्रथम
244	सुनीता संजय जी डोसी	ब्यावर	91.5	द्वितीय
8083	ज्योति विजयकुमार जी गादिया	भुसावल	90.5	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री-उत्तरार्द्ध (चौदहवीं कक्षा)

1263	कंचनबाई मिश्रीलाल जी चौपड़ा	जलगाँव	95	प्रथम
4594	कुमकुम त्रिलोकचन्द जी जैन	सवाईमाधोपुर	90	द्वितीय
1949	कंचनदेवी हिम्मतमल जी लोढ़ा	चेन्नई	88	तृतीय

सुशीला बोहरा
संयोजक
9414133879

राजेश कर्णावट
सचिव
9414128925

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार
9351589694

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

बड़ी साधुवन्दना कथा-संग्रह- मुथा श्री चांदमल राठौड़, ***सम्पादक***- उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' ***प्रकाशक***- श्री वर्धमान महावीर केन्द्र, सब्जी मण्डी के सामने, आबू पर्वत, राजस्थान-307501 ***दूरभाष***- 02974-235566, ***पृष्ठ*** 32+560, ***मूल्य*** 150 रुपए, ***संस्करण***- 2007

आचार्य श्री जयमल जी महाराज द्वारा रचित 'बड़ी साधु वन्दना' एक लोकप्रिय रचना है, जिसमें 111 पद्य हैं। इसमें आगम के अनेक कथाप्रसंगों का संकेतात्मक उल्लेख किया गया है। उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' के सम्पादकत्व में इस 'बड़ी साधु वन्दना' की कथाओं का संग्रह प्रकाशित हुआ है, कथाओं का लेखन सादड़ी-मारवाड़ निवासी मुथा श्री चांदमल जी राठौड़, कोयम्बतूर ने सरल एवं हृदयग्राही भाषा-शैली में किया है। पुस्तक में कई उपयोगी सारणियाँ दी गई हैं तथा कथानक एक साथ उपलब्ध होने से पाठकों को सुविधा हो गई है।

हीरा-प्रवचन पीयूष (भाग-4) - प्रवचनकार- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., ***आशुलेखन एवं सम्पादन***- श्री नौरतन मेहता, ***प्रकाशक*** - सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003, ***दूरभाष*** - 0141-2575997, ***फैक्स***-0141-2570753, ***पृष्ठ***-12+278, ***मूल्य*** - 15 रुपये (जिल्दयुक्त) ***सन्***- 2008

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 31 प्रवचनों से समन्वित इस पुस्तक में सम्यग्दर्शन, विनय, दान, करुणा, सहनशीलता, पाप-परित्याग, पूर्वकृत कर्म, तप, ज्ञानाराधन, पुरुषार्थ-पराक्रम, अहिंसा, इच्छा-निरोध, समाचारी, धर्मशीला नारी, आत्मालोचन, व्रत-पालन, दुर्व्यसन आदि विषयों पर हृदयस्पर्शी, प्रवाहमयी एवं सरलभाषा में प्रकाश डाला गया है। आचार्यप्रवर के ओजस्वी प्रवचन व्यक्ति को उन्मार्ग से सन्मार्ग पर आने की प्रेरणा करते हैं। जिल्दयुक्त इस 290 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य 15 रुपये अतीव अल्प रखा गया है।

उत्तराध्ययन सूत्र (भाग-2)- आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज के तत्त्वावधान में पद्यानुवाद- पं. शशिकान्त झा, ***प्रकाशक*** -सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003, ***दूरभाष*** - 0141-2575997, ***फैक्स***-0141-2570753, ***पृष्ठ*** - 24+508, ***मूल्य*** - 50 रुपये, ***चतुर्थ संस्करण*** -2008

मूल प्राकृत, संस्कृत-छाया, हिन्दी पद्यानुवाद, अन्वयार्थ, भावार्थ एवं कथा से युक्त उत्तराध्ययन सूत्र के इस द्वितीय भाग में 11 से 22 अध्ययनों का सारगर्भित विवेचन है। सम्पूर्ण उत्तराध्ययन सूत्र 36 अध्ययनों में विभक्त है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने इन्हें तीन भागों में व्यवस्थित रीति से अधिक उपयोगी रूप में प्रकाशित किया है।

प्रसादलहरी- श्री रामप्रसाद जी महाराज, ***संकलनकर्ता एवं प्रकाशक***- डॉ. ए.पी.जैन, जे-6/74, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110027, ***दूरभाष***- 011-25458951, 09891638538 ***पृष्ठ***- 545, ***मूल्य***- स्वाध्याय,चिन्तन-मनन, ***संस्करण***-जून 2007

श्री रामप्रसाद जी महाराज की पंजाब में अच्छी ख्याति है। प्रसादलहरी में उनके 525 से भी अधिक भजनों का सुन्दर संकलन है। डॉ. ए.पी. जैन ने इस पुस्तक का प्रकाशन अपनी धर्मपत्नी डॉ. (श्रीमती) शकुन्तला जैन की पुण्य स्मृति में किया है।

संघ-परिचय विवरणिका प्रकाशित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा 'संघ परिचय विवरणिका' का प्रकाशन किया गया है। इस विवरणिका में रत्नसंघ परम्परा के आचार्यों, वर्तमान संत-सतीवृन्द, पूर्व संघाध्यक्षों, कार्याध्यक्षों, महामंत्रियों आदि के कार्यकाल, वर्तमान संरक्षक, शासन सेवा समिति के सदस्यों व ट्रस्टियों की सूची के साथ ही संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी का प्रकाशन किया गया है। इसके अतिरिक्त समस्त सम्बन्धित पदाधिकारियों, सदस्यों, संस्थाओं आदि के नाम, पते व दूरभाष नम्बर भी अंकित है। इससे पारस्परिक सहज परिचय होने के साथ सम्पर्क साधने में भी सुविधा रहेगी।

-नवरतन डागा, महामंत्री

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर का मुम्बई चातुर्मास सफलता की ओर अग्रसर

परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 का कल्पतरु गार्डन, कांदिवली, मुम्बई का चातुर्मास शासन प्रभावना की दृष्टि से सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की मंगल-साधना में विशाल जनमेदिनी का स्वप्रेरित अनुशासन के साथ धर्म-साधना में सक्रियता-सजगता का सुन्दर वातावरण अपने-आपमें अद्वितीय उपलब्धिपूर्ण रहा। प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, शास्त्रवाचन, ध्यान-साधना, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों में आबाल-वृद्ध सबकी रुचि व भावना अनुपम रही। ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में मुम्बई में जहाँ सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल सीखने वालों की अच्छी संख्या है वहीं आगम-शास्त्र के अभ्यास में कतिपय ज्ञान-पिपासुओं की रुचि प्रेरणादायी कही जा सकती है। श्रावण-भाद्रपद में मौन सहित 41 की तपश्चर्या के साथ मासखमण तप की आराधनाएँ हुईं तो अब भी मासखमण तप की साधनाएँ चल रही हैं। श्रीमती विजयलक्ष्मी जी महावीरचन्द जी बाफना ने मासखमण तप किया, एक बहिन के मासखमण चल रहा है। उपवास, बेले, तेले, पाँच, आठ की सैकड़ों तपश्चर्याएँ तो हुई ही, संवर-पौषध की रिकॉर्ड साधना इस वर्षावास की विशेष उपलब्धि रही। कल्पतरु गार्डन का विशाल प्रांगण और स्थान की अनुकूलता के साथ परठने-परठाने की पर्याप्त एवं समुचित व्यवस्था से संवर-पौषध साधना में श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। मुम्बई में पचरंगी, नवरंगी, ग्यारहरंगी के श्रावक-श्राविकाओं में अलग-अलग आयोजन अजूबा से कम नहीं है। मुम्बई में संवर-पौषध की साधना प्रायःकर नहींवत् होती है क्योंकि परठने की व्यवस्था कम ही देखी जाती है, किन्तु यह कमी यहाँ नहीं रही। व्रत-प्रत्याख्यानों में आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द की प्रेरणा से जीवन में लगे अतिचारों की शुद्धि हेतु कई श्रावक-श्राविकाओं ने जीवन में हुई भूल की धूल को साफ कर व्रत-आराधन के साथ मर्यादित जीवन जीने का संकल्प लिया और इस तरह का अभियान निरन्तर चल रहा है। वस्तुतः

यह अनुकरणीय सद्प्रयास मुम्बई चातुर्मास की उपलब्धि के रूप में याद किया जायेगा।

प्रवचन में नित्यप्रति तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. सुखविपाक सूत्र के माध्यम से श्रावक के व्रत विषय पर गहन चिन्तन प्रस्तुत कर रहे हैं। तत्त्वचिन्तक मुनि श्री की प्रज्ञा-प्रतिभा से सभी भली-भाँति परिचित हैं फिर मुनिश्री का प्रभावी प्रस्तुतीकरण इतना सजीव होता है कि विशाल जनमेदिनी में कहीं से जरा-सा भी व्यवधान नहीं होता। नियत-निर्धारित समय पर प्रवचन का प्रारम्भ व समापन घड़ी की सुइयों से आगे-पीछे प्रायःकर नहीं होता। रविवारीय अवकाशों, पर्व दिवसों एवं महापुरुषों के विशिष्ट दिनों के साथ पर्युषण पर्व पर पूज्य आचार्यप्रवर के प्रेरक एवं प्रभावी प्रवचनामृत का पान कर जन समुदाय अत्यन्त हर्षित है कि पूज्य गुरुवर्य ने मुम्बई महानगर पर अनुपम कृपा बनाए रखी जो वस्तुतः प्रमोदजन्य है। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रवचन समाप्ति के पूर्व प्रवचन सभा में पधारते हैं, तपश्चर्याओं के प्रत्याख्यान के अनन्तर सामूहिक पच्चक्खाण करवाने के पूर्व चन्द शब्दों में ही सही नित्य प्रति जीवन-निर्माण की प्रेरणा करना आचार्यप्रवर का नित्यक्रम है। आचार्यप्रवर धर्म साधना-आराधना के साथ संस्कार-निर्माण की सतत प्रेरणा करते रहते हैं। संस्कारों की सुदृढ़ नींव पर ही धर्म का महल खड़ा रह सकता है इसलिए प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का संस्कार शिविर रखा जाता है। युवक-युवतियाँ जैन जीवन शैली पर आधारित जीवन जीने के अभ्यस्त हों, अतः शिविर के साथ व्यक्तिशः प्रेरणा का सुफल है कि युवा वर्ग धर्म से जुड़ता जा रहा हैं। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मि वात्सल्य सेवा, श्रुत-सेवा में मुम्बई वासियों की भावना उत्तरोत्तर प्रगाढ़ बन रही है। संघ में सेवा-भावना के कारण समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्रीसंघों एवं श्रद्धालुओं की आवभगत में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई का आतिथ्य अनुपम है। संघ हो या संघ का प्रतिनिधि मण्डल अथवा संघ सदस्य जिन्होंने भी अपने आगमन की सूचना की, दादर, कुर्ला, बान्द्रा, बोरीवली, जहाँ भी ट्रेन आती है वहाँ से गुरु भ्राताओं को कल्पतरु गार्डन तक लाना, उन्हें ठहराना, उनकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखना मुम्बई संघ की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। मुम्बई महानगर के श्रद्धालु जो अलग-अलग क्षेत्रों से गुरु चरण सन्निद्धि में आते हैं उन्हें कांदिवली स्टेशन से लाने-लेजाने की पर्याप्त व्यवस्था से हर भक्त गुरु के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सत्संग-सेवा के लाभ से लाभान्वित हो रहा है। स्थान की समुचित उपलब्धता के कारण पर्वाधिराज पर्युषण हो या संघ की वार्षिक साधारण सभा अथवा सम्मान-समारोह सभी कार्यक्रम

कल्पतरु गार्डन में संघ की मर्यादा के अनुसार भव्य रूप में आयोजित हुए। आचार्यप्रवर प्रभृति संत-मुनिराज 'ए' विंग में विराजते हैं वहाँ बिजली फिटिंग तक नहीं है। सूर्यास्त के साथ प्रवचन सभा वाला गेट पूरी तरह बन्द कर दिया जाता है। अतः संत-मर्यादा के रक्षण के साथ साधना-आराधना करने वाले श्रावकों को भी मर्यादा की सहज स्मृति नित्यप्रति होती रहती है। महासती मण्डल सी विंग में विराजित हैं, बहिनों की संवर साधना, प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम वहाँ निर्बाध चलते रहते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा 21 सितम्बर 2008 को मध्याह्न में कल्पतरु गार्डन में सानन्द सम्पन्न हुई, वार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही के अंश इस अंक में अलग से दिये जा रहे हैं।

रत्नसंघ गुणियों का सम्मान करता है। इस वर्ष आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा शोध साधना सेवा-सम्मान, स्वाध्यायी सम्मान, गुणी अभिनन्दन के अन्तर्गत संघ-सेवियों का, तपस्वियों का, साधकों का सम्मान-समारोह 20 सितम्बर को कल्पतरु गार्डन में रखा गया। सम्मान-समारोह की रिपोर्ट इस अंक में अलग से दी जा रही है। दिनांक 18 एवं 19 सितम्बर को शासन-सेवा समिति के सदस्यों ने संघ-हित चिन्तन की भावना से गहन विचार-विमर्श कर संघ के कार्यक्रमों में गुणात्मक सुधार की दृष्टि से सुन्दर सुझाव दिए।

संवत्सरी के दूसरे दिन सामूहिक क्षमायाचना का कार्यक्रम कल्पतरु गार्डन प्रवचन स्थल पर आयोजित किया गया। परमाराध्य आचार्यप्रवर, संत-सतीवृन्द ने क्षमायाचना का महत्त्व बताते हुए प्राणिमात्र के प्रति मैत्री भाव बनाए रखकर जीवन-निर्माण की प्रेरणा की। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक, संघ प्रमुख एवं संघहित चिन्तक श्री मोफतराज जी मुणोत एवं स्थानीय संघाध्यक्ष सरलहृदयी सुश्रावक श्री पारसचन्द जी हीरावत ने आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के साथ सामूहिक क्षमायाचना में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की। क्षमायाचना के प्रसंग पर कतिपय सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने भी क्षमायाचना की।

सांवत्सरिक क्षमापना के पश्चात् प्रायः प्रतिदिन समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघ एवं श्रद्धालुओं का गुरु चरण सेवा में आने का सिलसिला निरन्तर बना हुआ है। चेन्नई, बैंगलोर, जयपुर, जोधपुर, बीजापुर, बेलगांव, शिमोगा, बागलकोट, पाली, पीपाड़, ब्यावर, अजमेर, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन, भरतपुर, अमरावती, जलगाँव, धूलिया, नाशिक, जबलपुर, नागपुर, कानपुर, अहमदाबाद, सूरत, वापी,

नवसारी, डहाणु, कोटा, मदनगंज, भोपाल, इन्दौर, रतलाम, सैलाना आदि ग्राम नगरों के श्रीसंघ, संघ प्रतिनिधि मण्डल एवं श्रद्धालुओं का आवागमन बराबर बना हुआ है। मारवाड़, पल्लीवाल, पोरवाल, सिवांची, मालानी, मेवाड़, मालवा के भक्तजनों के साथ दक्षिणी पूर्वी-पश्चिमी क्षेत्रों के ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं ने गुरु दर्शन-वन्दन के साथ अपने-अपने क्षेत्रों की विनति प्रस्तुत की।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के विगत नौ वर्षों के दक्षिण भारत में विचरण-विहार में सैकड़ों ग्राम-नगरों के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं की सेवा-भक्ति के लिए एवं शासन-प्रभावना में सहयोग के लिए आभार व्यक्त करने एवं उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के बहुमान के लिए 1 व 2 नवम्बर 2008 को क्षेत्रीय सम्मेलन रखा है।

आचार्यप्रवर का कांदिवली-मुम्बई का चातुर्मास ऐतिहासिक चातुर्मास के रूप में अग्रसर हो रहा है, जिसकी सर्वत्र सराहना सुनने को मिल रही है। आचार्यप्रवर स्वयं आचार-धर्म की साधना में सजग रहते हैं और संघ-समाज में ज्ञान-क्रिया की जागरूकता बढ़े, आडम्बरविहीन साधना में समाज गतिशील हो एतदर्थ आचार्यप्रवर की प्रेरणा से सामायिक, स्वाध्याय, साधना के अनवरत नियम हो रहे हैं, वहीं शीलव्रत के खंद एवं व्रती श्रावक बनने के प्रत्याख्यान भी बराबर हो रहे हैं।

आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

सम्पर्क सूत्र-१. चातुर्मास कार्यालय : 'सी' विंग, कल्पतरु गार्डन, अशोक नगर, क्रॉस रोड नं. 3, अशोक चक्रवर्ती मार्ग, कांदिवली ईस्ट, मुम्बई, फोन-022-32170117

२. श्री पारसचन्द जी हीरावत,फोनः022-23630320,9821013530/9820631366

उपाध्यायप्रवर का सिवाना का चातुर्मास सिवांची पट्टी के लिए सुखद सुयोग

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ तथा व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के चातुर्मास के सुयोग से गढ़ सिवाना में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना की निरन्तर प्रभावना से समूची सिवांची पट्टी एवं मारवाड़ क्षेत्र को उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के यशस्वी चातुर्मास से सतत लाभ मिल रहा है। सिवांची क्षेत्र प्रतिपल स्मरणीय आचार्य

भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के उपकारों से उपकृत है। अतः रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धा-भक्ति, सेवा-भावना और आत्मीयता-अपनत्व है। गढ़ सिवाना के मूल निवासी व्यापार-व्यवसाय के लिए सुदूर प्रदेशों में रहते हैं, परन्तु जिस भक्ति-भावना से चातुर्मास करवाया उसी उत्साह से चातुर्मास की दीप्ति में जैन-जैनेतर आबाल-वृद्ध सभी सन्नद्ध हैं। गढ़ सिवाना से बालोतरा सन्निकट है तो जोधपुर-पाली भी दूर नहीं है, अतः समय-समय पर श्रद्धालु उपाध्यायप्रवर की चरण सन्निधि में पहुँच कर प्रवचन-श्रवण के साथ व्रत-नियमों की भेंट भी दे रहे हैं। पर्युषण पर्व पर गढ़ सिवाना की रौनक देखते ही बनती थी। प्रवचन में विशाल जनमेदिनी का शान्त-सहज भाव से प्रवचन श्रवण करना, प्रवचन के अनन्तर प्रत्याख्यानों में छोटे-बड़े सभी के द्वारा कोई-न-कोई नियम अंगीकार करना, दया-संवर, उपवास-पौषध में होड़-सी देखने को मिलना सिवाना श्रीसंघ की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है।

उपाध्यायप्रवर निस्पृही साधक हैं। धर्म-साधना की सतत और प्रभावी प्रेरणा से आबाल-वृद्ध सभी सहज धर्म-ध्यान में प्रवृत्त हो जाते हैं। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र मुनि जी म.सा. की प्रेरणा का सुफल है कि जनसमुदाय धर्म की ओर आकर्षित होता है और संत-मुनिराजों के पुरुषार्थ से जन-मानस सहज प्रभावित हो व्रतचरण में सक्रिय हो जाता है। व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा द्वारा बहिनों-बालिकाओं को ज्ञान-ध्यान में आगे बढ़ाने की भावना का सुफल है कि बहिनें महासती मण्डल के स्थान पर धर्म-ध्यान में निमग्न रहती है।

प्रवचन सभा का नजारा, दर्शनार्थियों का सतत आवागमन, सिवाना श्री संघ का आतिथ्य सत्कार एवं संघ-समाज में उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के चातुर्मास के सुयोग का पूरा-पूरा उपयोग करने की सुन्दर भावना के कारण सिवाना चातुर्मास की शोहरत दूर-दूर तक पहुँच रही है।

उपाध्यायप्रवर आवागमन के बजाय धर्म-ध्यान से प्रसन्न होते हैं, आपश्री समय-समय पर फरमाते हैं कि हम मेले-खेले की धमाल से नहीं व्रत-नियम से राजी रहते हैं। महापुरुष की वाणी का प्रभाव देखने को मिलता है अतः दया-संवर, उपवास-पौषध एवं छोटी-बड़ी अनेक तपश्चर्याएँ वहाँ हो चुकी हैं, तपाराधन के साथ ज्ञानाराधन के प्रति सिवाना का उत्साह बराबर बना हुआ है। उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में मारवाड़, पल्लीवाल, पोरवाल, हाड़ौती संभाग के ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं के साथ सुदूरवर्ती प्रदेशों के विभिन्न क्षेत्रों के भक्तजन गढ़ सिवाना पहुँच कर

सिवाना चातुर्मास की दीप्ति में सहभागिता प्रदर्शित कर रहे हैं, इसलिए कई-कई भक्त यह कहते भी रहते हैं कि उपाध्यायप्रवर का यह चातुर्मास सिवांची पट्टी के लिए वरदान साबित हो रहा है।

शेखेकाल क्षेत्र स्पर्श करने, आगामी चातुर्मास के साथ निकट भविष्य में दीक्षा प्रसंग की संभावनाओं के परिप्रेक्ष्य में पाली, पीपाड़, जोधपुर, बालोतरा, निमाज आदि कई क्षेत्र अपनी-अपनी विनति उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में प्रस्तुत कर चुके हैं। कोटा, सवाईमाधोपुर, जयपुर जैसे कई श्रीसंघों ने भी विनति श्रीचरणों में निवेदन की है। उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

सम्पर्क सूत्र- (१) श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, फोन- ०२९०१-२३००८३, (२) श्री पारसमल जी बागरेचा, मो. ०९९५००३२०४६, (३) श्री दीपचन्द जी मेहता, मो. ०९९५००३२०४७

महासती मण्डलों के यशस्वी चातुर्मास सफलता की ओर गतिमान

पावटा, जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6 का पावटा-जोधपुर का चातुर्मास ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन की दृष्टि से सफलता की ओर गतिमान है। सूर्यनगरी के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाएँ दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा के सुयोग का उपयोग करना जानते हैं, अतः पर्वाधिराज पर्युषण पर्व एवं अष्टमी-चतुर्दशी जैसे पर्व दिवसों पर विशेष उपस्थिति रहना एवं व्रत-नियम अंगीकार करना यहाँ की अच्छी प्रवृत्ति है। साध्वीप्रमुखा जी म.सा. प्रभावी प्रेरणा करने में सदा सक्रिय रहती हैं एतदर्थ धर्म साधना-आराधना में जन भागीदारी भी सहज जुड़ती रहती है। श्रीसंघ ने आवास-भोजनादि की पास ही व्यवस्था कर रखी है। अतः आगत श्रीसंघों व श्रद्धालुओं को सभी सुविधाएँ सहज प्राप्त होने से धर्म साधना में वातावरण का सहयोग भी मिल रहा है। जोधपुर विशाल क्षेत्र है अतः दया-संवर, उपवास-पौषध एवं बड़ी तपश्चर्याओं के आयोजन निर्बाध चलते रहते हैं। शीलव्रत के खंद हुए हैं, हो रहे हैं। प्रवचन, प्रतिक्रमण शास्त्र-वाचन के अलावा ज्ञान-ध्यान सीखने-सिखाने का कार्यक्रम भी व्यवस्थित रूप से चल रहा है। साध्वीप्रमुखा जी म.सा. के स्वास्थ्य में सामान्यतः समाधि बनी हुई है।

वैशाली नगर, अजमेर- सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का वैशाली नगर-अजमेर का चातुर्मास धर्माराधन के साथ उमंग-उल्लासपूर्वक

गतिमान है। स्थानीय सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं की धर्मरुचि के कारण सामायिक, स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध एवं तपश्चर्याओं के अलावा व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने में अजमेरवासियों की अच्छी भावना है। पर्युषण पश्चात् समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों का आवागमन बराबर चल रहा है, स्थानीय श्री संघ का आतिथ्य-सत्कार प्रशंसनीय है।

अमरावती- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 12 के चातुर्मास से यहाँ संघ में धार्मिक उत्साह का वातावरण है। संघ में धर्म-क्रिया, ज्ञान-ध्यान एवं तप-त्याग की अभिवृद्धि हो रही है। पर्युषण के आठों दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप चला। तपस्या के रूप में नौ दिन नवरंगी में संघ-सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। आठ दिनों में प्रतिदिन सामूहिक दया, एकाशन करने वालों की अच्छी संख्या रही। पर्युषण में कल्पसूत्र वाचन के अनन्तर ज्ञानवर्द्धन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ा उत्साह दिखाई दिया। पाँच से लेकर ग्यारह दिवस की तपस्या करने वाले पच्चीस से तीस साधक रहे। चातुर्मास में धार्मिक एवं संस्कार शिविर आयोजित हुए, जिनमें बालकों एवं महिलाओं ने भाग लिया। दीपावली की छुट्टियों में भी दिनांक 30 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन रखा जायेगा। महासतीजी के सरल स्वभाव से सभी प्रभावित हैं। अतः प्रवचन में जैन समाज के साथ ही जैनेतर समाज के लोग भी भाग लेते हैं। निकटवर्ती एवं दूरवर्ती ग्राम-नगरों से दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। सम्पर्क सूत्र- 1. श्री अमृत जी मुथा-09422157974, 2. श्री हीरालाल जी ओस्तवाल-09423622140 , 3. श्री दिलीप जी संखलेचा-09422157974

मानसरोवर, जयपुर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री दर्शनप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 का मानसरोवर चातुर्मास यादगार चातुर्मास के रूप में गतिमान है। जयपुर के मानसरोवर क्षेत्र में पहला चातुर्मास होने से जन-मन में अच्छा उत्साह है, फिर तत्त्वचिन्तिका जी म.सा. की प्रभावी प्रेरणा एवं जयपुर के आबाल-वृद्ध प्रायः अधिकतर लोगों से सम्पर्क के कारण मानसरोवर में प्रवचन-सभा में ही नहीं प्रवचन पश्चात् भी दर्शन-वन्दन एवं सेवा-भक्ति वालों का निरन्तर आवागमन बना रहता है। पर्युषण में धर्म-ध्यान का ठाट रहा। व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उत्साह से चातुर्मास की सार्थकता से मानसरोवर क्षेत्र के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाएँ संतुष्ट हैं। तत्त्वचिन्तिका जी म.सा. के श्रमणोचित औषधोपचार से स्वास्थ्य में सुधार चल रहा है। मानसरोवर की सुन्दर व्यवस्था सराहनीय है। क्षेत्र में अधिक संख्या में जैन परिवार

निवास करते हैं फिर जयपुर शहर एवं उपनगर के श्रद्धालुओं के साथ समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के भक्तजनों के निरन्तर आवागमन से चातुर्मास की सार्थकता और ज्यादा बढ़ रही है।

बेलगाँव- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 का बेलगांव (कर्नाटक) का चातुर्मास सफलता की ओर गतिमान है। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. के श्रमणोचित उपचार से स्वास्थ्य में सुधार चातुर्मास की उपलब्धि के रूप में याद रहेगा। ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन में बेलगांववासियों का उत्साह अनुकरणीय है। संघ-सेवा, संत-सेवा के साथ स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा की भावना प्रमोदजन्य है। धर्मस्थान की अनुकूलता भी साधना-आराधना में सहायक सिद्ध हो रही है। स्थानीय संघ की भक्ति-भावना, आतिथ्य सेवा और चातुर्मास के सुयोग के उपयोग का जज्बा चातुर्मास की सफलता के लिए पर्याप्त है।

हिण्डौन सिटी- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 का हिण्डौन सिटी चातुर्मास धर्मसाधना की दृष्टि से सफलता की ओर गतिमान है। महासती मण्डल का हिण्डौन का चातुर्मास पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र के लिए प्रेरणादायी है। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. का स्वास्थ्य विगत काफी समय से प्रतिकूल चल रहा है तब भी महासती मण्डल के परस्पर सहयोग एवं पुरुषार्थ के कारण चातुर्मास दीप्तिमान हो रहा है। हिण्डौन क्षेत्र आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति विशेष भक्ति रखता है। अतः विदुषी महासती मण्डल के चातुर्मास के सुयोग से ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में और संघ-सेवा, संत-सेवा एवं स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में स्थानीय संघ की सहभागिता प्रमोदजन्य है। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं का आवागमन बराबर बना हुआ है एवं हिण्डौन श्री संघ सेवा में सक्रिय है।

मेड़ता सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास से भक्तिनगरी मेड़ता में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना और सेवा-भक्ति के प्रति भावना के कारण चातुर्मास सफलता की ओर गतिमान है। पर्युषण में त्याग-तप की अच्छी प्रभावना रही। चातुर्मास में बहिनों में बोल-थोकड़ें सीखने की रुचि प्रशंसनीय कही जा सकती है। मेड़ता श्रद्धा-भक्ति वाला क्षेत्र है, अतः धर्म साधना में प्रेरणा से सहज ही भक्तजन प्रभावित हो जाते हैं। चातुर्मास में प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक संचालन

और परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग की प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं की भावना से चातुर्मास यादगार के रूप में रहेगा। श्रद्धालुओं का आवागमन अनवरत चल रहा है। मेड़ता के सुज्ञ श्रावक आगत श्रद्धालुओं की आत्मीयता पूर्वक सेवा कर रहे हैं।

शास्त्रीनगर,जोधपुर- महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में सूर्यनगरी के सर्वाधिक सभ्रान्त क्षेत्र शास्त्रीनगर में रत्नसंघ का पहला चातुर्मास प्रवचन-प्रभावना के साथ संघ की गौरव-गरिमा के अनुरूप उमंग-उल्लास से सफलता की ओर गतिमान है। महासती मण्डल के चातुर्मास के पूर्व परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के शेखेकाल शास्त्रीनगर पधारने से धर्मरुचि के साथ चातुर्मास की भावना बनी। भक्ति में शक्ति होती है, आचार्यप्रवर ने महासती मण्डल का चातुर्मास घोषित किया, श्रावकों के प्रयास से महासती मण्डल के विराजने, प्रवचन हेतु स्थान एवं अतिथियों के आवास-भोजन आदि सभी स्थान सहज में निःशुल्क प्राप्त तो हुए ही, चातुर्मास की दीप्ति में जन सहभागिता का सुन्दर सुयोग प्राप्त होना वस्तुतः क्षेत्र की पुण्यवानी ही है। शास्त्रीनगर में प्रवचन की प्रभावना में आसपास के सारे जैन समाज के लोग स्वतः जिनवाणी का पान करने पहुँचते हैं। महासती मण्डल की प्रेरणा से शीलव्रत के खंद, व्रती श्रावक बनने के नियम के अलावा मासखमण तक की कई तपश्चर्याएँ हो चुकी हैं। ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के प्रति अब भी उत्साह में कोई कमी नहीं है।

पाली-मारवाड़- सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही आयम्बिल एवं तेले की लड़ी निर्विघ्न चल रही है। प्रतिदिन व्याख्यान में उत्तराध्ययन सूत्र के पहले तथा 29वें अध्ययन का शास्त्रवाचन तथा महासती श्री मृगावतीजी के जीवन की चौपाई चल रही है। सम्वत्सरी पर्व तक एकाशन के 5 मासखमण हुए हैं। ग्यारह, दस, आठ आदि की अनेक तपस्याएँ हुई हैं। ग्यारहरंगी, नवरंगी एक-एक एवं पचरंगी पाँच हो चुकी हैं। महासती श्री रुचिता जी म.सा. का स्वास्थ्य विगत कुछ दिनों से अनुकूल नहीं है, परन्तु श्रमणोचित औषधोपचार से स्वास्थ्य में सुधार होने की आशा है। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों का आवागमन बराबर बना हुआ है, पाली श्रीसंघ की आतिथ्य सेवा प्रशंसनीय है। सम्पर्क - श्री ताराचन्द जी सिंघवी, मंत्री, सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-मारवाड़, फोन-02932-250021

शिमोगा- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.आदि ठाणा 3 के पावन

सान्निध्य में पर्युषण महापर्व में आठ दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप चला। अंतगड सूत्र का वाचन-विवेचन महासती श्री भाग्यप्रभा जी ने किया। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. एवं महासती श्री संगीता जी म.सा. ने एक हॉल में सारगर्भित प्रवचन दिए तो दूसरे हॉल में नवयुवकों को महासती भाग्यप्रभा जी ने प्रवचन फरमाया। उद्‌बोधन के प्रभाव से कई युवकों ने कुव्यसनों के प्रत्याख्यान किए। अण्डे के केक एवं गुटखा-सेवन का त्याग किया। दोपहर पश्चात् उपासकदशांगसूत्र की वाचनी हुई तथा श्रावकों को 12 व्रत विश्लेषण सहित समझाकर नियम करवाए गए। प्रतिदिन ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। चातुर्मास में मासखमण 2, इक्कीस की 1, ग्यारह की 3, नौ की 4 तपस्याएँ हुईं। अठाई तप 22 हुए। पचोला, तेला आदि 100 से अधिक हुए। उपवास 500, सामायिक की नवरंगी सहित कई तपस्याएँ हुईं। आठ दम्पतियों ने ब्रह्मचर्य व्रत सहित 4 खन्ध के प्रत्याख्यान किए। विशेषता यह रही कि उनमें 4 श्रावक-श्राविकाओं ने 40 वर्ष के आसपास की उम्र में चार खन्ध ग्रहण किए, जो शिमोगा संघ की ऐतिहासिक उपलब्धि है। तेले एवं आयम्बिल की लड़ी अभी भी गतिमान है, जो चातुर्मास के प्रारम्भ से चल रही है। पर्युषण के आठ दिनों में यहाँ 500-525 पौषध एवं कई संवर हुए। प्रवचन सभा में प्रायः सब सामायिक में ही बैठते हैं। इस चातुर्मास में नवयुवकों में नई चेतना जागृत हुई है।

बागलकोट- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 के बागलकोट चातुर्मास में धर्म-साधना के प्रति आबाल-वृद्ध सबमें अच्छा उत्साह बना हुआ है। पर्वाधिराज पर्युषण में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप एवं दया-संवर, उपवास-पौषध की साधना में अच्छा उत्साह रहा। बालक-बालिकाओं में संस्कार-निर्माण हेतु महासती मण्डल के प्रयास सराहनीय कहे जा सकते हैं। स्थानीय श्रीसंघ की व्यवस्था सुन्दर है।

बीजापुर- महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 का बीजापुर चातुर्मास ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन सभी दृष्टियों से सफलता की ओर गतिमान है। गतवर्ष परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के चातुर्मास से जन-जन में धर्म के प्रति बनी आस्था को महासती मण्डल के चातुर्मास से सम्बल मिला। परिणामस्वरूप भक्तिनगरी बीजापुर में महासती मण्डल का यशस्वी चातुर्मास सफलता की ओर गतिमान है। बीजापुर में व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा. की सुदीर्घ तप-साधना से भी शहर में तप-साधना के प्रति जन-जन की भावना में उल्लेखनीय उत्साह जगा, जिसकी सर्वत्र

प्रशंसा सुनने को मिल रही है। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना रहता है। स्थानीय श्रीसंघ का आतिथ्य-सत्कार प्रशंसनीय है।

मुम्बई महानगर में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा कांदिवली-मुम्बई स्थित कल्पतरु गार्डन भवन में शनिवार 20 सितम्बर 2008 को सायं 7.30 बजे गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर ने की तथा मुख्य अतिथि माननीय श्री जसराज जी चौपड़ा (पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय) थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी माननीय श्री मनीष जी भण्डारी (न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर) एवं माननीय श्री जी.सी. डागा (निदेशक विपणन, इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, भारत सरकार, मुम्बई) ने।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी.एस. सुराणा-चेन्नई, संघ कार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर, संघ महामंत्री श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्षा डॉ. (श्रीमती) मंजुला जी बम्ब-जयपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर एवं स्थानीय संघाध्यक्ष श्रीं पारसचन्द जी हीरावत-मुम्बई ने मंच को सुशोभित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मुम्बई द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मुम्बई की सदस्याओं ने अपने भावभीने स्वागत-गीत से आगन्तुक सम्माननीय अतिथिगणों का स्वागत-अभिनन्दन कर समारोह की गरिमा में अभिवृद्धि की। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान किया गया।

संघ के कार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने गुणी-अभिनन्दन कार्यक्रम की पृष्ठ-भूमि पर विचार रखते हुए कार्यक्रम की जानकारी प्रस्तुत की। सम्मान समारोह में निम्नांकित गुणीजनों का स्वागत/अभिनन्दन किया गया-

संघरत्न सम्मान- संघ-संरक्षक मण्डल के सदस्य अनन्य गुरुभक्त श्रावकरत्न डॉ.

सम्पतसिंह जी भाण्डावत-जोधपुर का माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान करने के साथ ही रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र प्रदान करते हुए संघ के सर्वोच्च सम्मान 'संघरत्न सम्मान' से आपको सम्मानित किया गया। आपके परिवार के सदस्यगण भी इस शुभ अवसर पर उपस्थित थे।

आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान- साहित्य सृजन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए चेन्नई की **डॉ. (श्रीमती) प्रियदर्शना जी जैन** को चून्दड़ी ओढ़ाने के साथ ही रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र प्रदान करते हुए 'आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया गया। आपके परिवार के सदस्यगण भी इस शुभ अवसर पर उपस्थित थे।

युवा-प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान- युवा-प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान 2007 के लिये भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी **श्री चंचलमल जी बच्छावत-कोलकाता** एवं युवा-प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान 2008 के लिये **युवारत्न श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई** को सम्मानित किया गया। दोनों महानुभावों को माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान- वरिष्ठ स्वाध्यायी की गरिमा से युक्त सर्व **श्री रिखबचन्द जी मेहता-जोधपुर, श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत-जयपुर, श्री सुभाष जी हुण्डीवाल-जोधपुर** को माल्यार्पण एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया। इस शुभ अवसर पर इनके परिजन भी समारोह में उपस्थित थे।

गुणी अभिनन्दन-

तपस्वी श्रावकरत्न श्री मूलचन्द जी बाफना-जोधपुर का निरन्तर 6 वर्षों से वर्षीतप की साधना के उपलक्ष्य में उनकी अनुपस्थिति में उनके अनुज भ्राता श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना का माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

संत-सतीवृन्द के विचरण-विहार में उल्लेखनीय सेवा देने वाली **श्रीमती लाडबाई जी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री धनराज जी लोढ़ा-कानपुर** का चतुर्विध संघ-सेवा के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

तपाराधन में प्रबल पुरुषार्थ करने वाले तपस्वी सुश्रावक श्री **धर्मेन्द्र जी लोढ़ा-मुम्बई** का आचार्यप्रवर के मुम्बई चातुर्मास में 41 दिवसीय मौन तप-साधना के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

संघ-समर्पित, संघ-सेवी, गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी **श्रावकरत्न श्री सरदारसिंह जी कर्णावट-मुम्बई** का संघ-उन्नयन में विशिष्ट योगदान के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

सेवाभावी डॉ. गोवर्धन जी पाराशर-जोधपुर को सन्त-सतीवर्ग के श्रमणोचित औषधोपचार की सेवाओं के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान कर रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

वैद्य सम्पतराज जी मेहता-जोधपुर को (मरणोपरान्त) संत-सतीवर्ग के श्रमणोचित उपचार में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र श्री भरत जी मेहता को माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान कर रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

संघ समर्पित, वरिष्ठ स्वाध्यायी **श्री जगदीश जी जैन-सवाईमाधोपुर** को चतुर्विध संघ-सेवा में सक्रिय योगदान के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर बहुमान कर रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

संघ सहायक श्री रामपाल जी जाट-कनेच्छनकला (जिला-भीलवाड़ा) को चारित्रात्माओं की सेवा में विशिष्ट विहार-सेवा प्रदत्त करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर सम्मान करने के साथ अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

संघ-संरक्षक-मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपने उद्गार अभिव्यक्त करते हुए कहा कि वही संघ विकास करता है जिसमें गुणीजनों का सम्मान होता है। सम्मान-समारोह के दौरान अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष डॉ. मंजुला जी बम्ब द्वारा लिखित 'माँ बनी शिक्षिका' पुस्तक एवं अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा प्रकाशित 'संघ परिचय विवरणिका' का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। 'माँ बनी शिक्षिका' पुस्तक का परिचय श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई ने एवं संघ-परिचय-विवरणिका का परिचय संघ महामंत्री श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर

ने प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि पूर्व न्यायाधिपति माननीय श्री जसराज जी चौपड़ा ने स्वयं को भाग्यशाली बताते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य है कि ऐसे विद्वत्-गुणीजनों के बीच आज मुझे उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। संघ को आगे बढ़ाने के लिये प्रत्येक सदस्य इन तीन बिन्दुओं को अपने जीवन में आत्मसात् करने का प्रयास करे तो संघ-समाज का विकास सम्भव है- 1.प्रामाणिकता 2. नैतिकता और 3. संघनिष्ठा।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री मनीष जी भण्डारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुणीजनों के सम्मान कार्यक्रम में आने का सौभाग्य प्राप्त होना मेरी पुण्यवानी का फल है। इन गुणियों के गुण मुझमें भी समाविष्ट हो तथा मैं भी जिनशासन की सेवा में अपनी सेवाएँ समर्पित कर सकूँ, ऐसी भावना के साथ उन्होंने सदन को धन्यवाद ज्ञापित किया।

विशिष्ट अतिथि श्री जी.सी. डागा, मार्केटिंग डायरेक्टर, इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन, मुम्बई ने सम्मानित गुणीजनों की प्रशंसा करते हुए उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं की सराहना की एवं कहा कि हम सब भी संघ-सेवा हेतु सदैव तत्पर रहें। उन्होंने बचपन के सुसंस्कारों के महत्त्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि जैन कुल में जन्म प्राप्त करना साथ ही ऐसे अनुपम संघ का सहभागी होना एवं आचार्य भगवन्त जैसे गुरु का सान्निध्य प्राप्त करना हमारी पुण्यवानी का फल है। आप सभी महानुभावों ने इस कार्यक्रम में पधारकर रत्नसंघ की गौरव गरिमा को बढ़ाया है जिसके लिये मैं आप सबका हृदय से आभारी हूँ।

कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को स्मृति-चिह्न प्रदान किये गये, साथ ही उनकी धर्मसहायिका धर्मपत्नियों का चुनड़ी ओढ़ाकर बहुमान किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने उपस्थित समस्त अतिथिगण, संघ-सदस्यों, पदाधिकारियों एवं गुणीजनों का सम्मान-समारोह में पधारकर शोभा बढ़ाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम की सम्पूर्ण सुन्दर एवं समुचित व्यवस्था के लिए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई, श्री जैन रत्न युवक परिषद्-मुम्बई एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-मुम्बई की सेवाओं के प्रति धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रविवार दिनांक 21 सितम्बर 2008 को मध्याह्न 1 बजे कल्पतरु गार्डन, कांदिवली, मुम्बई में संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई जिसमें संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरचन्द जी सुराना, श्राविका मण्डल अध्यक्ष डॉ. (श्रीमती)मंजुला जी बम्ब, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया, शिक्षण बोर्ड की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा, संस्कार केन्द्र की संयोजिका श्रीमती विमला जी मेहता एवं संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्याध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री, सचिव, कोषाध्यक्ष आदि पदाधिकारियों का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

कार्यवाही का शुभारम्भ मंगलाचरण से किया गया। मंगलाचरण की प्रस्तुति शासन सेवा समिति के सदस्य श्री हस्तीमल जी गोलेछा ने दी। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला ने संकल्प पाठ का समवेत स्वर में पठन करवाया।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने देश के कोने-कोने से पधारे संघ-सदस्यों एवं संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों-कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि आज की सभा में हमारे गुरु भ्राताओं की अच्छी संख्या में उपस्थिति देखकर हम-सब प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। संघ सदस्यों की गुरु-भक्ति, संघ-निष्ठा और संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यक्रमों की क्रियान्विति में तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सहयोग के लिए साधुवाद ज्ञापित करते हुए संघाध्यक्ष महोदय ने कहा कि हमारी संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मि-वात्सल्य सेवा में उत्तरोत्तर भावना वृद्धिंगत होती रहे, यही आप-सबसे अपेक्षा है।

संघ महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने सदन को सूचित किया कि संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के मुद्रित प्रतिवेदन, गत बैठक की कार्यवाही रिपोर्ट, आय-व्यय के वास्तविक आंकड़ें, प्रस्तावित बजट इत्यादि सभी जानकारियाँ मुद्रित पुस्तिका

में संकलित करके आपके हाथों तक पहुँचा दी गई हैं, आपने प्रतिवेदनों के साथ कार्यक्रमों की क्रियान्विति में उठाये गये कदमों की समीक्षा की है, आय-व्यय विवरण भी देखे हैं। अतः मैं केवल संघ की गत कार्यवाही का पठन कर शेष सभी संस्थाओं की गत बैठक की कार्यवाही को पढ़ा मान लिया जाने का आपसे अनुमोदन चाहता हूँ। संघ महामंत्री ने गत 1.10.07 की बैठक का विवरण पढ़कर सुनाया। संघ संरक्षक प्रो. चांदमल जी कर्णावट ने विवरण सुनकर कहा कि गत वर्ष मैं बैठक में उपस्थित नहीं हो सका था इसलिए मैंने कतिपय सुझाव लिखित रूप में संप्रेषित किए थे जिन्हें रिपोर्ट में नहीं लिए जाने का क्या हेतु रहा? संघ महामंत्री ने स्पष्ट किया आपके सुझाव साधारण सभा होने के पश्चात् मिले थे, हमने आपके सुझावों को संघ की कार्यकारिणी बैठक में समायोजित कर लिया है। साधारण सभा ने सर्व-सम्मति से संघ की गत बैठक की कार्यवाही की पुष्टि की और संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यवाही का भी सर्वानुमति से अनुमोदन किया।

संघाध्यक्ष महोदय की आज्ञा से संघ के कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं का 31 मार्च 2008 का वास्तविक आय-व्यय मदवार सदन में प्रस्तुत किया। वर्ष 2008-2009 के प्रस्तावित बजट भी सदन के समक्ष रखते हुए उन्होंने बताया कि सदस्य महानुभावों ने प्रत्येक संस्था का आय-व्यय देखा होगा, आप वास्तविक एवं प्रस्तावित बजट में कोई सुझाव रखना चाहें तो अवश्य अपनी भावना जाहिर करें। सदस्य महानुभावों ने वास्तविक आय-व्यय एवं प्रस्तावित बजट सर्व-सम्मति से पारित किया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल :– सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा के आदेशानुसार मंडल के मन्त्री श्री प्रेमचन्द जी जैन ने मंडल की भावी योजनाओं को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मंडल से "जिनवाणी" नामक पत्रिका का 65 वर्षों से नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के पृष्ठ संख्या 116 से बढ़ाकर 132 कर दिये गये हैं। साहित्य प्रकाशन में इस वर्ष 20 पुस्तकों का पुनः मुद्रण किया गया है आगामी छह माह में लगभग 25 पुस्तकों का मुद्रण/पुनर्मुद्रण किये जाने की सम्भावना है। श्री त्रिलोकचन्द जी जैन व श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन अध्ययन कार्य को बखूबी अंजाम दे रहे हैं। श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के संयोजक का दायित्व श्री विनयचन्द जी डागा व अधिष्ठाता पद श्रीमती प्रेमलता जी सुराणा सुशोभित कर रही है। दोनों ही महानुभाव अपना सक्रिय सहयोग बनाये हुये हैं। मंडल की उन्नति हेतु आप सभी के रचनात्मक सुझाव आमन्त्रित हैं।

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मंडल :–श्राविका मंडल की अध्यक्षा डॉ. मंजुला जी बम्ब ने बताया कि मंडल की वर्तमान में 55 शाखाएँ कार्यरत हैं। सभी शाखायें सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। श्राविका मंडल द्वारा गढसिवाना व बीजापुर में संस्कार निर्माण शिविर लगाये गये। पच्चीस बोल, संस्कार निर्माण, दशवैकालिक सूत्र, नन्दीसूत्र सहित अब उत्तराध्ययन सूत्र खुली किताब परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। मंडल द्वारा भ्रूण हत्या रोकने हेतु विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। पोस्टर एवं शिविर के माध्यम से जानकारी प्रस्तुत की जा रही है। कई स्थानों पर तो युवतियों ने हिम्मत के साथ संकल्प किये हैं कि हम भ्रूण हत्या जैसे महापाप को कभी बढ़ावा नहीं देंगे। आदर्श श्राविका रत्न बनाने हेतु नियमों के प्रचार-प्रसार के साथ विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। चेन्नई में युवति मंडल की स्थापना की गयी हैं हम इस हेतु प्रयास कर रहे हैं कि देश में सभी स्थानों पर युवति मंडल की स्थापना हो।

डॉ. मंजुला जी बम्ब ने कहा कि आज पूज्य आचार्य भगवन्त के व्याख्यान से प्रेरित होकर मैं श्राविका मंडल की ओर से यह घोषणा करती हूँ कि श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों को सामायिक व प्रतिक्रमण की सविधि सम्पूर्ण जानकारी हो इसका प्रयास करूँगी। हमें तिक्खुत्तो के पाठ में भी एक रूपता रखनी है इस हेतु रत्नसंघ में तिक्खुत्तो का पाठ एक ही विधि/तरीके से किया जावे इस हेतु भी प्रयास करना है।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् :– युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला ने बताया कि देव-गुरू-धर्म की अनुकम्पा से युवक परिषद् अच्छा कार्य कर रही है। सभी शाखाओं में युवारत्न बन्धु तन-मन-धन से अपने दायित्वों को बखूबी अंजाम दे रहे हैं। युवक परिषद् अपने 4 राष्ट्रीय कार्यक्रमों के साथ 5 अभिगमों की अनुपालना के लिए अभियान चलाएगी। अभी 5 अभिगमों का पूर्ण रूपेण पालन नहीं हो पा रहा है। इस हेतु हम प्रयासरत रहेंगे। हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना से अनेकों छात्र-छात्राओं को राशि 500 से 2500 तक से प्रतिमाह लाभान्वेत किया जा रहा है।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ :– श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री चंचलमल जी चोरड़िया ने बताया कि गत पर्युषण में हमने 172 क्षेत्रों में स्वाध्यायी भेजे। इस वर्ष चेन्नई शाखा के विशेष प्रयासों से हम 185 क्षेत्रों में स्वाध्यायी बन्धु भेज चुके हैं। मैं चेन्नई शाखा के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ। अभी सभी संस्थाओं द्वारा अलग कार्य किया जा रहा है। सभी संस्थाओं का वार्षिक कलैण्डर

बनाया जाना चाहिए ताकि प्रचार-प्रसार में सुविधा बनी रहे। उन्होंने आह्वान किया कि सभी पदाधिकारियों को पर्युषण में सेवा देने जाना चाहिए। आपकी भावना को ध्यान में रखते हुए संघ संरक्षक श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई व शासन सेवा समिति के सदस्य श्री प्रसन्नचन्द जी बाफणा-जोधपुर ने वर्ष 2010 में स्वाध्यायी के रूप में जाने की स्वीकृति प्रदान की।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड:–अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने बताया कि बोर्ड परीक्षा में आवेदन करने वाले 6001 प्रवेशार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया है। पंजाब, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र सहित 54 स्थानों पर नये परीक्षा केन्द्र प्रारम्भ किये गये हैं। वर्तमान में कक्षा 1 से 14 तक के पाठ्यक्रम संचालित है। कर्मसिद्धान्त व जैन धर्म का मौलिक इतिहास पर डिप्लोमा कोर्स प्रारम्भ करने की योजना है। कम्प्यूटर के माध्यम से विदेश में भी बोर्ड की परीक्षाएँ आयोजित करने का विचार है।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र:–अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयोजिका श्रीमती विमला जी मेहता ने बताया कि प्रत्येक प्रान्त में संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने की भावना है। संस्कार केन्द्र खोलने पर हम सभी अभिभावकों से निवेदन करते हैं कि वे अपने बच्चों को इस संस्कार केन्द्र में अवश्य भेजें ताकि बच्चों में नैतिक संस्कारों की अभिवृद्धि की जा सके।

संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा के पश्चात् संघाध्यक्ष महोदय ने सदस्य महानुभावों से संघहित के विषयों पर अपना चिन्तन प्रस्तुत करने हेतु समय दिया। श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर ने उत्तराध्ययन सूत्र पुस्तक के संस्करण विषयक जिज्ञासा रखी जिसके समाधान में नूतन संस्करण से उत्तर देने की अवश्यकता बताई गई। श्री लाभचन्द जी नाहर-सूरत ने आगम प्रकाशित करने का एवं सामायिक के उपकरण संघ स्तर पर विक्रय करने का सुझाव रखा। श्री जवाहरलाल जी कर्नावट-चेन्नई ने स्वाध्यायियों का परिचय रखने, स्थानीय संघ की सार-संभाल करने एवं साधारण सभा के नामकरण विषयक सुझाव रखे। श्री नरेन्द्र जी डागा-मुम्बई ने महासती मण्डल के साथ विहार-सेवा में बहिन की आवश्यकता बताई। श्री कन्हैयालाल जी हिरण-अहमदाबाद का सुझाव था कि संत-सतीवृन्द की सेवा में आने वाले दया-संवर कर सकें तो ठीक, अन्यथा अधिक से अधिक सामायिक-साधना का लक्ष्य रखें। श्री सुधीर जी सुराना-चेन्नई ने महिला स्वाध्यायी की कमी दूर हो, एतदर्थ

प्रयास करने का सुझाव रखा और इस वर्ष को महिला स्वाध्यायी वर्ष रखने का अभिमत दर्शाया। श्री हस्तीमल जी बोहरा-पीपाड़ शहर ने कुशल जैन छात्रावास की व्यवस्था सुन्दर करने हेतु विचार रखे। श्री मदनलाल जी बाघमार-जबलपुर ने जिनवाणी महीने के प्रारम्भ में मिल सके इसकी जरूरत बताई और जबलपुर से पाँच बहिनों को स्वाध्याय में भेजने के पूर्व प्रशिक्षण की आवश्यकता दर्शायी। श्री मनोहरजी सहलोत-सूरत ने संस्कार केन्द्र पर 3 से 10 वर्ष के बच्चों के स्थान पर 18 वर्ष तक की आयु निश्चित करने का सुझाव रखा। श्री विनीत जी गाँधी-मुम्बई ने धोवन पानी के लिए युवक परिषद् के अभियान को समयोचित बताया, साथ ही कहा कि हमारे कार्यक्रम जो संघ-स्तर पर आयोजित होते हैं वहाँ धोवन पानी का उपयोग ही होना चाहिए। श्री महेन्द्र जी गोलेछा-ब्यावर ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में अन्त समय आने वाले परीक्षार्थी को रोल नम्बर आवंटन की व्यवस्था करने की जरूरत बताई। संघ संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने संत-सतीवृन्द के अध्ययन हेतु समर्पित एवं योग्य अध्यापकों की आवश्यकता पूर्ति का ध्यान रखने का सुझाव दिया। श्री पारस जी जैन-सवाईमाधोपुर ने 2010 आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी पर नया साहित्य प्रकाशित करने, छात्रावास की आवश्यकता पूर्ति के साथ छात्रवृत्ति योजना विषयक सुझाव रखे। श्री बाबूलाल जी उज्ज्वल-मुम्बई ने अपनी धर्मसहायिका के मासखमण पर आचार्य भगवन्त से शीलव्रत के खंद करने की बात कहते संघ से अपेक्षा रखी कि गजेन्द्र संदेश को संघ की पत्रिका मानकर सहयोग किया जाय।

संघाध्यक्ष महोदय के संकेत पर संघ कार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने सदस्य महानुभावों के प्रश्नों का समुचित प्रत्युत्तर देते हुए संघहित के सुन्दर सुझावों पर अमल करने का विश्वास व्यक्त किया। आगम प्रकाशन जैसे विषय पर शासन सेवा समिति उचित निर्णय करे, भावना रखकर सदस्य महानुभाव के सुझाव का प्रत्युत्तर दिया गया। महिला स्वाध्यायियों की कमी दूर करने के सतत प्रयास किए जा रहे हैं, महिला स्वाध्यायी पूर्व की अपेक्षा कुछ बढ़े भी हैं, हम-सब अपने घरों से बहिनों को पर्युषण सेवा हेतु भेजें। वर्ष 2010 आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी को त्याग-तप के साथ मनाने का एवं जन्मशती हम सबको प्रेरणादायी बने, एतदर्थ कार्यक्रम बनाने हेतु एक समिति बनाई जायेगी। आप समिति को अपने सुझाव तो दें ही देश भर में जन्म-शताब्दी पर त्याग-तप के विविध कार्यक्रम रखने हेतु अभी से तैयारी रखें। संघाध्यक्ष महोदय ने निवेदन किया कि संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक, संघ प्रमुख, संघहितचिन्तक और हमारे मार्गदर्शक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत हमें अपना

आशीर्वचन प्रदान करने की कृपा करें। माननीय श्री मुणोत साहब ने आज की साधारण सभा में अच्छी उपस्थिति एवं शांतिपूर्वक सार्थक विचार-चिन्तन के साथ चलने पर सभी सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्यप्रवर एवं श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने हमें प्रेरणा स्वरूप बहुत कुछ कहा है उसके पश्चात् मेरा कुछ कहना प्रासंगिक नहीं होगा पर मैं आप सबसे विनम्र अनुरोध करता हूँ कि आप गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहें, संघ के प्रति समर्पित रहें, संघ कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सजग रहें, संघ की शोहरत बढ़ें इसलिए जीवन में नैतिकता-प्रामाणिकता को अपना कर संघ-सेवा का आदर्श उपस्थित करें। आप-सबको प्रणाम कह कर मुणोत साहब ने अपना वक्तव्य समाप्त किया।

रत्नसंघ की वयोवृद्ध साध्वीरत्ना शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. तथा गत बैठक से अब तक दिवंगत आत्माओं के स्वर्ग-गमन एवं अन्य श्रावक-श्राविकाओं के स्वर्गवास पर एक लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई की सुन्दर व्यवस्था के लिए सर्वसम्मति से धन्यवाद प्रस्ताव पारित कर संघाध्यक्ष महोदय को धन्यवाद के साथ सभा हर्ष-हर्ष जय-जय के जयनाद के साथ सानन्द सम्पन्न हुई।

हिण्डौन शहर में पल्लीवाल क्षेत्रीय श्रावक-श्राविका एवं युवक सम्मेलन सम्पन्न

रविवार, 14 सितम्बर 2008 को पल्लीवाल क्षेत्रीय श्रावक-श्राविका एवं युवक-सम्मेलन का आयोजन लक्ष्मी पैलेस मंडावरा रोड, हिण्डौन सिटी में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के पूर्व समागत साधर्मी श्रावक-श्राविकाओं एवं युवक-युवतियों ने नई मण्डी के स्थानक में विराजित विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के प्रवचन-श्रवण एवं दर्शनों का लाभ लिया।

दिन में 12.30 बजे से 5 बजे तक आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन में लगभग एक हजार की उपस्थिति थी। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर इस कार्यक्रम के मुख्यातिथि थे। अध्यक्षता श्री दीनदयाल जी जैन, संरक्षक गौशाला समिति, नदबई ने की। मंगलाचरण के अनन्तर मंचासीन सभी अतिथियों का श्रीसंघ, हिण्डौन द्वारा स्वागत किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कुशल जी

गोटेवाला ने संकल्प-पठन एवं संघ-समुत्कीर्तन गीत प्रस्तुत करने के साथ युवक परिषद् की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए उनसे सक्रिय रूप से जुड़ने हेतु उपस्थित जन-समुदाय से आह्वान किया। मंच संचालक श्री नरेन्द्रकुमार जी जैन, व्याख्याता, हिण्डौन ने सम्मेलन के उद्देश्यों से परिचित कराया। सम्मेलन में प्रमुख रूप से विचारणीय विषय थे- 1. संघ के प्रति समर्पण एवं कर्त्तव्य-निर्वहन का श्रेष्ठ स्वरूप कैसा हो? 2. संघ उन्नयन किस प्रकार हो?

संघ-समर्पण, उन्नयन एवं कर्त्तव्य-निर्वहन के विषय पर शासन सेवा समिति के सदस्य श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर ने गीत सुनाने के साथ संघ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा ने संघ की गतिविधियों से परिचित कराया तथा उनसे सक्रिय रूप से जुड़ने की प्रेरणा की। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर ने संघ में भाईचारे को बढ़ावा देने का आह्वान किया तथा सन्त-सतियों की विहार-सेवा एवं अन्य क्षेत्रों में सक्रिय होने की प्रेरणा की। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के योगदान का उल्लेख किया।

प्रमुखवक्ता एवं जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने कहा कि संघ गुणों के संवर्धन एवं दोषों के परिहरण का केन्द्र है। गुणवान व्यक्तियों से ही संघ में गुणवत्ता बढ़ती है तथा संघ की गुणवत्ता से व्यक्ति में निखार आता है। हमें संघ के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर कर्त्तव्य का निर्वाह करना चाहिए। पल्लीवाल क्षेत्र पर आचार्य हस्ती एवं आचार्य हीरा का उपकार है, जिसे हमें नहीं भूलना चाहिए।

कार्यक्रम के मध्य में पल्लीवाल क्षेत्र के लगभग 20 वीर माता-पिताओं का सम्मान किया गया। यह 'गुणिषु प्रमोदं' के अनुभूति का सुखद अवसर था। एक किशोर अभिषेक जैन, खेरली ने भजन की सुन्दर प्रस्तुति की, जिस पर मुख्यातिथि श्री बोथरा सा. द्वारा स्वर्णपदक की घोषणा की गई।

अखिल भारतीय पल्लीवाल महासभा के अध्यक्ष श्री देवकीनन्दन जी एवं महामंत्री श्री श्रीचन्द जी जैन ने भी सभा को अपने विचारों से लाभान्वित किया। उन्होंने भाईचारे के साथ संघ की गतिविधियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा की। श्री रमेशचन्द जी जैन, सेवानिवृत्त आर.ए.एस. ने भी सभा को प्रेरणास्पद वचनों से सम्बोधित किया। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री ताराचन्द जी सिंघवी-पाली, वीरभ्राता श्री क्रान्तिचन्द जी मेहता-अलवर एवं श्री रामजीलाल जी जैन, पूर्व प्रधान ने भी मंच को

सुशोभित किया।

मुख्यातिथि एवं अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने पल्लीवाल क्षेत्र में धर्मभावना की अभिवृद्धि के लिए कहा कि धर्म के मार्ग पर चलने से ही मनुष्य का कल्याण संभव है। उन्होंने संघ के प्रति समर्पित होकर कार्य करने की अपील की। संघ किस प्रकार आगे बढ़ रहा है, इसकी भी उन्होंने जानकारी दी।

अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दीनदयाल जी जैन ने कहा कि हमें किसी का उपकार करके भूल जाना चाहिए, किन्तु कोई हमारा उपकार करे तो उसे याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवदया ही सबसे बड़ा धर्म है। प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी प्राणी को तन-मन एवं वचन से कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए और भाईचारे से रहना चाहिए।

अन्त में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री धर्मचन्द जैन ने अपनी ओर से, संघ अध्यक्ष श्री टीकमचन्द जी जैन की ओर से तथा संघ के सभी सदस्यों की ओर से आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर जोधपुर, पाली, ब्यावर, सवाईमाधोपुर, कुशतला, अलीगढ़-रामपुरा, जरखोदा, भरतपुर, अलवर, खेरली, नदबई, महुआ, मंडावर, गंगापुर, करौली, हरसाना, बीचगांवा, मौजपुर, बरगमां, शेरपुर आदि स्थानों से संघ-सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन वीरभ्राता श्री नरेन्द्रकुमार जी जैन, व्याख्याता हिण्डौन ने किया। हिण्डौन संघ की सुन्दर व्यवस्था के लिए अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रवक संघ के महामंत्र श्री नवरतन जी डागा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उत्तराध्ययन सूत्र खुली किताब परीक्षा आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की जयपुर शाखा द्वारा 'उत्तराध्ययन सूत्र खुली किताब परीक्षा' का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित 'उत्तराध्ययन सूत्र' के तीन भागों पर की जा रही है। पुस्तक के तीनों भाग 110 रुपयें में उपलब्ध हैं। डाक द्वारा मंगवाये जाने पर 140 रुपये भेजने होंगे। प्रश्न-पुस्तिका 30 रुपये में उपलब्ध है तथा डाक द्वारा मंगवाये जाने पर 40 रुपये में भेजी जा सकेगी। उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 15 फरवरी, 2009 है तथा परिणाम तिथि 15 अप्रेल, 2009 है। प्रतियोगिता में पुरस्कार इस प्रकार देय हैं- 1. **पूर्ण ५०० अंक प्राप्त करने पर(आगमश्रेष्ठी सम्मान)**-51,000/- रु., 2. **प्रथम स्थान**-21,000/-, 3. **द्वितीय स्थान**-11,000/-, 4. **तृतीय स्थान**-5,000/-, 5. **तीस प्रोत्साहन**

पुरस्कार(आगम वाचना सम्मान)- 1000/- रु.(प्रत्येक)

सम्पर्क सूत्रः- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.), फोन नं. 0141-2575997

भ्रूणहत्या महापाप प्रतियोगिता का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्राविका मण्डल द्वारा 'भ्रूणहत्या महापाप' विषय पर माह अगस्त 2008 में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा- **प्रथम पुरस्कार-** श्री लक्ष्मीचन्द जी छाजेड़-समदड़ी रु. 1500/-, **द्वितीय पुरस्कार-** हिनाजी कोठारी-जयपुर 1000/-और **तृतीय पुरस्कार-** गुंजन जी जैन,भीलवाड़ा। -*आशा गांग, महासचिव*

संक्षिप्त समाचार

कजगाँव- पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना अपूर्व उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई। रत्नसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, शासन सेवा समिति के संयोजक, शाकाहार-सदाचार के प्रबल पोषक स्वर्णनगरी जलगाँव के प्रमुख व्यवसायी श्री रतनलाल जी बाफना ने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में पधार कर अष्टदिवसीय पर्वाराधन करवाया वह सदा स्मृति-पटल पर विद्यमान रहेगा। प्रवचन में अन्तगडदसा सूत्र के वाचन के साथ एक-एक दिन का महत्त्व गद्य-पद्य भाषा-शैली में इतना सजीव होता था कि कजगाँव का वातावरण पूरी तरह धर्ममय बन गया। तपस्या का भी अच्छा उत्साह रहा। मध्याह्न में प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, सायं प्रतिक्रमण आदि सभी कार्यक्रम उत्साहपूर्वक हुए। स्वाध्यायी सुश्रावक श्री अशोक जी हुण्डीवाल एवं कुमारी चित्राबाई ने भी सहयोग का अच्छा आदर्श उपस्थित किया। - *कल्याणमल धाड़ीवाल*

तिरुपति- श्री महावीर गौशाला फाउण्डेशन ट्रस्ट के द्वारा तिरुपति के निकट श्री महावीर गौशाला स्थापित है, जिसमें लगभग 300 गायें हैं। इनमें अधिकांश गायें बूढ़ी, अपंग एवं अनुपयोगी हैं। गौशाला को प्राप्त अनुदान राशि में आयकर नियम 80 जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। अनुदान राशि बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर से महावीर गौशाला फाउण्डेशन ट्रस्ट, तिरुपति-517507 (आ.प्र.) के नाम से भिजवायी जा सकती है। फोन-0877-2100511

जोधपुर- करुणा अन्तर्राष्ट्रीय के जोधपुर केन्द्र का वार्षिक समारोह 20 सितम्बर 2008 को श्रीमहल, पावटा में उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में 96 बालक-बालिकाओं को माँसाहार-त्याग अवार्ड, 10 छात्र-छात्राओं को दयावान अवार्ड से सम्मानित किया गया। जोधपुर के 85 विद्यालयों में करुणा क्लब संचालित हैं। इन

विद्यालयों से 65 करुणा-क्लब प्रभारी शिक्षकों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने अभिनय, नृत्य, गीत आदि के माध्यम से सुन्दर अभिव्यक्ति दी। -*मनोज डागा, अध्यक्ष, ९४१३३१९४०६*

मण्डी डबवाली- मन्दबुद्धि, मूकबधिर एवं विकलांग छात्रों की विशेष शिक्षा एवं उपचार हेतु श्री महावीर जैन विकास संस्थान (रजि. नं. 66) की संस्थापना 1 अगस्त 2007 को हरियाणा एक्ट 1860 के अधीन श्री सुमति जी जैन, इंजीनियर द्वारा की गई। पाँच बच्चों से प्रारम्भ हुई इस संस्था में अब 35 बच्चे हैं। संस्थान में स्पीच थेरेपिस्ट की भी व्यवस्था है। पेंटिंग, मेहंदी, सिलाई, कढ़ाई एवं अन्य रुचिकर कार्य भी सिखाए जाते हैं। न्यूरोथैरेपी की भी व्यवस्था है। संस्थान में छात्रावास की भी सुविधा है। सम्पर्क सूत्र - *पुरानी चौधरी कॉटन फैक्ट्री, जी.टी. रोड, रेलवे फाटक, मण्डी डबवाली, जिला-सिरसा (हरियाणा), मो. 09354884803*

मैसूर- मैसूर पिंजरा पोल सोसायटी सन् 1938 से निरन्तर लूले, लंगड़े, बूढ़े, विकलांग पशुओं का पालन पोषण कर रही है। यहाँ लगभग 2700 पशु हैं। कसाई खानों में कटने के लिए जा रहे पशुओं को पुलिस के सहयोग से बचाकर न्यायालय की अनुमति से सौंपे गये मूक प्राणियों का पालन करने वाली यह एक प्रमुख संस्था है। पिंजरा पोल में नये पशु गृह बनाये जा रहे हैं, उसके साथ ही एक आपातकालीन चिकित्सा कक्ष एवं प्रसूति गृह का अलग से निर्माण करवाया गया है। इस पिंजरा पोल की दूसरी शाखा सन् 2005 में उदबूर गेट के पास 40 एकड़ जमीन पर प्रारम्भ की गई है। अहिंसा प्रेमी बन्धुओं से निवेदन है कि वे स्वेच्छा से इस शुभ कार्य में अपना सहयोग करें। -श्री एल. शांतिलाल चोरडिया, कार्यदर्शी, फोन नं. 9845129524, मैसूर पिंजरापोल सोसायटी, फुट ऑफ चामुण्डी हिल, मैसूर-570025

बधाई/चुनाव

सूर्यनगरी के गौरव श्री नरपतमल जी लोढ़ा राजस्थान के महाधिवक्ता नियुक्त

रत्नसंघ के श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न श्री नरपतमल जी लोढ़ा सुपुत्र स्व. सोहनमल जी लोढ़ा को राज्य सरकार ने आदेश जारी कर अतिरिक्त महाधिवक्ता से महाधिवक्ता पद पर पदोन्नत किया है। 30 मई 1940 को जन्मे लोढ़ा साहब ने बी.ए., एल.एल.बी. कर वकालात का पेशा अंगीकार किया। प्रज्ञा व प्रतिभा के धनी लोढ़ा साहब ने राजस्थान हाइकोर्ट एडवोकेट्स एसोसिएशन के सैक्रेट्री, वाइस प्रेसिडेंट एवं प्रेसिडेंट पद सुशोभित किया।

बार कॉन्सिल ऑफ राजस्थान के चेयरमेन पद का दायित्व भी बखूबी संभाला। 1979 में डिप्टी गवर्नमेंट एडवोकेट रहे। आपने रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया, इण्डस्ट्रियल इन्वेस्टमेंट आदि संस्थाओं में स्टेण्डिंग कॉन्सिल के रूप में शोहरत हासिल की। आप स्वयंसेवी संस्थाओं एवं सामाजिक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। पदोन्नति प्राप्त कर आपने अपना, अपने लोढ़ा कुल का, ओसवाल समाज का, रत्नसंघ का गौरव बढ़ाया है। राजस्थान के महाधिवक्ता के रूप में आप सफलता प्राप्त करें, इस मंगल भावना के साथ हार्दिक बधाई।

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह

जी भाण्डावत को मुम्बई में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के सम्मान-समारोह में संघ के सर्वोच्च सम्मान 'संघरत्न' से सम्मानित किया गया। शॉल ओढ़ाकर उन्हें स्मृतिचिह्न एवं रजतपट्टिका पर अभिनन्दन-पत्र समर्पित किए गए। 29 सितम्बर 1939 को जन्मे डॉ. भाण्डावत एम.ए, एल.एल.बी एवं पी-एच्.डी. हैं। राजस्थान उच्च न्यायालय में एडवोकेट डॉ. भाण्डावत 1990 से 1992 तथा 1994 से 1999 तक अतिरिक्त महाधिवक्ता, राजस्थान सरकार के रूप में कार्यरत रहे। आप सन् 1986-87 में रोटरी गवर्नर रहे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के प्रति आपका सम्पूर्ण परिवार समर्पित है। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सन् 1975 से 1984 तक कार्याध्यक्ष रहे तथा तदुपरान्त 1984 से 1990 तक अध्यक्ष रहे। सन् 1990 से 1996 तक आपने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर का अध्यक्ष पद सुशोभित किया। आपने 42 वर्ष की उम्र में आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के साथ सचित्त पानी पीने का त्याग कर दिया था।

जयपुर- सुश्री नेहा मोदी सुपुत्र श्रीमती वन्दना एवं श्री संजीव जी मोदी (सुपौत्री श्रीमती

लीला एवं श्री पशुपतिनाथ जी मोदी) ने एम.एन.आई.टी. जयपुर से बी. ई. (इलेक्ट्रोनिक्स एण्ड कम्यूनिकेशन) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर, मल्टी नेशनल कम्पनी Accenture में नियुक्ति प्राप्त कर बैंगलोर में पदभार ग्रहण किया है।

जरखोदा (बूंदी)- श्री सत्येन्द्र कुमार जैन सुपुत्र श्री पारसचन्द जी जैन ने डॉ.

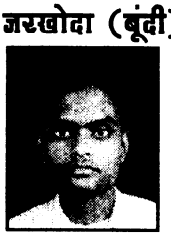

सम्पूर्णानन्द मेडिकल कॉलेज, जोधपुर से मानव-शरीर रचना विज्ञान (एनाटोमी) में स्नातकोत्तर उपाधि लेकर अग्रोहा (हिसार) के महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज में व्याख्याता पद ग्रहण किया है।

श्रद्धाञ्जलि

भीलवाड़ा- परमविदुषी श्रमणसंघीय उपप्रवर्तिनी महासती श्री सत्यसाधना जी की सुशिष्या अभिग्रहधारी तपोमूर्ति साध्वीश्री चरणप्रज्ञा जी म.सा. का 87 दिन के संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया। धूलिया (महा.) में श्री पृथ्वीचन्द जी कोटेचा के घर जन्मी बालिका ने 1997 में दीक्षा अंगीकार की। 17 जून 2008 को चौविहारी संथारे के पच्चक्खाण करने के पश्चात् समत्व भावों में लीन महासती ने 11 सितम्बर 2008 को नश्वर देह का परित्याग किया।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती जतनकंवर जी गाँधी धर्मपत्नी श्री पारसमल जी गाँधी का

84 वर्ष की वय में 18 अगस्त 2008 को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धाभक्ति सम्पन्न श्राविका थी। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रों श्री भंवरलाल जी, श्री राजेन्द्र जी एवं महेन्द्र जी गांधी का संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

कंवलियास- सुश्रावक श्री गुलाबचन्द जी पानगड़िया का 5 सितम्बर 2008 को

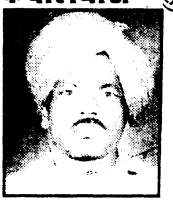

निधन हो गया। आपकी गुरुदेव हस्ती, हीरा एवं मान के प्रति दृढ़ श्रद्धा एवं आस्था थी। आप धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ एवं सहृदय श्रावक थे। आपकी सामायिक-स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि थी। आप विगत 5 वर्षों से प्रतिवर्ष उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से पांच हजार सामायिक करने का संकल्प लेते थे। अतः प्रतिदिन 17-18 सामायिक कर लेते थे। आपका अधिकांश समय संवर-साधना में ही व्यतीत होता था। पिछले 15 वर्षों से पर्युषण पर्व की आराधना उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में ही करते थे। आपने 4 मासखमण तप किए। प्रत्येक चातुर्मास में छोटी-बड़ी तपस्याएँ चलती रहती थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

सूरत- दृढ़धर्मी प्रियधर्मी सुश्रावक श्री पन्नालाल जी चौपड़ा का 24 अगस्त 2008

को अरिहन्तों का शरणा, सिद्धों का शरणा बोलते-बोलते स्वर्गवास हो गया। राजस्थान में मूलतः अजमेर के निवासी श्री चौपड़ा सा. को साधु-साध्वियों की सेवा-भक्ति में बहुत आनन्द आता था। चातुर्मास में आप दया-संवर-पौषध-स्वाध्याय में रत रहते थे। आपमें विनयभाव एवं क्षमा का महत्त्वपूर्ण गुण था। अन्त समय आने के 15 दिन पूर्व ही परिवारजनों से आपने कह दिया- शोक मत रखना, आर्तध्यान मत करना। तीन दिन पूर्व परिग्रह सहित सबके प्रत्याख्यान कर लिए। सात दिनों से नवकार सूत्र, स्तवन,

आलोचना, स्वाध्याय आदि का आलम्बन लेकर मोह-त्याग दिया था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सज्जनकुंवर जी धर्मशीला, सेवाभावी एवं सुसंस्कारसम्पन्न सद्गृहिणी हैं। आप दो सुपुत्रों श्री चैनराज जी, प्रेमचन्द जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। -लाडश्री नाहर

जोधपुर- श्री प्रेमचन्द जी रांका का 75 वर्ष की अवस्था में 3 सितम्बर 2008 को

देहावसान हो गया। वे स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की जोधपुर शाखा से सेवानिवृत्त हुए थे। आप धर्मनिष्ठ एवं स्वाध्याय में रुचिशील श्रावक थे। अपने पीछे धर्मपत्नी श्री शान्तिदेवी एवं सुपुत्र श्री संतोष रांका का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

हैदराबाद- श्रद्धानिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सविता जी छाजेड़ धर्मपत्नी

सुश्रावक श्री मिलापचन्द जी छाजेड़ मुथा (पुत्रवधू स्व. श्री बिसनचन्द जी छाजेड़-मुथा) का 45 वर्ष की अल्पायु में 10 सितम्बर 2008 को असामयिक स्वर्गवास हो गया। देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्थावान सुश्राविका की परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट निष्ठा थी। सामायिक-स्वाध्याय के साथ सुश्राविका ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम कक्षा उत्तीर्ण की। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी-वात्सल्य सेवा में सक्रिय श्राविकारत्न का जीवन सरल-सहज था। श्राविकारत्न की भावनानुसार परिवारजनों ने नेत्रदान का आदर्श भी उपस्थित किया।

-संदीप छाजेड़

कुण्डेरा- सुश्राविका श्रीमती अनोखीदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री घनश्याम जी जैन का 3

सितम्बर 2008 को स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थी। जीवन में दो बार वर्षीतप करने वाली श्राविका आयंबिल-एकासन-उपवास आदि तप में एवं सामायिक-साधना में जीवन पर्यन्त सजग रही। गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय संदेश को उन्होंने जीवन-व्यवहार में चरितार्थ किया।

जोधपुर- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती अनिता जी लोढ़ा धर्मपत्नी सुश्रावक

श्री महावीराज जी लोढ़ा का 14 अगस्त 2008 को स्वर्गवास हो गया। उनका गुरु- भक्ति, संघ-निष्ठा और सेवा धर्म की साधना में समर्पण था। गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अनन्य आस्थावान श्राविका का जीवन सरल, सहज एवं निष्कपट था।

बड़ी सादड़ी- समता प्रचार संघ के राष्ट्रीय संयोजक समाजसेवी सुश्रावक श्री

सज्जनसिंह जी मेहता का 74 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। वे स्वाध्यायी थे। स्वाध्याय-संस्कार शिविर और पाठशाला व्यवस्था में उनकी विशेष रुचि थी। वे आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के परम भक्त थे। *-महेश नाहटा*

जयपुर- सुश्रावक श्री सुनील जी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री किरणमल जी लोढ़ा का 17

सितम्बर 2008 को हृदयगति रुक जाने से 52 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। विगत कुछ समय से सामायिक, जाप और जीवदया में आपकी विशेष रुचि रही। आपका सम्पूर्ण परिवार गुरु हस्ती, गुरु हीरा एवं गुरु मान के प्रति समर्पित है। रत्नसंघ के दिवंगत पूर्व महामंत्री श्री किरोड़ीमल जी लोढ़ा के आप भतीजे थे।

रायचूर (कर्नाटक)- सुश्रावक श्री प्यारेलाल जी कांकरिया सुपुत्र स्व. श्री बस्तीमल जी कांकरिया का 79 वर्ष की आयु में 3 अक्टूबर 2008 को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, मिलनसार, मृदुभाषी, व्यवहारकुशल एवं सरल स्वभावी थे। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय आपका नियमित क्रम था। आपके द्वारा गाये गये स्तवन हर साधु-सन्त का दिल जीत लेते थे। चारित्रनिष्ठ संत-सती के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी आपने साधु-संतों के दर्शन का लाभ लिया।

मुम्बई- जैन समाज के प्रसिद्ध व्यक्तित्व श्री एस.पी. छाजेड़ (सी.ए.) का 69 वर्ष की

वय में 18 सितम्बर 2008 को स्वर्गगमन हो गया। आप अपनी स्पष्टवादिता एवं अनुशासन के लिए सी.ए. एवं जैन समाज में लोकप्रिय थे। आपका एवं तीन भाइयों का संयुक्त परिवार एक अनुकरणीय उदाहरण माना जाता है।

धमतरी- सुश्राविका श्रीमती बिरोबाई बाफना धर्मपत्नी स्व. श्री लूनकरण जी बाफना का 91 वर्ष की आयु में 3 सितम्बर 2008 को स्वर्गवास हो गया। लगभग 25 वर्षों से आपके रात्रि-चौविहार के प्रत्याख्यान तथा जमीकन्द का त्याग था। आप प्रतिदिन सामायिक किया करती थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

शाजापुर- श्री कैलाशचन्द जी जैन (शक्कर वाले) का 25 अगस्त 2008 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रसिद्ध जैन विद्वान् प्रो. सागरमल जी जैन के चचेरे भ्राता थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

2500/- मंडल से प्रकाशित सत्साहित्य के आजीवन-सदस्य

676 Shri Dhan Raj ji Chordia, COIMBATORE (Tamilnadu)
677 Shri Hasti Mal ji Dosi, MERTACITY (Rajasthan)
678 Shri Prema Bai ji Bafana, BANGALORE (Karnataka)

500/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

11637 श्रीमती अंजना जी जैन, बनीपार्क, जयपुर (राज.)
11638 श्री राजेन्द्र जी डागा, किसानमार्ग, जयपुर (राज.)
11639 श्रीमती राजकुमारी जी डागा, तख्तेशाही रोड, जयपुर (राज.)
11640 श्री मदनलाल जी चंडालिया, पीपली बाजार, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)
11641 श्री मनीष जी कोठारी, हरी मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
11642 श्री ललित जी सिंघवी, स्टेशन रोड, रतलाम (मध्यप्रदेश)
11643 श्रीमती मनोरमा देवी जी सालेचा, मान हेरीटेज के पीछे, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
11644 Smt. Anjali ji Vedmutha, Bazar Road, Vapi (Gujarat)
11645 Shri Dinesh ji Lodha, Lokhandwala Township, Mumbai (M.H.)
11646 Shri Kirti ji Choudhary, Thakur Village, Mumbai (M.H.)
11647 Shri Jinendra Kumar ji Jain, Bhyander (East), Mumbai (MH)
11648 श्री सुरेश जी गुंदेचा, हिन्दू कॉलोनी, रत्नागिरि (महाराष्ट्र)
11649 Shri Deepak ji Baldota, Finolex HSGColony, Ratanagiri (MH)
11650 श्री भावीन जी गुंदेचा, श्रीराम लेन, रत्नागिरि (महाराष्ट्र)
11651 श्री बी. एम. जैन जी, मारूतिमंदिर, रत्नागिरि (महाराष्ट्र)
11652 श्री प्रकाश जी गाँधी, पटवर्धन हाईस्कूल के पास, मारुति आली, रत्नागिरि (महाराष्ट्र)
11653 श्री राजेन्द्र जी जैन, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)
11654 Shri Ghewar Chand ji Kankaria, Surat (Gujarat)
11655 Shri Dharam Chand ji Jain, Nerpean Road, Mumbai (M. H.)
11656 Shri Umed Mal ji Bafna, Purushwakam, Chennai (Tamilnadu)
11657 Shri Rai Chand ji Ranka, Amliegaon (BK), Pune (M.H.)
11658 श्री नेमीचंद जी चोरड़िया, ओल्ड एम.आई.डी.सी., जलगाँव-425003 (महाराष्ट्र)
11659 श्री गौतमचन्द जी भलगट, रामदास पेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)
11660 श्री नितिन जी गुंदेचा, राजयोग अपार्टमेन्ट, भारत नगर, नागपुर (महाराष्ट्र)
11661 श्री आर. बी. जैन जी, बजाज नगर, एस.ए. रोड, नागपुर (महाराष्ट्र)
11662 डॉ. बिपिन डी. मेहता जी, रामदास पेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)
11663 श्री विक्रम भाई जी शाहा, रामदास पेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)
11664 श्री सुनील जी बोथरा, गणेश पेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)
11665 श्री नितिन भाई खारा जी, रामदास पेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)

11666 श्री कांतिलाल जी जैन (कोचर), नवजीवन कॉलोनी, वर्धा रोड, नागपुर (महाराष्ट्र)
11667 Shri Sujay ji Jain, Near Shipra Mall, Gaziabad (U.P.)
11668 श्री सन्तोष जी भंडारी, प्रताप नगर चौक, नागपुर (महाराष्ट्र)
11669 श्री अजीत जी सोनी, कल्पना बिल्डिंग, रामदास पेठ, नागपुर (महाराष्ट्र)
11670 श्री राजेन्द्र जी लोढ़ा, पांडे ले आउट, खामला, नागपुर (महाराष्ट्र)
11671 श्री के. एस. मोगरा जी, ओ.टी.सी. स्कीम, अम्बामाता, उदयपुर (राज.)
11672 श्री जिग्नेश भाई जी गोपानी, सुभाष रोड, जोरावर नगर, सुरेन्द्रनगर (गुजरात)
11673 श्रीमती कांता जी सिंघवी, महामंदिर, जोधपुर (राज.)
11674 Shri Sunil ji Gupta, Jubile Hills, Hyderabad (A.P.)
11675 Shri Subhash ji Jain, Sindhikela, Balangeer (Orisa)
11676 श्री निर्मल कुमार जी कोठारी, कमल अपार्टमेण्ट द्वितीय, बनी पार्क, जयपुर (राज.)
11677 श्री हितैष जी जैन, बिजली घर के पीछे, खेरलीगंज, जिला–अलवर (राज.)
11678 Shri Subhash Chand ji Sakhala, Sharanpur Road, Nasik (M.H.)
11679 Shri Mayasaagar ji Desarda, Station Road, Ahmednagar (M.H.)
11680 श्री वर्द्धमान जी जैन, आर. सी. व्यास कॉलोनी, कोठारी नदी के पास, भीलवाड़ा (राज.)
11681 श्री गौतमचन्द जी बरमेचा, आनन्दपुरी, आदर्श नगर, जयपुर (राज.)
11682 श्री अभिनन्दन जी जैन, सिद्धार्थ मार्ग, गोरी विहार एक्सटेंशन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
11683 श्री गजेन्द्र जी जैन, सिद्धार्थ मार्ग, गौरी विहार एक्सटेंशन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
11684 श्रीमती अंजू जी पोखरना, इन्दिरा कॉलोनी, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राज.)
11690 श्री सुभाष रणदिवे, म. गाँधी चौक, रेती भवन शेजारी, डोम्बिवली (पश्चिम),ठाणे (महा.)
11691 श्री मिलिन्द जे. शाह जी, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
11692 श्रीमती कान्ता जी लोढ़ा, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)
11693 श्री आदित्य जी जैन, बसंत बिहार, स्पेशल ब्लड बैंक के पास, कोटा (राज.)
11694 श्री बलवन्त सिंह जी चोरड़िया, झालरापाटन, झालावाड़ (राज.)
11695 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, गुरुद्वारा रोड़, देवली, टोंक (राज.)
11696 श्रीमती शीला जी लोढ़ा, B.K. Paul Avenue, Kolkata (W.B.)
11697 श्री सचिन जी जैन, आदर्श नगर, मोहन नगर एक्सटेंशन, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)
11698 Shri Babu Lal ji Lunked, K. M. Lane, Bangalore (Karnataka)
11699 Shri Babulal ji Lunked, Bangalore Road, Bellary (Karnataka)
11700 श्री सन्तोषचन्द जी कोठारी, बोरून्दा, बिलाड़ा, जोधपुर (राज.)
11702 श्री सुरेन्द्र कुमार जी नलवाया, कांदिवली (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
11703 डॉ. पन्नालाल जी गाँधी, कल्याण (वेस्ट), ठाणे (महाराष्ट्र)
11704 श्री बी. एल. जैन, एम. बी. एस. नगर, कोटा जक्शंन (राजस्थान)
11705 Shri Vimal Chand ji Dabaria, Ring Road, Surat (Gujarat)
11706 Shri Nitin Om Kothari ji, Kandivli (East), Mumbai (M.H.)
11707 Shri Naresh Kumar ji Kothari, Dudu, Jaipur (Rajasthan)
11708 Shri Ajay ji Jain, Govindpuri, Kalkaji, New Delhi

श्री आर. पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई के सौजन्य से

11685 श्री मनोज जी जैन, गोपाल मिल के सामने, जे. पी. कॉलोनी, रंगपुर रोड, कोटा (राज.)
11686 श्रीमती अनामिका जी अग्रवाल, सेक्टर 13, करनाल (हरियाणा)
11687 श्री संतोष जी गुप्ता, नार्विन मेडिकल स्टोर के ऊपर, गुरसहायगंज, जिला–कन्नौज (उ.प्र.)
11688 श्री अजय कुमार जी गुप्ता, नवीगंज, जिला–मैनपुरी (उत्तरप्रदेश)
11689 श्री मनोज जी जैन, ब्रह्मपुरी कॉलोनी, मण्डावरा रोड, हिण्डौनसिटी, जिला–करौली (राज.)
11701 श्री प्रकाशचन्द जी कटारिया, ग्रीन पार्क, पाली (राजस्थान)
11709 Shri Mahavirprakash ji Chhajed, Fagna, Dhulia (M.H.)
11710 Miss Khusboo ji Singhvi, Basni, Jodhpur (Rajasthan)

जिनवाणी हेतु साभार

15000/- श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर, बालस्तम्भ पुरस्कार हेतु।

5100/- श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद, साध्वी श्री भावनाजी म.सा. के प्रथम केशलोचन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- श्रीमती सुशीला देवी जी, सोहनलाल जी पीतलिया, रतलाम, परम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन चरणों में पर्युषण पर्वाराधन के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री मोहनलाल जी, बुधमल जी, संपतराज जी, राजेन्द्रकुमार जी बाघमार, मैसूर, श्रीमती बिन्दुकुमारी जी धर्मपत्नी श्री राजकुमार जी बाघमार की 16 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

2100/- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुम्बई चातुर्मास में श्री धर्मेन्द्र जी लोढ़ा सुपुत्र श्री हुकमचन्द जी लोढ़ा के 41 दिवसीय मौन तपस्या सुख-समाधि के साथ पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि जी लोढ़ा, सुपुत्री रीया एवं भाग्यश्री, मलाड़-मुम्बई की ओर से सादर भेंट। तपस्वी श्रावक श्री लोढ़ा के बहन-बहनोई श्रीमती सरला जी एवं लीलमचन्द जी मुणोत के द्वारा इस अवसर पर शीलव्रत ग्रहण किए गए।

2000/- श्री हस्तीमल जी, विमल जी, अशोक जी, विनोद जी सुराणा, कोलकाता, आचार्यश्री के सान्निध्य में कांदिवली-मुम्बई में श्रीमती बसन्तीदेवी धर्मपत्नी श्री हस्तीमल जी सुराणा के 16 की तपस्या सानन्द पूर्ण होने की खुशी में भेंट।

2000/- श्री झूमरमल जी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री निशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

1111/- श्री रविन्द्र जी, आनन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री श्री जगदीश जी जैन (चकेरी वाले) का संघ द्वारा गुणी अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मान करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री सुधीर जी गोलेच्छा, जयपुर अपनी मातुश्री श्रीमती प्रभादेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री हेमचन्द्र जी गोलेच्छा का दिनांक 01.09.2008 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री शांतिलाल जी, मेघराज जी जैन (चौरू वाले), जयपुर, पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा सन्त-सतीवृन्द के मुम्बई व पूज्य उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा सन्त-सतीवृन्द के गढ़सिवाना दर्शन-वन्दन करने व पूज्य श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. के वर्षीतप पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री हुकमीचन्द जी, विनोद कुमार जी, संतोषचंद जी डोसी, बैंगलोर, आचार्य भगवन्त की सेवा में रहकर पर्युषण आराधना एवं श्रीमती मदनकँवर जी के पचोले की तपाराधना सानन्द

सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री शान्तिलाल जी, राजेश कुमार जी, महावीरचन्द जी खाबिया, मैसूर, शांतिलाल जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पाबाई जी खाबिया मैसूर (मुकाम कोसाणा) द्वारा 8 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री जवाहरलाल जी, श्रीमती शांताकँवर जी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, रत्न संघ के सभी चातुर्मास स्थलों पर सजोड़े सभी सन्त-सती मंडल के दर्शन लाभ की खुशी में भेंट।

1100/- स्व. श्री बिसनचन्द जी मिलापचन्द जी छाजेड़, हैदराबाद, पुत्रवधू श्रीमती सविता जी धर्मपत्नी श्री मिलापचन्द जी छाजेड़ (कोसाणा वाले) का अल्पायु में दिनांक 10 सितम्बर 2008 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री बाबूलाल जी 'उज्ज्वल', मुम्बई, श्रीमती विमला देवी जी धर्मपत्नी श्री बाबूलाल जी उज्ज्वल के मासक्षपण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री सागरमल जी छाजेड़, चेन्नई, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री निशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री अशोक जी कोठारी (जयपुर वाले), मुम्बई, सुपुत्री हर्षा जी कोठारी के आचार्यश्री की नेश्राय में अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री महावीरचन्द जी मनोहरमल जी नाहर, चेन्नई, श्रीमती नीतूकुमारी जी नाहर धर्मपत्नी जम्बूकुमार नाहर, पुत्रवधू तपस्वीचन्द जी नाहर सुपौत्रवधू श्री हस्तीमल जी नाहर कोसाणा वाले हाल मुकाम चेन्नई के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रकाशमलजी सुनील कुमारजी हर्षजी बोथरा, चेन्नई, मुम्बई में पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

1001/- श्री दिलीप कुमार जी भंडारी, रत्नागिरि, पर्युषण पर्व पर प्राप्त आनन्द के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री धनरूपचन्द जी भण्डारी, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला जी भण्डारी पुत्रवधू स्व. श्री दौलतरूपचन्द जी भंडारी की अठाई तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई की ओर से भेंट।

1000/- श्री महावीरचन्द जी, गौतमचन्द जी, प्रेमचन्द जी, चेन्नई सपरिवार पूज्य गुरुदेव के चरणों में पर्वाराधन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

700/- श्रीमती पुष्पाबाई जी सुखराजजी कोठारी, पूना, सौ. विनीता शांतिलाल जी कोठारी के आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा सातवीं में प्रथम आने पर भेंट।

501/- श्री केवलचन्द जी जैन (पटनी), जयपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती बुद्धिदेवी जी जैन (पटनी) की पुण्यस्मृति में भेंट।

501/- श्री रिखबचन्द जी, जीतमल जी, राजा जी बोथरा, जयपुर, अपनी पूज्य मातुश्री स्व. श्रीमती सुमनकँवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी बोथरा की पुण्य स्मृति दिवस 15/09/2008 के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री राजेन्द्र कुमार जी, मनोज कुमार जी सुराणा, मैसूर, चि. मनोज कुमार जी सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त के चरणों में रहकर पचोले की तपाराधना करने एवं मातुश्री श्रीमती राजकँवर बाईसा के गुरु चरणों में रहकर पर्वाराधन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी, विमलचन्द जी, मीठालाल जी, पृथ्वीराज जी मूथा, मैसूर, श्रीमती लीलाबाई जी धर्मपत्नी श्री विमलकुमार जी मूथा के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्रीमती लीला जी, विमल कुमार जी मूथा, मैसूर, सुपुत्री श्री विमलचन्द जी धोका मैसूर के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री प्रकाशचन्द जी, रंगलाल जी झांबड, नांदूरा-बुलढाणा पर्युषण पर्व पर भेंट।
500/- श्री भंवरलाल जी, रिखबचन्द जी बोथरा, जयपुर श्रीमती अंजू जी धर्मपत्नी श्री नरेश जी बोथरा के 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।
500/- श्री देवेन्द्र जी सिंघवी, कोयम्बतूर (तमि.)
500/- श्रीमती मोहनकंवर जी मेहता, जोधपुर।
500/- श्री शान्तिमल जी भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री विरेन्द्र जी भण्डारी व सुपौत्र मयंक भण्डारी (सुपुत्र श्रीमती बबीता जी व श्री विरेन्द्र जी भण्डारी) की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार

2000/- श्री हस्तीमल जी, विमल जी, अशोक जी, विनोद जी सुराणा, कोलकाता, आचार्यश्री के सान्निध्य में कांदिवली-मुम्बई में श्रीमती बसन्तीदेवी धर्मपत्नी श्री हस्तीमल जी सुराणा के 16 की तपस्या सानन्द पूर्ण होने की खुशी में भेंट।
1500/- श्री एफ. अमरचन्द जी जैन, चेन्नई।
1500/- श्री एफ. अमरचन्द जी जैन, चेन्नई कबूतर चुग्गा हेतु भेंट।
1500/- श्री वीरदान जी पटवा, भीनासर, बीकानेर (राज.)
1100/- श्रीमती मनोहरदेवी जी जैन धर्मपत्नी केवलचन्द जी जैन, जोधपुर।
1100/- श्री नरेन्द्रमल जी मेहता, मुम्बई (महा.)
1000/- श्री राणूलाल जी कोचर, विजयानगरम् (आन्ध्रप्रदेश)
1000/- श्री राजमल जी जैन, मुम्बई, पौत्र जन्म की खुशी में भेंट।
1000/- श्रीमती कमलादेवी जी धर्मपत्नी श्री चन्द्रप्रकाश जी सिंघवी, जोधपुर।
503/- श्री (डॉ.) गंभीरमल जी छाजेड़ एवं परिवारजन, राजनांदगाँव से सप्रेम भेंट।
501/- श्री कन्हैयालाल जी जैन (चौधरी), आलनपुर सप्रेम भेंट।
501/- श्री पारसमल जी बोहरा पुत्र श्री मगराज जी बोहरा, मण्डली (बाड़मेर)
500/- श्री स्थानकवासी पल्लीवाल संघ, गंगापुरसिटी, पर्युषण पर्व पर भेंट।
500/- श्री महिला मंडल संघ, गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर, सप्रेम भेंट।
500/- श्री प्रदीप जी ललवाणी, नागौर (राज.)

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

500/- श्री नानुलाल जी महावीरचन्द जी धर्मीचन्द जी पीपाड़ा, बल्लारी (कर्नाटक)
500/- श्री शीतलचन्द जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
500/- श्री गुलाब जी मोदी, जयपुर (राज.)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

14000/- श्री हस्तीमल जी, विमल जी, अशोक जी, विनोद जी सुराणा, कोलकाता, आचार्यश्री के सान्निध्य में कांदिवली-मुम्बई में श्रीमती बसन्तीदेवी धर्मपत्नी श्री हस्तीमल जी सुराणा के 16 की तपस्या सानन्द पूर्ण होने की खुशी में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

2000/- डॉ. जीवराज जी जैन, जमशेदपुर।
1712/- श्री ओसवाल जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ, छिन्दवाड़ा, जीवदया हेतु।
1500/- श्री देवेन्द्र जी सिंघवी, कोयम्बतूर।
1351/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वाकोद, जीवदया हेतु।
1100/- श्री रूपचन्द जी सोहनलाल जी धारीवाल, पाली।

1000/- श्री हनुमानचन्द जी महावीरचन्द जी जागीरदार, बालोतरा।
501/- श्री सुभाषचन्द जी लोकेन्द्रकुमार जी जैन, करही, जीवदया हेतु।

पर्युषण सहायतार्थ

7600/-	शोरापुर	7100/-	विजयवाडा	5100/-	कानपुर
5001/-	नागपुर	3501/-	महाड़	3100/-	वाराणसी
3100/-	छिन्दवाडा	3000/-	भण्डारा	3000/-	बैतुल
2500/-	अम्बाजोगाई	2101/-	वाकोद	2100/-	चलथान
2100/-	लखनऊ	2100/-	मुक्ताई नगर	2100/-	नादोन
2100/-	दूदू	2100/-	अलवर	2100/-	मावली
2000/-	चाकसू	2000/-	सहाड़ा	1501/-	धरणगांव
1500/-	जालोर	1500/-	करही	1500/-	मण्डपिया
1500/-	अंजड़	1111/-	दरीबामाइन्स	1100/-	भड़गांव
1100/-	अलीगढ़	1100/-	खांखला	1100/-	नीमच
1100/-	वाशिम	1000/-	वाघली	1000/-	विटनेर
1000/-	इच्छावर	501/-	आगोलाई	501/-	वाकडी
501/-	वरखेडी	501/-	मुकटी	500/-	नागद
500/-	दूणी	500/-	जूणदा	500/-	नरडाणा

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ को प्राप्त साभार

5001/-	डोम्बिवली	3100/-	निफाड़	3100/-	चिपलुण
2500/-	बड़वाह	2100/-	विरदाचलम	2100/-	केलशी
1500/-	कजगांव	1476/-	वालुज	1200/-	मांडल
1100/-	शिरपुर	1100/-	आलेगांव	1100/-	दुसरबीड़
1001/-	सिल्लोड़	1001/-	सातारा	1000/-	बुरहानपुर
1000/-	किनगांव राजा	900/-	कासमपुरा	751/-	बोरकुण्ड
501/-	होलनांथा	501/-	भराड़ी	501/-	मुकटी
501/-	लासुर	501/-	बेटावद	501/-	फागणा
500/-	लोहारा				

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

24,000/- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, पाली (राज.)
12,000/- श्री राजेन्द्र जी लुंकड़, इरोड (तमि.)
12,000/- श्रीमती सुमन जी विजयराज जी कोठारी, ब्यावर (राज.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s

80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़*, 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

11100/- श्रीमती धनकंवर मेहता, मदनगंज-किशनगढ़, पुस्तक प्रकाशनार्थ साभार।
500/- श्री देवेन्द्र जी सिंघवी, कोयम्बतूर।

आगामी पर्व

कार्तिक कृष्णा ८	मंगलवार, २१.१०.२००८	अष्टमी
कार्तिक कृष्णा १४	सोमवार, २७.१०.२००८	चतुर्दशी
कार्तिक कृष्णा ३०	मंगलवार, २८.१०.२००८	पक्खी, भगवान् महावीर निर्वाण कल्याणक।
कार्तिक शुक्ला १	बुधवार, २९.१०.२००८	वीर संवत् २५३५ प्रारम्भ
कार्तिक शुक्ला ५	सोमवार, ०३.११.२००८	ज्ञान पंचमी
कार्तिक शुक्ला ६	मंगलवार, ०४.११.२००८	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ४६वाँ दीक्षा दिवस
कार्तिक शुक्ला ८	गुरुवार, ०६.११.२००८	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला १४	बुधवार, १२.११.२००८	चतुर्दशी, चातुर्मासिक पक्खी, चातुर्मास पूर्ण।
कार्तिक शुक्ला १५	गुरुवार, १३.११.२००८	वीर लोकाशाह जयन्ती

क्षमायाचना

मैं पीरदान पटवा, भीनासर निवासी 82 वर्ष का हो चुका हूँ। विगत कुछ समय से स्वास्थ्य की अनुकूलता नहीं होने के कारण किसी भी समय मृत्यु को प्राप्त हो सकता हूँ। मैं सभी जैनाचार्यों, संतवृन्द व सतीमण्डल सहित सभी श्रावक-श्राविकाओं से क्षमा माँगता हूँ और उनसे मेरे द्वारा हुई भूलों या व्यवहार से प्रत्यक्ष-परोक्ष किसी का दिल दुःखा हो तो क्षमा करने का अनुरोध करता हूँ। आप सभी उदारतापूर्वक क्षमा करेंगे, इसी अपेक्षा के साथ।

-पीरदान पटवा, भीनासर

मैं अभी स्वस्थ हूँ। हिलता-चलता हूँ, पूर्ण होश-हवाश में हूँ। मेरी उम्र 93 वर्ष की हो गयी है। श्वास का कोई भी भरोसा नहीं है। इसलिए समस्त संत-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं एवं समस्त चौरासी लाख जीवयोनियों से अपने जीवनकाल में जो कुछ भी कहने-सुनने एवं लिखने में आया हो तो मैं तहे दिल से क्षमा चाहता हूँ। आप मुझे क्षमा करेंगे। *-भंवरलाल डांगी, मदनगंज-किशनगढ़*

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

कर्म निर्जरा का प्रबल साधन।
स्वास्थ्य वर्धक है पानी धोवन॥

With Best Compliments From :

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का॥

With Best Compliments From :

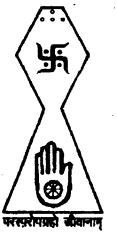

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये,
कर्म कटाये,
फिर क्यों न अपनायें
– धोवन पानी

Prithvi Exchange
A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED
33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008
Phone : 044-28553185, 42145478, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

A GLASS OF WATER WILL MAKE
YOUR KARMA QUARTER
- धोवन पानी -

GURU HASTI GOLD PALACE
(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)
22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

&

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
No. 4, 5 Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056
Hello-Hello
044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

अनछाना पानी-BAD।BAD॥
बिक्लदी पानी-OK।OK॥
छाना हुआ पानी-GOOD।GOOD॥
धोवन पानी-BEST।BEST॥

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सहजता में धर्म का आधार।
धोवन पानी प्रथम आचार।।

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400016
Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30034282, 23669818
Mobile : 098210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	09820072724
२.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
३.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
४.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571 09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
५.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597 09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
६.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-3292229/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124
७.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर	07462-233550/09414315098
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
८.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
९.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
१०.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

NO PAIN - ONLY GAIN – पियें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
15 अक्टूबर, 2008 ★ कार्तिक सं. 2065

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
RIVERSIDE
Old Mumbai - Pune highway, Panvel

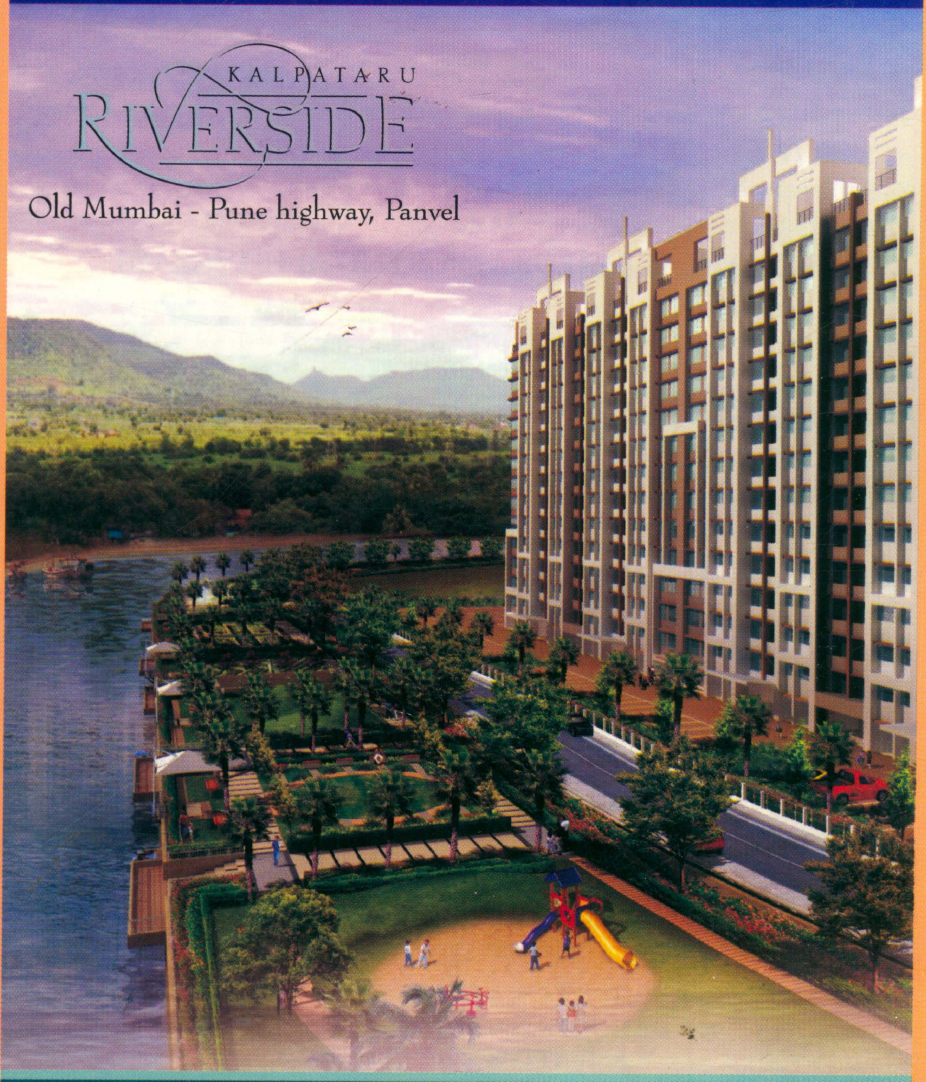

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. ● Tel.: 3064 3065, 98339 45470 ● Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।